ISSN 0972-5636

भारतीय आधुनिक शिक्षा

वर्ष 43 अंक 4 अप्रैल 2023

पत्रिका के बारे में

भारतीय आधुनिक शिक्षा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की त्रैमासिक पत्रिका है, जो यू.जी.सी. की केयर (कंसोर्टियम फ़ॉर एकेडमिक एंड रिसर्च एथिक्स— के.ए.आर.ई.) पत्रिकाओं की सूची में सूचीबद्ध है। यह पत्रिका शिक्षाविदों, शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थी-शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा पर अपने मौलिक शैक्षिक विचार रखने का एक मंच प्रदान करती है। लेखकों द्वारा भेजे गए सभी लेखों, शोध पत्रों, पुस्तक समीक्षाओं आदि का प्रकाशन से पूर्व समकक्ष विद्वानों द्वारा पूर्ण निष्पक्षतापूर्वक पुनरीक्षण किया जाता है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के विभिन्न आयामों में, विशेषकर *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के संदर्भ में, विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा देना है। इस पत्रिका का एक अन्य उद्देश्य मौलिक एवं समीक्षात्मक चिंतन को भी प्रोत्साहित करना है।

लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। अतः ये किसी भी प्रकार से परिषद् की नीतियों या संपादकीय समिति के विचारों को प्रस्तुत नहीं करते हैं।

© 2024*. पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है, परिषद् की पूर्व अनुमति के बिना, लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति

निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. : दिनेश प्रसाद सकलानी

अध्यक्ष, अ.शि.वि. : शरद सिन्हा

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : अनूप कुमार राजपूत

संपादकीय समिति

अकादमिक संपादक : जितेन्द्र कुमार पाटीदार

अन्य सदस्य

रंजना अरोड़ा

उषा शर्मा

बी.पी. भारद्वाज

प्रकाशन मंडल

मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : जहान लाल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार

मुख्य संपादक : बिज्ञान सुतार

सहायक उत्पादन अधिकारी : ओम प्रकाश

आवरण

अमित श्रीवास्तव

हमारे कार्यालय

प्रकाशन प्रभाग
एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
होस्केरे हेल्ली एक्सटेंशन
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी. डब्ल्यू. सी. कैंपस
धनकल बस स्टॉप के सामने
पनिहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी. डब्ल्यू. सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

मूल्य

एक प्रति : ₹ 50 वार्षिक : ₹ 200

*सितंबर 2024 में प्रकाशित

ISSN 0972-5636

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

भारतीय आधुनिक शिक्षा

वर्ष 43 **अंक 4** **अप्रैल 2023**

इस अंक में

संपादकीय		3
बुनियादी स्तर की शिक्षा के उभरते आयाम	अलका प्रिया जौहरी	5
मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विश्लेषण	अर्चना पाल लालसा सिंह	14
विद्यार्थियों के समग्र विकास का आधार मानसिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा	कृष्ण चंद्र चौधरी	21
जीवनशैली मापनी का निर्माण एवं मानकीकरण	अशोक कुमार शर्मा महेश कुमार मुछाल	30
सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव	शिव नंदन सिंह नीतू पटेल गौरव राव	39
विद्यार्थियों में स्मार्टफोन की लत का अध्ययन	सुनील कुमार आनंद कुमार	52
सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति	शशी यादव सुमित गंगवार	60
दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता एक अनुभवात्मक अध्ययन	राजेन्द्र प्रसाद	73

विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि की प्रभावशीलता — अंजुली सुहाने — 90

पुस्तक समीक्षा

शिक्षा की नव क्रांति का शंखनाद *(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)* — प्रभात कुमार — 101

संपादकीय

प्रिय पाठको! अप्रैल माह हमने एक पृथ्वी, एक परिवार एवं एक भविष्य के "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा को समावेशी रूप से विश्व महिला दिवस, विश्व जल दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस, विश्व धरोहर दिवस, विश्व पृथ्वी दिवस, विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस आदि पर चिंतन-मनन कर बढ़ावा देते हुए मनाया। इन दिवसों को उत्साहपूर्वक मनाने का उद्देश्य वैश्विक एकता की भावना को बढ़ावा देना है, जो हमें एक होने और मिलकर विकास करने के लिए प्रेरित करती है। नव ज्ञान सृजन, तकनीकी विकास के साथ-साथ मनुष्य की स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है जो व्यक्ति एवं समाज, दोनों के विकास के लिए आवश्यक है। *भारतीय आधुनिक शिक्षा* का यह अंक भी इन्हीं सरोकारों से जुड़े कुछ लेख व शोध-पत्रों को प्रस्तुत करता है।

शिक्षा समाज की उन्नति का आधार है। अत: विद्यालयों में विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के लिए शिक्षा में, विशेषकर बुनियादी स्तर पर गुणवत्तापरक आवश्यक सुधार होने ज़रूरी हैं। इसी पर आधारित लेख, 'बुनियादी स्तर की शिक्षा के उभरते आयाम' के अंतर्गत *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* तथा *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के आलोक में बुनियादी स्तर की शिक्षा के नवीन आयामों पर चर्चा की गई है। साथ ही, इसमें बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास हेतु किए गए प्रयासों के साथ सुझावों को भी प्रस्तुत किया गया है, जो बच्चों के अधिगम को सरल एवं सुगम बनाने में सहायक हो।

सामाजिक समानता के लिए शिक्षा को सार्थक रूप से प्रभावी बनाने हेतु उसमें बदलाव होना आवश्यक है। इसी बदलाव को तर्कसंगत रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशित किया गया है। इसी पर आधारित लेख, 'मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विश्लेषण' में मदन मोहन मालवीय के शिक्षा संबंधी विचारों की प्रासंगिकता को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

स्वस्थ मनुष्य अपनी सभी गतिविधियाँ एवं कार्य भली-भाँति कर सकता है। इसलिए विद्यार्थियों का स्वस्थ होना अतिआवश्यक है। इसी पर आधारित लेख 'विद्यार्थियों के समग्र विकास का आधार— मानसिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा' इस अंक में शामिल किया गया है। इस लेख में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की स्वास्थ्य एवं कल्याण हेतु दी गई अनुशंसाओं एवं इसके लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के साथ मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के उपायों एवं क्रियाकलापों को प्रस्तुत किया गया है।

आज औद्योगिकीरण, शहरीकरण, भूमंडलीकरण तथा भौतिक सुविधाओं के कारण बदलती सामाजिक व आर्थिक स्थिति आदि कारणों से व्यक्ति के विचारों और जीवनशैली में तेज़ी से बदलाव आ रहे हैं। इन बदलावों को उनके स्वास्थ्य पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। इन्हीं प्रभावों का अध्ययन करने के लिए शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों की जीवनशैली का मापन करने के लिए जीवनशैली मापनी का निर्माण किया गया, जिसे 'जीवनशैली

मापनी का निर्माण एवं मानकीकरण' नामक शोध-पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

वर्तमान युग में सोशल मीडिया की विशेष भूमिका है, जिसने विशेषकर विद्यार्थियों के शिक्षण-अधिगम को बहुत प्रभावित किया है। 'सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव' नामक शोध-पत्र में यह दर्शाया गया है कि सोशल मीडिया के उपयोग से अधिकतर विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही, इसमें यह भी बताया गया है कि कुछ विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति सही जानकारी न होने के कारण उनके शैक्षिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है।

विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन का उपयोग करने का शौक प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इस कारण स्मार्टफ़ोन उनके लिए एक व्यसन या लत बन गया है। इसी समस्या को शोध-पत्र 'विद्यार्थियों में स्मार्टफोन की लत का अध्ययन' में प्रस्तुत किया गया है। शोध-पत्र यह भी बताया गया है कि स्मार्टफ़ोन का अत्यधिक उपयोग करने से विद्यार्थियों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के प्रयासों पर ज़ोर दिया गया है।

भारत एक बहुसांस्कृतिक देश है। इसलिए शिक्षा में बहुसंस्कृति को बढ़ावा देते हुए विद्यालयों में शिक्षा का समावेशी और अनुकूल वातावरण तैयार करना होगा। इसी को शोध-पत्र 'सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति' में प्रस्तुत किया गया है।

एक विद्यार्थी को अधिगम-शिक्षण के दौरान अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें विशेष रूप से दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सम्मुख कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं और उनका शैक्षिक निष्पादन प्रभावित होता है। इन समस्याओं को शोध-पत्र 'दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता— एक अनुभवात्मक अध्ययन' में उजागर किया गया है।

कक्षा में विद्यार्थियों को अनेक विषय पढ़ाए जाते हैं। इन विषयों में विज्ञान को एक कठिन विषय माना जाता है, जिसमें प्रयोग करना अनिवार्य रूप से शामिल है। अतः इस विषय को रोचक ढंग से पढ़ाने का प्रयास करना आवश्यक है। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि की प्रभावशीलता' प्रस्तुत किया गया है, जिसमें विज्ञान विषय को अधिक सरलता से समझने के लिए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा सहयोग-अधिगम विधि के उपयोग एवं प्रभाव को दर्शाया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने से शिक्षा में अनेक परिवर्तन हुए हैं। इसी पर आधारित पुस्तक समीक्षा 'शिक्षा की नव क्रांति का शंखनाद (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)' में भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए निर्मित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को चार भागों में विस्तारपूर्वक विश्लेषण कर प्रस्तुत किया गया है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध-पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु कवर 3 पर दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

बुनियादी स्तर की शिक्षा के उभरते आयाम

अलका*
प्रिया जौहरी**

विद्यार्थी के विकास में बुनियादी स्तर की शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। शैक्षिक विकास की दृष्टि से शिक्षा के आरंभिक वर्ष सबसे महत्वपूर्ण समय है, क्योंकि इस अवधि में बच्चे सीखने के प्रति जिज्ञासु एवं आकर्षित होते हैं। गुणवत्तापूर्ण बुनियादी स्तर की शिक्षा प्रत्येक बच्चे की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। बुनियादी स्तर पर बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं, वही उनके भावी अधिगम का आधार होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान तथा विकास के लिए प्रयास करने को सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी स्तर की शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। वर्तमान समय में, इस नीति के प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण बुनियादी साक्षरता के साथ-साथ उचित संख्या ज्ञान तथा अक्षर ज्ञान मिल सके। इस लेख में बुनियादी स्तर की शिक्षा के कई नवीन आयामों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2022 के आलोक में समझाने का प्रयास किया गया है। साथ ही, लेख में बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों पर चर्चा के साथ-साथ कुछ सुझाव भी दिए गए हैं।

गुणवत्तापूर्ण बुनियादी स्तर की शिक्षा किसी राष्ट्र की शैक्षिक प्रणाली की प्रभावशीलता का संकेतक है। बच्चों की प्रारंभिक वर्षों की गुणवत्तापूर्ण बुनियाद उनके जीवन को मज़बूत आधार प्रदान करती है। बुनियादी स्तर की शिक्षा एक बच्चे की आगामी शिक्षा एवं जीवनपर्यंत सीखते रहने का आधार है। उचित समझ के साथ पढ़ने, लिखने, सुनने तथा बोलने जैसे कौशलों के बिना कोई भी विद्यार्थी जटिल विषयवस्तु को नहीं समझ सकता है। कई शोधों से ज्ञात होता है कि गुणवत्तापूर्ण बुनियादी स्तर की शिक्षा ड्रॉपआउट (शिक्षा को पूरा किए बिना विद्यालय छोड़ देना) एवं पुनरावृत्ति (एक ही कक्षा में दो या तीन वर्ष तक पढ़ना) की संभावना को कम करने में सहायता करती है। इसके साथ ही शिक्षा के सभी स्तरों पर अधिगम के प्रतिफलों में सुधार भी करती है। यदि कोई बच्चा एक साधारण पाठ को पढ़ एवं समझ नहीं सकता है, तो उसे अधिगम में कठिनाई अनुभव हो सकती है। परिणामस्वरूप, वह

* *कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता*, अध्यापक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली 110016
** *कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता*, अध्यापक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली 110016

जिस कक्षा में अध्ययन कर रहा होता है, उसमें उत्तीर्ण नहीं हो पाता है। स्पष्ट है कि यदि बच्चों को उचित रूप से बुनियादी शिक्षा न मिले तो उसका नकारात्मक प्रभाव उसके शैक्षिक प्रतिफलों पर पड़ता है। इसलिए सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण बुनियादी स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षा स्वयं, समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में सहायक होती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी स्तर की शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शुरुआती वर्षों में सीखने को महत्वपूर्ण मानती है। इन वर्षों में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो बच्चों की मूलभूत क्षमताओं तथा कौशलों के विकास के लिए महत्वपूर्ण हो। इस नीति में 5+3+3+4 पाठ्यचर्यात्मक एवं शिक्षणशास्त्रीय शैक्षिक संरचना की परिकल्पना की गई है। इसमें आरंभ के पाँच वर्ष तक की शिक्षा को बुनियादी स्तर की शिक्षा के रूप में परिकल्पित किया गया है। साथ ही, यह भी कहा गया है कि विद्यालयी शिक्षा प्रणाली के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता 2026–27 तक प्राथमिक स्तर पर बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान कौशल का लक्ष्य प्राप्त करना है। यह नीति इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि वर्तमान समय में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के एक बड़े हिस्से ने बुनियादी स्तर की शिक्षा में साक्षरता तथा संख्या ज्ञान प्राप्त नहीं किया है। इस संकट का तुरंत समाधान करना अनिवार्य है। प्राथमिक विद्यालयों में अधिक संख्या में ऐसे विद्यार्थी हैं, जिन्होंने बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान नहीं सीखा है। ऐसे विद्यार्थियों में सामान्य लेख को पढ़ने, समझने तथा अंकों के साथ बुनियादी जोड़ एवं घटाव करने की क्षमता भी नहीं है। इनकी अनुमानित संख्या 5 करोड़ से भी अधिक है। इस नीति में बच्चों को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) में निवेश पर अधिक ज़ोर दिया गया है, ताकि बुनियादी स्तर की शिक्षा सभी के लिए सहज तथा सुलभ बनाई जा सके।

बुनियादी स्तर की शिक्षा की वर्तमान स्थिति

सितंबर 2022 में यूनिसेफ़ के सहयोग से शिक्षा मंत्रालय एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा *फाउंडेशनल लर्निंग स्टडी— नेशनल रिपोर्ट ऑन बेंचमार्किंग फ़ॉर ओरल रीडिंग फ्लूअन्सी विद रीडिंग कॉम्प्रीहेंशन एंड न्यूमेरेसी* पर शोध अध्ययन किया गया था। यह शोध अध्ययन देश में बुनियादी शिक्षा के स्तर पर बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान की वर्तमान स्थिति को उजागर करता है। इस अध्ययन में देश के 10,000 विद्यालयों में 20 विभिन्न भाषाओं में ग्रेड 3 के 86,000 से अधिक विद्यार्थियों के सीखने का आकलन किया गया था। विभिन्न बुनियादी साक्षरता कौशलों का अध्ययन करने के लिए इस अध्ययन में कई पक्षों, जैसे— ध्वन्यात्मक जागरूकता, डीकोडिंग, मौखिक भाषा की समझ, पढ़ने की समझ एवं समझ के साथ मौखिक पठन प्रवाह आदि को शामिल किया गया था। इसी तरह, बुनियादी संख्या ज्ञान के अंतर्गत कई पक्षों का आकलन किया गया, जैसे— संख्या संचालन, संख्या की पहचान तथा तुलना, अंश, गुणा एवं भाग, तथ्य, पैटर्न, माप एवं डेटा संचालन इत्यादि। इस अध्ययन में अधिगमकर्ताओं का वर्गीकरण तीन प्रकार की प्रवीणताओं के आधार पर किया गया है, जो अग्रलिखित है—

- **आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता से कम**— ऐसे अधिगमकर्ता जो बुनियादी ज्ञान एवं कौशल को नहीं जानते हैं। इसके कारण वे बुनियादी कक्षा कार्य (बेसिक ग्रेड के टास्क) को पूरा नहीं कर पाते हैं।
- **आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता**— ऐसे अधिगमकर्ता जो सीमित ज्ञान एवं कौशल रखते हैं। वे आंशिक रूप से बुनियादी कक्षा कार्य (बेसिक ग्रेड के टास्क) को पूरा कर पाते हैं।
- **वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता**— ऐसे अधिगमकर्ता जो पर्याप्त बुनियादी ज्ञान एवं कौशल जानते हैं। वे बुनियादी कक्षा कार्य (बेसिक ग्रेड के टास्क) को सफलतापूर्वक पूरा कर पाते हैं।

इस शोध अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि अध्ययन में शामिल किए गए विद्यार्थियों में से केवल 21 प्रतिशत विद्यार्थी वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता स्तर को, 43 प्रतिशत विद्यार्थी आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता स्तर को तथा 21 प्रतिशत विद्यार्थी आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता से कम स्तर को पूरा करते हैं। अगर इस सर्वेक्षण का आकलन बालक और बालिकाओं के संदर्भ में करते हैं, तो आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि केवल 20 प्रतिशत बालिकाएँ आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता से कम, 43 प्रतिशत बालिकाएँ आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता स्तर को, 22 प्रतिशत बालिकाएँ वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता को पूरा करती हैं। जबकि केवल 22 प्रतिशत बालक आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता से कम स्तर को, 43 प्रतिशत बालक आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता स्तर को तथा 19 प्रतिशत बालक वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता को पूरा करते हैं। अतः इस शोध अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थी वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता को आंशिक रूप से पूरा करने की श्रेणी में आते हैं।

आरेख 1

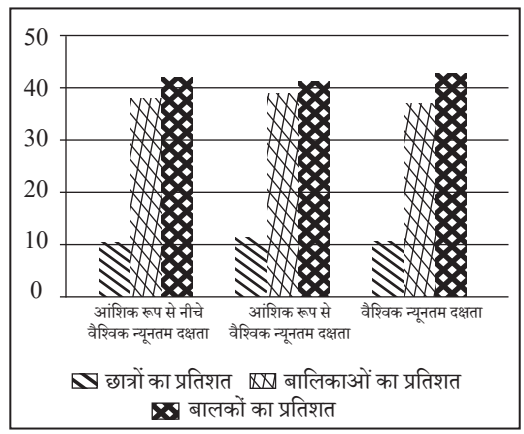

स्रोत— फाउंडेशन लर्निंग स्टडी 2022 नेशनल रिपोर्ट ऑन बेंचमार्किंग फ़ॉर ओरल रीडिंग फ्लूअन्सी विद रीडिंग कॉम्प्रीहेंशन एंड न्यूमेरेसी

बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों तथा सिद्धांतों के अनुरूप बुनियादी स्तर की शिक्षा में शिक्षा, प्रशिक्षण तथा अधिगम को निर्धारित करने के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित किया गया है। यह रूपरेखा 'पंचकोशीय' अवधारणा— अन्यमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश एवं आनंदमय कोश पर केंद्रित है। पंचकोश की अवधारणा में शारीरिक विकास, प्राणमय विकास (जीवन ऊर्जा का विकास), भावनात्मक एवं मानसिक विकास, बौद्धिक विकास

तथा चेतना संबंध एवं आध्यात्मिक विकास के तत्त्व शामिल हैं। पंचकोश के प्रत्येक स्तर में विशिष्ट गुण, कौशल एवं दक्षताएँ समाहित हैं। इस पाठ्यचर्या के अनुसार बच्चे का समग्र विकास इन पाँचों तत्वों के पोषण से जुड़ा हुआ होना चाहिए क्योंकि बुनियादी स्तर की शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। इसके साथ ही, प्रारंभिक शिक्षा, जीवन भर सीखने की नींव है। इसलिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता तथा संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम प्रतिफलों को प्राप्त करना है।

इस पाठ्यचर्या का मानना है कि बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं तथा उसके समग्र विकास की नींव रखते हैं। वास्तव में, इन वर्षों में मस्तिष्क का विकास अधिक तीव्र होता है। तंत्रिका विज्ञान के शोध दर्शाते हैं कि किसी व्यक्ति के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत से अधिक विकास छह वर्ष की उम्र तक हो जाता है। वर्तमान समय में, विद्यालयों में अधिकतर बच्चे प्राथमिक शिक्षा के लिए नामांकित हैं, लेकिन फिर भी वे बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान जैसे बुनियादी कौशल सीखने में असफल हो रहे हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के अनुसार सीखना एक सक्रिय तथा संवादात्मक प्रक्रिया है। इस स्तर पर बच्चे खेल-खेल में, अन्य बच्चों के साथ अंतर्क्रिया तथा अन्य लोगों के साथ बातचीत कर अनुभव के माध्यम से सीखते हैं।

बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 के अनुसार अधिगम खेल-आधारित तथा अनुभव-आधारित होना चाहिए। सीखने के अनुभव समावेशी वातावरण में दिए जाने चाहिए, जिससे बच्चों का भावनात्मक, सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास हो सके। इस पाठ्यचर्या में बाल-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाने एवं अपनी कक्षाओं में शिक्षार्थियों की विविधता को पहचानने जैसी आवश्यकताओं को भी चिह्नित किया गया है। इसके साथ ही, यह रूपरेखा आयु-अनुकूल तथा रोचक अधिगम अनुभवों को डिज़ाइन करने के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करती है, जो बच्चों के समग्र विकास में सहायक हो।

बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में निम्न लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

- शिक्षा के व्यापक उद्देश्य
- विकास के कार्यक्षेत्र, जो कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान दोनों में कल्पित हैं।
- बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान

इस रूपरेखा के अनुसार बुनियादी स्तर की पाठ्यचर्या लचीली एवं बहुआयामी होनी चाहिए। इसे खेल तथा गतिविधि पर आधारित होना चाहिए। पाठ्यचर्या में अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इनडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ तथा तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृश्यकला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए अन्य कार्य, जैसे— सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छा व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना तथा आपसी सहयोग को विकसित करना भी सम्मिलित किया गया है। यह रूपरेखा पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र के आधारभूत सिद्धांत प्रस्तुत करती है, जिसके

आधार पर कक्षा शिक्षण किया जाना चाहिए, जो इस प्रकार है—

- एक सुरक्षित एवं प्रेरक वातावरण इस अवस्था में विकास करने तथा सीखने का आधार है।
- इस स्तर पर सीखने तथा विकास के केंद्र में खेल प्रमुख है।
- शिक्षक तथा बच्चों के बीच संबंधों का पोषण/शिक्षण का आधार है।
- इस अवस्था में शारीरिक विकास बहुत महत्वपूर्ण होता है।
- प्रत्येक बच्चा अपनी गति से सीखता है, इसलिए सीखने की आवश्यकताओं को व्यक्तिगत रूप से संबोधित किया जाना चाहिए।
- बुनियादी अवस्था में बच्चे सबसे अधिक सहज होते हैं। वे अपनी घरेलू भाषा में सहज रूप से सीखते हैं।
- सीखने के अनुभव बच्चों के पूर्व ज्ञान व समझ के आधार पर डिज़ाइन किए जाने चाहिए।
- कक्षा प्रक्रियाएँ ऐसी होनी चाहिए, जो विकास के सभी क्षेत्रों को संबोधित करती हों।

बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में सीखने की प्रक्रिया के पाँच चरणों को पंचादि के रूप में परिकल्पित किया गया है। शिक्षक कक्षा शिक्षण के लिए योजना बनाने में इसका उपयोग कर सकते हैं। पंचपदी, चरणों में सीखने की प्रक्रिया है जिसके पाँच चरण है— अदिति (परिचय), बोध (वैचारिक समझ), अभ्यास (अभ्यास), प्रयोग (अनुप्रयोग) एवं प्रसार (विस्तार)। बुनियादी स्तर पर पाठ्यक्रम में उन विषयों को शामिल किया जाना चाहिए जो बच्चों को उनके प्राकृतिक तथा मानवीय वातावरण से परिचित कराएँ, जिसमें वे बढ़ रहे हैं एवं विकसित हो रहे हैं, जैसे— सामाजिक तथा भौतिक दुनिया, लोग, स्थान, सजीव व निर्जीव वस्तुएँ आदि। शिक्षक को अध्ययन सामग्री को सीखने व सिखाने के लिए नवीन विधियों, जैसे— कहानी आधारित, परियोजना आधारित, थीम आधारित उपागमों का प्रयोग करना चाहिए।

बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए प्रयास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए भारत सरकार, राज्य सरकारों एवं स्थानीय स्तर पर सरकारों द्वारा कई महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत कई योजनाएँ एवं पहलें की जा रही हैं, उनमें से कुछ प्रमुख पहलों का विवरण निम्न प्रकार है।

समग्र शिक्षा— पढ़े चलो बढ़े चलो

समग्र शिक्षा अभियान को 2018 में पूरे देश में स्कूली शिक्षा में सुधार के उद्देश्य से आरंभ किया गया था। इस अभियान का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा के पूर्व प्राथमिक स्तर से माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर तक सुधार करना है, ताकि सभी विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली विद्यालयी शिक्षा प्राप्त हो सके। यह समग्र शिक्षा योजना विद्यालयी शिक्षा के विकास की समावेशी योजना है। *समग्र शिक्षा के कार्यान्वयन की रूपरेखा 2022* के अनुसार विद्यालयी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित एवं न्यायसंगत हो तथा विद्यार्थियों को समावेशी परिवेश के बीच सीखने के नए अनुभव प्राप्त हो सकें। इसके साथ ही, उन्हें विद्यालय में अच्छी भौतिक

अधोसंरचना एवं अधिगम अनुकूल उपयुक्त संसाधन भी उपलब्ध हों ताकि उनका समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके। समग्र शिक्षा योजना राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को उपयुक्त सहायता प्रदान करती है, जिससे वे विद्यालयी शिक्षा में पहुँच, रखरखाव एवं शैक्षिक प्रतिफलों को सुधार सकें। समग्र शिक्षा के अंतर्गत राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को उनकी भौगोलिक एवं सामाजिक-आर्थिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए अधिक सहायता प्रदान की जा रही है। अब समग्र शिक्षा योजना को शिक्षा के सतत विकास लक्ष्य–4 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निर्मित किया गया है। समावेशी तथा समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सभी के लिए सुनिश्चित करना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। समग्र शिक्षा में बुनियादी स्तर की शिक्षा में सुधार करने के लिए निम्न आयामों को शामिल किया गया है।

- अधिगम-शिक्षण तथा सीखने के लिए सहज एवं सुगम सामग्री प्रदान करना।
- शिक्षकों की दक्षता एवं कौशलों को अद्यतन करना।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर ध्यान देना।
- बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान देने पर बढ़ावा देना।
- समग्र, एकीकृत, समावेशी तथा गतिविधि आधारित पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र पर ज़ोर देना।
- विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक तथा जेंडर अंतराल को कम करना।
- विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर समानता एवं समावेशन को सुनिश्चित करना।

समुदाय की सक्रिय भागीदारी— विद्यांजलि

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों का अनुकरण करते हुए विद्यांजलि कार्यक्रम विकसित किया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूल स्तर पर सामुदायिक तथा स्वैच्छिक भागीदारी को बढ़ावा देकर पूरे देश में विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाना है। यह एक ऐसा कार्यक्रम है जो भारत के नागरिक या अप्रवासी भारतीय या भारतीय मूल के व्यक्ति या भारत में पंजीकृत कोई संगठन या संस्था या कंपनी या समूह को सरकारी तथा सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय में सुझाई गई विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता कर सेवाएँ प्रदान करने तथा निःशुल्क रूप में परिसंपत्ति या सामग्री या उपकरण प्रदान करने को प्रोत्साहित करता है। इस पहल का उद्देश्य पूरे देश में सामुदायिक एवं निजी क्षेत्र के सहयोग के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा को मज़बूत करना है। यह पहल सभी बच्चों तक समावेशी तथा समान गुणवत्ता वाली शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित कर सके व सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा दे सके। विद्यांजलि के नेतृत्व में विद्यार्थियों को शैक्षिक तथा गैर-शैक्षिक अनुभव स्वयंसेवकों के माध्यम से प्रदान किए जाएँगे। यह पहल स्वयंसेवकों, सेवानिवृत्त शिक्षक, सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी, सेवानिवृत्त पेशेवर महिलाओं आदि को विद्यालयों से जोड़ने का एक प्रयास है ताकि वे विद्यालय से जुड़कर अपनी सेवाएँ प्रदान कर सकें। प्रारंभिक स्तर पर तथा विशेष रूप से पूर्व प्राथमिक स्तर के लिए माता-पिता एवं समुदाय के साथ जुड़ाव की भूमिका को स्वीकार करते

हुए, यह कार्य योजना सामुदायिक स्वयंसेवकों की भागीदारी पर ज़ोर देती है।

सीखने का एक जुनून रहेगा, सीखने से न कोई दूर रहेगा— निपुण भारत

बच्चों के विकास में बुनियादी स्तर की शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए, देश में प्रत्येक बच्चे को आवश्यक रूप से बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक राष्ट्रीय बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान मिशन-निपुण भारत (नेशनल इनिशिएटिव फ़ॉर प्रोफिशिएन्सी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी) वर्ष 2021 में शुरू किया गया। इस अभियान में आधारभूत भाषा तथा साक्षरता के प्रमुख घटक के रूप में मौखिक भाषा, डीकोडिंग, पठन प्रवाह, पढ़ना, समझना, लेखन जैसे मूलभूत कौशलों को शामिल किया गया है। बुनियादी संख्या ज्ञान में प्रारंभिक गणित के प्रमुख पहलुओं के अंतर्गत पूर्व-संख्या अवधारणाएँ, संख्याएँ एवं संख्याओं पर संचालन, आकार तथा स्थानिक समझ, मापन, डेटा संधारण इत्यादि कौशलों को समाहित किया गया है। इस मिशन का लक्ष्य विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी स्तर पर बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान को प्राप्त करना है। यह मिशन प्रत्येक बच्चे के लिए कक्षा 3 के अंत तक बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान में प्रवीणता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों के लिए प्राथमिकताएँ तथा कार्रवाई करने योग्य एजेंडा को निर्धारित करता है। यह प्री-स्कूल से ग्रेड 3 सहित तीन से नौ वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों पर ध्यान केंद्रित करता है।

सीखने का एक नया अनुभव— जादुई पिटारा

बुनियादी स्तर पर सीखने तथा सिखाने की प्रकिया को और अधिक सहज एवं आकर्षक बनाने के लिए जादुई पिटारा विकसित किया गया है। जादुई पिटारा में कई अध्ययन सामग्रियाँ सम्मिलित हैं जिसमें विद्यार्थियों के लिए प्लेबुक, खिलौने, खेल, पहेलियाँ, कठपुतलियाँ, पोस्टर, फ्लैशकार्ड, कहानी कार्ड एवं शिक्षकों के लिए हस्तपुस्तिका को शामिल किया गया है। जादुई पिटारा खेल-खेल में सीखने के सिद्धांत पर आधारित है। यह शिक्षकों के लिए उपयोगी अधिगम-शिक्षण सामग्री के रूप में विकसित एक अनुकरणीय संग्रह है। जादुई पिटारा सीखने का एक नवीन अनुभव है जिसे तीन से आठ वर्ष के आयु के शिक्षार्थियों के लिए 13 भाषाओं में विकसित किया गया है। जादुई पिटारा को *बुनियादी स्तर की शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के आधार पर विकसित किया गया है। यह रूपरेखा बताती है कि, इस स्तर पर बच्चे कैसे खेल और गतिविधि के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। बच्चे सामग्री, पेंटिंग, ड्राइंग, गायन, नृत्य, दौड़ने और कूदने जैसी क्रियाएँ करते समय सीखने का आनंद लेते हैं। खेल के माध्यम से सीखना *जादुई पिटारा* का आदर्श वाक्य है।

जादुई पिटारा को बाल-केंद्रित, अनुभव केंद्रित और खिलौना-आधारित सीखने के अनुभव के रूप में परिकल्पित किया गया है, जो आठ साल की उम्र तक शिक्षार्थियों के बीच वैचारिक समझ को मज़बूत करेगा। जादुई पिटारा में प्लेबुक्स, खिलौने, पहेलियाँ, पोस्टर, फ्लैशकार्ड, कार्यपत्रक आदि को स्थानीय संस्कृति की समझ के साथ दर्शाया गया है, जो कि बुनियादी अवस्था में विद्यार्थियों की

विविध आवश्यकताओं को पूरा करने तथा उनकी जिज्ञासा का समाधान करने में सहायक होगा। जादुई पिटारा में शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक, नैतिक, संज्ञानात्मक, भाषा तथा साक्षरता, सौंदर्य एवं सांस्कृतिक विकास के सभी आयामों को शामिल करने का प्रयास किया गया है। शिक्षक-प्रशिक्षक, माता-पिता तथा स्कूल खेल-खिलौने, पोस्टर, कठपुतलियों, स्थानीय संवाद वाली गतिविधि पुस्तकों, कविताओं, कहानी एवं कार्डों को इकट्ठा करके अपना स्वयं का जादुई पिटारा बना सकते हैं। जादुई पिटारा को डिजिटल रूप में भी विकसित किया गया है। यह दीक्षा पोर्टल *https://diksha.gov.in/jadoo/index.html* पर उपलब्ध है।

बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए सुझाव

- प्रायः विद्यालय का वातावरण घर के वातावरण से बिल्कुल अलग होता है। विद्यालय में स्वतंत्रता का अभाव होने पर बच्चे खुद को असहज महसूस करते हैं तथा उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता है। विद्यार्थियों के उचित अधिगम के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक कक्षा में घरेलू एवं उन्मुक्त वातावरण बनाने का प्रयास करें।
- ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालय में बच्चों को सीखने की आवश्यक वस्तुएँ, जैसे— खिलौने, प्ले कार्ड्स, पोस्टर, खेल के उपकरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों का सीखना रुचिकर नहीं होता है तथा उनका मन अधिगम से विमुख हो जाता है। इसलिए अधिगम अनुभवों एवं शिक्षणशास्त्र के संगठन में खेल को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाना चाहिए। साथ ही, पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के प्रभावी ढंग से सिखाने के लिए संसाधनों का प्रबंधन किया जाना आवश्यक है।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करते हुए उन्हें अभिप्रेरित करने का प्रयास करना चाहिए। अतः शिक्षकों को विद्यार्थियों में रुचि एवं जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए उनके पूर्वज्ञान से नवीन ज्ञान को जोड़ते हुए उन्हें सीखना चाहिए।
- बुनियादी स्तर की शिक्षा के दौरान बच्चे छोटे अर्थात तीन से आठ वर्ष के होते हैं। उन्हें दूसरे बच्चों के साथ समय व्यतीत करना पसंद होता है। उनकी इस विशेषता का उपयोग करते हुए अधिगम-शिक्षण को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे वे एक-दूसरे के साथ समूह में मिल-जुलकर सीख सकें।
- बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के जो भी प्रयास सरकार द्वारा किए जा रहे हैं, उनको ज़मीनी स्तर पर लागू करने के लिए सबसे ज़रूरी है कि सभी संस्थाएँ, विद्यालय, शिक्षक, प्राचार्य, अभिभावक एवं समुदाय मिलकर अपना काम पूरी ईमानदारी एवं लगन से करें।
- विद्यालयों में प्रशिक्षित कुशल एवं दक्ष शिक्षकों की कमी को शीघ्र पूरा किया जाए।
- विद्यालय प्रशासन के द्वारा स्थानीय समुदाय से हर संभव मदद लेने का प्रयास किया जाए।
- बुनियादी स्तर की शिक्षा के अंतर्गत पाठ्यक्रम में बोलने, सुनने, पढ़ने तथा लिखने जैसी बुनियादी क्रियाओं एवं कौशलों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।
- विद्यालय में अधिगम-शिक्षण के दौरान प्रायः लिखने पर अधिक बल दिया जाता है। शिक्षकों

को अधिगम-शिक्षण अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए विद्यार्थियों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उनमें संप्रेषण कौशलों का विकास हो सके।

- शिक्षकों को बुनियादी स्तर की शिक्षा में अभिभावकों को शामिल करते हुए बच्चों की शिक्षा को सहज एवं सुगम बनाना चाहिए।

निष्कर्ष

बुनियादी स्तर की शिक्षा, शिक्षा का सबसे मौलिक एवं बुनियादी स्तर होता है। इस स्तर की शिक्षा द्वारा बच्चों को नैतिक मूल्यों, आधारभूत भाषा एवं गणित, सामाजिक और वैज्ञानिक अध्ययन जैसी मूल जानकारी प्राप्त होती है। आधुनिक युग की नींव तैयार करने में बुनियादी स्तर की शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। क्योंकि यह शिक्षा जहाँ व्यक्ति को स्वावलंबी बनाती है, वहीं समाज को भी स्वावलंबी बनाती है। यदि विद्यार्थियों को इस प्रकार की बुनियादी शिक्षा के आधार पर शिक्षित किया जाए, तो भावी पीढ़ी अपेक्षाकृत अधिक मज़बूत होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के विकास की एक नई उम्मीद है। यह बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए नए आयाम खोलती है। इस नीति का उद्देश्य भारत को ज्ञान की महाशक्ति बनाना है, परंतु यह स्वप्न तभी साकार होगा जब सभी विद्यार्थियों को बुनियादी स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए। इस कार्य को संस्थाओं, विद्यालय, शिक्षक, प्राचार्य, प्रशासन, विद्यार्थी, अभिभावक एवं समुदाय आदि को मिलकर करना होगा ताकि बुनियादी स्तर की शिक्षा को सुगम एवं सहज रूप से क्रियान्वित किया जा सके।

संदर्भ

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली. 1 जनवरी, 2023 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf से प्राप्त किया गया।

शिक्षा मंत्रालय. *समग्र शिक्षा अभियान. 2021*. भारत सरकार, नई दिल्ली. 10 मार्च, 2023 को https://www.enterhindi.com/samagra-shiksha-abhiyan-portalmhrd/ से प्राप्त किया गया।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *फ़ाउंडेशनल लर्निंग स्टडी 2022— नेशनल रिपोर्ट ऑन बेंचमार्किंग फ़ॉर ओरल रीडिंग फ्लूअन्सी विद रीडिंग कॉम्प्रीहेंशन एंड न्यूमेरेसी*. नई दिल्ली. 10 जनवरी, 2023 को https://nipunbharat.education.gov.in/fls/file/Benchmarking_for_ORF_and_Numeracy.pdf से प्राप्त किया गया।

——. *जादुई पिटारा 2023*. 5 फरवरी, 2023 को https://diksha.gov.in/jadoo/explore.html से प्राप्त किया गया।

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग. 2021 *विद्यांजलि स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु समुदाय तथा स्वैच्छिक भागीदारी को बढ़ावा देने संबंधी दिशा-निर्देश*. नई दिल्ली. 12 जनवरी, 2023 को https://vidyanjali.education.gov.in/assets/pdf/Guidelines_Vidyanjali_Hindi.pdf से प्राप्त किया गया।

शिक्षा मंत्रालय. स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग. 2021 *निपुण भारत 2021— दिशा-निर्देश*. नई दिल्ली. 15 जनवरी, 2023 को https://diksha.gov.in/play/collection/do_31341783425668710417 39 से प्राप्त किया गया।

मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विश्लेषण

अर्चना पाल*
लालसा सिंह**

किसी भी देश में समय-समय पर लागू की गईं शिक्षा नीतियों का उद्देश्य बदलते परिवेश तथा आवश्यकतानुसार देश के राष्ट्रीय, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विकास के लक्ष्यों को पूरा करना है। साथ ही, देश के मूल्यों, आदर्शों, विचारों तथा संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना भी होता है। इन्हीं मूल्यों एवं विचारों का प्रचार-प्रसार देश के कई विचारकों एवं समाज सुधारकों द्वारा किया गया, जिनमें महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय जैसे कई महान व्यक्ति हुए हैं। इस लेख में मदन मोहन मालवीय के आदर्शों एवं मूल्यों की प्रासंगिकता को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार पर विश्लेषित कर प्रस्तुत किया गया है। उनके विद्यालयी शिक्षा से उच्च शिक्षा तक के क्षेत्र में सामान्य एवं अपवंचित वर्ग, राष्ट्रवादी चेतना, सनातन संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन, धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास तथा सामाजिक सुधार से संबंधित विचार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में समझने का प्रयास किया गया है।

मदन मोहन मालवीय भारतीय संस्कृति के साथ आधुनिक संस्कृति के समावेशन के पक्षधर थे, जिससे आधुनिक भारत का विकास हो सके। आज की युवा पीढ़ी के लिए उनके विचार मानवता की वह मिसाल हैं, जो उन्हें भावी जीवन में कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। वह भारतीय परंपरा के अनुसार जीवन जीने का ऐसा मार्ग प्रशस्त करते हैं, जिसमें आधुनिकता के साथ भारतीय संस्कृति का समावेश हो। यह लेख उनके व्यक्तित्व की समीक्षा एवं उनके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए सराहनीय कार्यों को दर्शाते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में यह दर्शाने का प्रयास करता है कि किस प्रकार उनके विचार आज भी पठन एवं मनन योग्य हैं। साथ ही, दार्शनिक तथा शिक्षाविद के रूप में उनका अनुसरण करके वर्तमान पीढ़ी स्वयं, समाज तथा राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने में सक्षम हो सकती है।

मानव जीवन में संस्कारों का विशेष महत्व होता है। संस्कारों का अर्थ होता है— व्यक्ति को सँवारना तथा उच्च स्तर तक पहुँचाना। ऐसे ही संस्कारों में पंडित मदन मोहन मालवीय का पालन-पोषण हुआ था।

* *शोधार्थी*, लखनऊ विश्वविद्यालय, बाबूगंज, हसनगंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226007
** *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, ऋतुराज डिग्री कॉलेज, जयराम नगर, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश 212601

"मदन मोहन मालवीय जी, युग परिवर्तन के थे वो सूत्रधार।
अडिग संकल्प और लोकमंगलकारी, भावना थी मन में जिनके अपार।।
वाणी और लेखनी में थीं उनके, सदैव सरस्वती माँ विराजती।
जन-जन को जो उनकी प्रतिभा से, मुखरित और प्रभावित थी करती।।
साहित्य की शाश्वत निधि बन, मानवता की बने वो अटूट मिसाल।
मानव धर्म सर्वोपरि रखते हुए, नित खोले उन्नति के नए द्वार।।
राजनीति, धर्म, शिक्षा, संस्कृति तथा, भारतीयता का ऐसा सामंजस्य बिठाया।
अंधकार धरा का मिटाने को, ज्ञान का अखंड द्वीप जलाया।।"

वह त्याग, धर्मरक्षा, पवित्रता, निष्ठा इत्यादि सद्गुणों से युक्त व्यक्तित्व के धनी थे। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को विशिष्ट दिशा देने में उनका बहुत बड़ा योगदान है, जो कि वर्तमान *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के सापेक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। वह भारत की उन महान विभूतियों में से एक हैं, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण, समाज सेवा का सपना देखा और उसे साकार भी किया। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय जैसी प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान की स्थापना की, जो आज भी सफलता के उच्च शिखर पर है।

मदन मोहन मालवीय का एक सपना था कि देश का प्रत्येक व्यक्ति साक्षर हो। उनके इस सपने को वर्तमान शिक्षा नीति साकार करते हुए प्रतीत हो रही है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में उल्लिखित 3 से 18 वर्ष के प्रत्येक बच्चे की स्कूली शिक्षा में 100 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात (जी.ई.आर.) के साथ, पूर्व-विद्यालय (प्री-स्कूल) से माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा के सार्वभौमीकरण का लक्ष्य *शिक्षा का अधिकार कानून 2009* के तहत रखा गया है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की झलक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उनके द्वारा सामाजिक असमानताओं, जाति-प्रथा एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास में, मज़दूरों एवं किसानों के हित में किए गए अनेक कार्यों के अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में भी उनके कार्य एवं विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्रासंगिक हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने तकनीकी एवं औद्योगिक शिक्षा पर बल देते हुए युवाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया है। इस लेख में लेखिकाओं द्वारा उनके व्यक्तित्व की समीक्षा और विचारों का अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में करके यह बताने का भी प्रयास किया है कि किस प्रकार वे भारतीय शिक्षा के विकास एवं उन्नयन में एक अलौकिक कड़ी बने? उनके द्वारा विविध सरोकारों पर दिए गए विचारों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जोड़ते हुए प्रासंगिक विश्लेषण निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

राष्ट्रवादी चेतना संबंधी विचार एवं कार्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 राष्ट्रव्यापी स्तर पर गहन विचार विमर्श के परिणामस्वरूप एवं वैश्विक स्तर पर रोज़गार की परिस्थितियों तथा समस्याओं को ध्यान में रखकर लागू की गई है। यह नीति मदन मोहन

मालवीय द्वारा किए गए प्रयासों के सापेक्ष सार्थक प्रतीत होती है। वह संपूर्ण स्वदेश के खोए हुए गौरव को स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। वह सनातन संस्कृति और भारतीय भाषा के पक्षधर थे। वह सच्चे देशभक्त थे। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र के लिए समर्पित था।

उन्हें एशिया के सबसे बड़े विश्वविद्यालय (काशी विश्वविद्यालय, बनारस) के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। इस विश्वविद्यालय में विदेशों से भी लोग शिक्षण अध्ययन करने आते हैं।

सामाजिक क्षेत्र में किए गए कार्य

शिक्षा और समाज के संबंध से वह भली-भाँति परिचित थे, इसलिए उन्होंने समाज में सुधार लाने के लिए एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए शिक्षा पर बल दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति का उत्थान, वंचितों के कष्ट का निवारण, हरिजनों का उत्थान, सनातन धर्म का प्रचार आदि सभी सामाजिक क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किए। वह सभी जातियों एवं धर्म का सम्मान करते थे। वह छुआछूत जैसी सामाजिक संकुचित विचारधाराओं के विरोधी थे (तिवारी, 2021)। उन्होंने अहिंसा के विचारों का प्रतिपादन करते हुए सामाजिक परिवर्तनवादी दृष्टिकोण का भी परिचय दिया। जो वर्तमान में युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास हेतु किए गए कार्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 1, अध्याय 4 के बिंदु 4.23 में एक सफल, अभिनव, उत्पादक व्यक्ति बनने के लिए विद्यार्थियों को कुछ विषय, कौशल एवं क्षमताओं को सीखना आवश्यक बताया गया है, जिनमें नैतिकता एवं मूल्य ज्ञान भी शामिल हैं। मदन मोहन मालवीय चाहते थे कि नवीन सभ्यताओं में भी पुराने रीति-रिवाज, परंपराएँ अपना अस्तित्व बनाए रखें। वह नैतिक और धार्मिक शिक्षा के पक्ष में थे। वह जीवन के लिए धर्म को आवश्यक मानते थे। उनका मानना था कि धार्मिक नियमों का पालन करने से हमारी नैतिक प्रगति होती है। वर्तमान शिक्षा नीति में इस बात की प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। साथ ही, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के संदर्भ बिंदु 6.20 में भी स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि विद्यालयी पाठ्यक्रम में मानवीय मूल्यों, विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं, जेंडर-आधारित अस्मिता आदि पर विस्तृत जानकारी सम्मिलित करनी होगी, जो कि विविधता के प्रति सम्मान की भावना तथा संवेदनशीलता के विकास में सहायक हो सके। उनका मानना था कि मानव जीवन में नैतिक मूल्यों का ह्रास नहीं होना चाहिए। व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण मनुष्य के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। इस संदर्भ में मदन मोहन मालवीय के वैयक्तिक गुणों से ये सीख ले सकते हैं कि नवीन सभ्यताओं को सीखने के साथ-साथ "एक भारत श्रेष्ठ भारत" पहल के अंतर्गत अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों, नैतिक मूल्यों को सीखना एवं अपनाना होगा, तभी हम प्रगतिशील बन सकेंगे।

सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु किए गए कार्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 के 4.28 बिंदु के अंतर्गत कम उम्र में ही विद्यार्थियों को

"जो सही है, उसे करने" के महत्व को सिखाने तथा नैतिक बोध के विकास की अनुशंसा की गई है, जिससे विद्यार्थियों में पारंपरिक भारतीय मूल्यों एवं सभी बुनियादी, मानवीय व संवैधानिक मूल्यों को विकसित किया जा सके, जो कि मदन मोहन मालवीय द्वारा तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु किए गए समस्त प्रयासों को देखते हुए समीचीन है। तत्कालीन समय में कई सामाजिक कुरीतियाँ विद्यमान थीं, जैसे— बाल विवाह, विधवा विवाह, बेमेल विवाह, बालिका व्यापार इत्यादि। शिक्षा तथा समाज के आपसी संबंध से वे परिचित थे, इसलिए उन्होंने समाज में सुधार लाने के लिए एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए शिक्षा के माध्यम से जागरूकता लाने का मार्ग अपनाया।

रोज़गारोन्मुख शिक्षा को बढ़ावा देना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 2 में अध्याय 16 के अंतर्गत 16.1 से लेकर 16.6 तक के समस्त संदर्भ बिंदुओं के पठन, चिंतन तथा मनन से यह समझने का प्रयास किया जा सकता है कि भारत में बेरोज़गारी के क्या कारण हैं? इसका प्रत्युत्तर है— अब तक शिक्षा व्यवस्था में विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को कम महत्व दिया जाना है। फलस्वरूप उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात भी अधिकांश जनसंख्या बेरोज़गार है। बेरोज़गारी को कम करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा को क्रमबद्ध तरीके से स्कूली व उच्च शिक्षा में समावेशित करने की अनुशंसा की गई है, जिससे स्थानीय स्तर पर कौशल आधारित रोज़गार के अवसरों का विश्लेषण कर चिह्नित क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जा सके। ताकि सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर सभी वर्ग के व्यक्तियों को जीवकोपार्जन के समान अवसर उपलब्ध किए जा सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 के बिंदु 6.2.2 में अन्य पिछड़ा वर्ग पर विशेष ध्यान देने की बात रखी गई है, जो मदन मोहन मालवीय के पिछड़े वर्गों के लिए किए गए अथक प्रयासों के परिप्रेक्ष्य में आज भी उतनी ही प्रासंगिक है और स्पष्ट करती है कि क्यों उनके द्वारा किए गए कार्य सराहनीय हुए। उन्होंने बंधुआ मज़दूर व्यवस्था को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

व्यावसायिक शिक्षा को उच्च शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाने तथा कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कृषि से संबंधित विषयों में स्थानीय ज्ञान, जलवायु परिवर्तन, नवीन तकनीक के उपयोग इत्यादि की जानकारी (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के भाग 3, अध्याय 20 के अंतर्गत संदर्भ बिंदु 20.2 एवं 20.3) कृषि शिक्षा द्वारा प्रारंभ से ही देकर विद्यार्थियों को तैयार किया जाए, तो भारतीय अर्थव्यवस्था मज़बूत होगी।

स्कूली शिक्षा हेतु किए गए कार्य

मदन मोहन मालवीय के शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य युग-युगांतर तक याद किए जाएँगे। उनका मानना था कि शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना राज्य की ज़िम्मेदारी है। वह शिक्षा की ऐसी प्रणाली विकसित करना चाहते थे, जिसमें प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा नि:शुल्क हो। इस बात की चर्चा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी अभिचिह्नित है। उनका मानना था कि शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो, जिसमें कोई भी बालक शिक्षा से वंचित न हो। उन्होंने विद्यार्थियों की दिशा

एवं दशा सुधारने हेतु पुस्तकालय एवं छात्रावासों का निर्माण भी कराया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 के बिंदु 6.16 में स्कूली शिक्षा में सभी अध्ययनरत एस. ई. डी. जी. (सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित), प्रतिभाशाली तथा मेधावी विद्यार्थियों के लिए विशेष छात्रावास, सेतु पाठ्यक्रम, शुल्क माफ़ी व छात्रवृत्तियों की सहायता प्रदान करने की अनुशंसा निःसंदेह मदन मोहन मालवीय के द्वारा किए गए शैक्षिक प्रयासों के समीचीन प्रतीत होती है। शिक्षा के बेहतर अवसर प्रदान करने हेतु उन्होंने केवल बालक वर्ग का ही नहीं अपितु बालिकाओं एवं स्त्रियों के लिए भी उचित शैक्षिक प्रयास किए। उन्होंने शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए कई सराहनीय कार्य किए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी आज के युवा वर्ग से उनकी तरह श्रेष्ठ गुणों से युक्त अध्येता, शिक्षक एवं नागरिक बनकर संपूर्ण राष्ट्र के विकास में सहयोग की अपेक्षा करती है।

स्त्री शिक्षा हेतु किए गए कार्य

मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय कार्यक्रमों के द्वारा स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने एवं स्त्रियों को इतना सक्षम बनाना चाहते थे कि वह भारत के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। वह देश सेवा के लिए स्त्रियों को भी पुरुषों के समान ही महत्वपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि समाज में सभी स्त्रियाँ शिक्षित होनी चाहिए, तभी उन्होंने 1904 में गौरी पाठशाला की स्थापना की थी। वह एक संतुलित समाज चाहते थे, इसीलिए वह स्त्री शिक्षा की समुचित व्यवस्था को अनिवार्य मानते थे। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के भाग 1 के बिंदु 6.7 एवं 6.8 में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों की बालिकाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था तथा उनकी वर्तमान और भावी पीढ़ियों के शैक्षिक स्तर को उठाने हेतु सर्वोत्तम व्यवस्था की गई है। साथ ही, जेंडर-समावेशी निधि के गठन की बात भी की गई है, जिसका उद्देश्य जेंडर या अन्य किसी भी कारण से वंचित समूह के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य

मदन मोहन मालवीय का उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास का सर्वप्रथम उदाहरण काशी विश्वविद्यालय है, जो पूरे एशिया में चर्चित एवं देश का सबसे प्रतिष्ठित केंद्रीय विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना कर वह बच्चों को शिक्षित करना चाहते थे, जो शिक्षा ग्रहण कर देश का मस्तक गर्व से ऊँचा करें एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार एवं प्रसार कर सकें।

उनका कहना था कि विद्यार्थियों के लिए यदि तकनीकी शिक्षा व चिकित्सा शिक्षा की व्यवस्था तथा भारत में विज्ञान एवं तकनीक को अधिक बढ़ावा नहीं दिया गया, तो भारत का औद्योगिक विकास संभव नहीं होगा। अपने इन्हीं विचारों के तहत उन्होंने शिक्षा को लेकर उच्च लक्ष्यों का निर्माण किया और यथासंभव उनकी पूर्ति के लिए आजीवन प्रयासरत रहें। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के द्वितीय भाग के संदर्भ बिंदु 9.1.3 के अनुसार उच्च शिक्षा का लक्ष्य ऐसा हो, जो विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से जाग्रत करे तथा नागरिकों के जीवन को उन्नत भी करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 9 के बिंदु 9.1.1 का भी संदर्भ देना यहाँ उचित होगा,

जिसमें यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य अच्छे, चिंतनशील, बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास होना चाहिए। उच्च शिक्षा को व्यक्तिगत उपलब्धि, ज्ञान, रचनात्मक सार्वजनिक सहभागिता व समाज के उत्पादक में योगदान को सक्षम बनाते हुए, विद्यार्थियों को अधिक संतोषजनक जीवन व कार्य के लिए तैयार कर, आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने की ओर उन्मुख होना चाहिए, जो कि उनके विचारों को दर्शाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 11 के बिंदु 11.4 में इक्कीसवीं शताब्दी तथा चौथी औद्योगिक क्रांति हेतु स्कूली तथा उच्च शिक्षा दोनों को ही समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा की पटरी पर चलना होगा, यदि ऐसा न किया गया तो व्यक्ति के बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक व नैतिक क्षमताओं का विकास संभव नहीं हो सकेगा। अतः हम यह कह सकते हैं कि उन्होंने यह सपना काशी विश्वविद्यालय की नींव रखते समय अवश्य देखा होगा।

तकनीकी शिक्षा के विकास हेतु किए गए कार्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्तमान शिक्षा के विभिन्न आयामों को प्रौद्योगिकी के माध्यम से अंगीकृत करने पर बल देती है। शिक्षा में प्रौद्योगिकी की उपयोगिता एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (एन.ई.टी. एफ़.) के निर्माण की बात की गई है, जो निश्चित रूप से संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगी।

वह भी देश की निर्धनता तथा बेरोज़गारी के प्रति चिंतित थे। देश के आर्थिक विकास के लिए इंजीनियरिंग और तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था करने में उन्होंने अथक प्रयास किए। वह जानते थे कि राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए भारी उद्योगों की आवश्यकता है। अतः उन्होंने यूरोपीय विज्ञान, इंजीनियरिंग और तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था को आवश्यक बताया।

तकनीकी शिक्षा के संबंध में उनके विचार दूरगामी सिद्ध हुए। वह राष्ट्र के विकास के लिए कितने आवश्यक है? इसकी परिकल्पना पूर्व में ही कर चुके थे, जिसकी अनुशंसा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मज़बूती से करती है।

पत्रकारिता एवं साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में किए गए कार्य

जनसंचार के लिए पत्रकारिता तथा प्रेस के माध्यम से राष्ट्र के बड़े भू-भाग पर सूचनाओं का संवहन अत्यंत सरलता और सहजता से किया जा सकता है। पत्रकारिता और साहित्य के माध्यम से लोगों को जागरूक करना तथा उनमें संवेदना उत्पन्न करना है।

मदन मोहन मालवीय का पत्रकारिता और साहित्य प्रेम उन्हें सदैव निष्पक्ष एवं कुशल व्यक्तित्व का स्वामी बनाता है। वह पत्रकारिता को एक कला मानते थे, उन्होंने नए तरीके से पत्रकारिता की शुरुआत की तथा हिंदी प्रेस की नींव रखी। वह *इंडियन यूनियन, अभ्युदय, भारत, लीडर, मर्यादा, सनातन धर्म* आदि नामक पत्रिकाओं के संरक्षक एवं प्रेरणा स्रोत थे। अपनी समस्त पत्रिकाओं एवं समाचार-पत्रों में वे स्वस्थ आलोचना करते थे। किसी भी ऐसे विज्ञापन का प्रकाशन नहीं करते थे, जिससे कि समाज पर उसका बुरा प्रभाव पड़े (पांडेय, 2007)। उनके साहित्य और

पत्रकारिता के इस लगाव को आज के युवाओं को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

मदन मोहन मालवीय ने देश की प्रगति के लिए संघर्ष तथा अथक प्रयास किए। वह देश में अज्ञानता का अंधकार हटाकर शिक्षा का प्रकाश फैलाना चाहते थे। वह जाति प्रथा का विरोध करते थे, देश के हर नागरिक को शिक्षित करने के लिए प्रयासरत रहते थे, इसलिए उन्होंने गौरी पाठशाला, काशी विश्वविद्यालय जैसे श्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों की स्थापना की, जो आज भी पूरे एशिया में विख्यात है। साथ ही मदन मोहन मालवीय नारी शिक्षा के भी पक्षधर थे, उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व योगदान दिया। वह भारतीय संस्कृति के साथ-साथ आधुनिक संस्कृति का ऐसा समावेश करना चाहते थे, जिससे भारत न केवल प्रगतिशील पथ पर अग्रसर हो, अपितु समस्त विश्व में विख्यात भी हो। इस लेख में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनेक संदर्भ बिंदुओं के संदर्भ में मदन मोहन मालवीय के विचारों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। उनका व्यक्तित्व निश्चित रूप से आज के युवा वर्ग के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने देश को आज़ाद कराने एवं देश के विकास के लिए गहन संघर्ष किया और अपने अंतिम समय तक अपना अतुलनीय योगदान देते रहे।

संदर्भ

पांडे, विश्वनाथ. 2011. *महामना मदन मोहन मालवीय— व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचार*. वाराणसी काशी हिंदू विश्वविद्यालय.

पांडेय, रामशकल. 2007. *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक*. विनोद पुस्तक भंडार. आगरा.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

तिवारी, ए. के. 2021. सोशियो-पॉलिटिकल आइडियाज़ ऑफ़ मालवीय एंड इंडियन फ्रीडम मूवमेंट. *इंडियन जर्नल ऑफ़ सोशल स्टडीज़ एंड ह्यूमैनिटीज़*. 1(7). पृष्ठ संख्या 38–44.

https://www.blogger.com/blog/post/edit/6222401373144877699/3370412650626856184 retrieved from https://archanapaal.blogspot.com/on 17/10/2022.

विद्यार्थियों के समग्र विकास का आधार
मानसिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा

कृष्ण चंद्र चौधरी*

विद्यार्थियों के नैसर्गिक विकास पर कोविड-19 महामारी का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। विशेषकर कोविड-19 के दौरान, जहाँ एक ओर उन्हें विद्यालय का शैक्षणिक वातावरण नहीं मिल पाया, जिससे उनका शैक्षणिक विकास बाधित हुआ, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक परिवेश में खेल-कूद के अभाव के कारण उनका शारीरिक, सामाजिक एवं मानसिक विकास भी प्रभावित हुआ है। यह ऐसी परिस्थिति थी जिसमें विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने, ऑनलाइन गतिविधियाँ, रचनात्मक खेल, मनोरंजन के साथ सीखने का वातावरण आदि का समायोजन किया गया, किंतु यह शिक्षा उनके सर्वांगीण विकास के लिए पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों के साथ-साथ युवा वर्ग में भी अपनी आजीविका के प्रति एक अनिश्चितता की अवस्था थी, क्योंकि उन्हें यह पता नहीं था कि इस परिस्थिति में (कोविड-19 के दौरान) आगे उनका विकास किस तरह से होगा तथा कौन-सी ऐसी परिस्थितियाँ होंगी, जिससे उनमें मानसिक स्वास्थ्य, सुरक्षा, आत्मनिर्भरता तथा निर्णय लेने की क्षमता विकसित हो सकेगी। अतः विद्यार्थियों एवं युवा वर्ग में अपने अध्ययन एवं अग्रिम विकास के लिए ऊहापोह की स्थिति व्याप्त थी। ऐसे समय में विद्यार्थियों एवं युवा वर्ग में सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा पर ज़ोर देने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसकी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी अनुशंसा की गई है। वहीं अभिभावकों ने भी विद्यार्थियों को सामाजिक-भावनात्मक रूप से सक्षम बनाने का प्रयास किया। अत: विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए कई कारक ज़िम्मेदार हैं, जिनमें जागरूकता और जीवन कौशल को बढ़ावा देने से विद्यार्थियों के कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इस लेख में विद्यालयी शिक्षा के हितधारकों, जैसे— विद्यार्थी, अध्यापकों, प्रधानाचार्य, विद्यालय प्रशासन, अभिभावकों, समुदाय, स्वास्थ्य कार्यकर्ता आदि की महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की गई है।

विद्यार्थी किसी भी राष्ट्र का भविष्य एवं धरोहर होते हैं। वे कल्पनाशील तथा सृजनात्मक होते हैं। विद्यार्थियों की देखभाल करने और उन्हें संरक्षण देना परिवार की प्राथमिक ज़िम्मेदारी है। विद्यार्थियों का परिवार, समुदाय एवं समाज के साथ सामंजस्य होना आवश्यक है। प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदा में विद्यार्थी की सुरक्षा, सेहत और भावनात्मकता का पूरा ध्यान रखना चाहिए। कोविड-19 महामारी के

* *विभागाध्यक्ष*, मनोविज्ञान विभाग, सहजानंद ब्रह्मर्षि महाविद्यालय, आरा 802301

जैसे कठिन समय में विद्यार्थी जब तनाव के कारण बहुत अधिक परेशान रहने लगे और लंबे समय तक इन जटिल परिस्थितियों से जूझते रहे, ऐसे में उन्हें मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता से विशेष मदद लेकर सहायता कर सकते हैं। इस प्रकार की आपदाओं के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक पक्ष को भी गंभीरता से समझने की आवश्यकता है। फलतः जो विद्यार्थी की मनोसामाजिक स्थिति सुधारने में उपयोगी होगी।

किशोरावस्था

माध्यमिक स्तर की *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा प्रारूप 2023* के अनुसार किशोरावस्था की अवधि प्रारंभिक वयस्कता तक संक्रमणकालीन होती है। प्रायः बच्चे 12 वर्ष की आयु में किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं। इस अवधि में तेज़ी से शारीरिक परिवर्तन, ऊँचाई एवं भार में वृद्धि, यौवन का विकास, पहचान का विकास और स्वतंत्रता की खोज बच्चों में केंद्रीय विषय होता है। इस दौरान लड़कों की तुलना में लड़कियों में यौवन लगभग दो वर्ष पहले ही आ जाता है और इसके साथ ही, प्रजनन सक्षमता का भी विकास हो जाता है। इस अवस्था में किशोर अपनी बढ़ती क्षमता के साथ विविध तथा गंभीर रूप से सोचने लग जाता है। साथ ही, विचारों और तार्किक विश्लेषण से योजना बनाने, समस्याओं को हल करने एवं व्यवस्थित रूप से समस्या समाधान में योग्य हो जाते हैं। वे मानसिक रूप से अपने कार्यों को देखने तथा मूल्यांकन करने में सक्षम होते हैं। इस दौरान वे खुद को अलग महसूस करते हैं। उनकी सोच आत्म-केंद्रित होती है और निर्णय भी तर्क के साथ लेने लगते हैं।

किशोरावस्था में, भाषा परिवर्तन में शब्दों का उपयोग अधिक प्रभावी रूप से किया जाता है। किशोर प्रायः शब्दजाल का उपयोग करते हुए, अपने साथियों के साथ एक प्रकार की विशेष बोली का प्रयोग करने लगता है। कई शोध अध्ययनों में पाया गया कि लड़कों एवं लड़कियों, दोनों के लिए प्रारंभिक अवस्था में आत्मसम्मान महत्वपूर्ण होता है अर्थात आत्मसम्मान उन धारणाओं को दर्शाता है, जो हमेशा वास्तविकता से मेल नहीं खाती हैं, लेकिन लड़कियों के लिए आत्मसम्मान में अधिक गिरावट आती है।

इस अवस्था में उनमें साथियों के प्रभाव से महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है। पहचान बनाना, विद्रोह करना, अधिकार जताना, संघर्ष करना, आक्रामकता आदि सामाजिक-भावनात्मक विकास के अंतर्गत आता है। इसमें परिवार का महत्वपूर्ण प्रभाव संघर्षों को नियंत्रित करने पर पड़ता है। इस समय, किशोर का समूहों में शामिल होना तथा उसकी पुष्टि करना ही उसकी उच्च प्राथमिकता होती है। किशोरावस्था में बच्चे सवाल करते समय अपने स्वयं के नैतिक मूल्यों को विकसित करना शुरू कर देते हैं तथा उनके माता-पिता या समाज द्वारा निर्धारित लोगों का विश्लेषण करना सीखते हैं। वे नियमों को महत्व देते हैं, लेकिन आपस में बातचीत भी करते हैं। जैसे-जैसे वे अमूर्त तर्क क्षमता विकसित करते हैं, तो वे समाज के प्रति रुचि प्रदर्शित करते हैं। अंत में, किशोरों की सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक विकास के लिए शारीरिक गतिविधियों में भागीदारी महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा मानसिक स्वास्थ्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रमुख उद्देश्य भारत की विद्यालयी शिक्षा की प्रणाली में बदलाव लाना है। विद्यालयी शिक्षा एक बच्चे के जीवन की आधारशिला होती है। इसके संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा की संरचना 10+2 प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 प्रणाली कर दिया गया है। इसमें पाँच वर्ष की मूलभूत शिक्षा, तीन वर्ष की प्रारंभिक शिक्षा, तीन वर्ष की मिडिल शिक्षा एवं चार वर्ष की माध्यमिक स्तर की शिक्षा है। इस नीति में संस्कृति की अच्छी नींव, निष्पक्षता तथा समावेशन, बहुभाषावाद (बहुभाषिकता), अनुभवात्मक शिक्षा, विषयवस्तु के बोझ को कम करने, कला एवं खेल के एकीकरण आदि पर ध्यान केंद्रित किया गया है। विद्यालय में पढ़ाने का तरीका ऐसा होगा, जिससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास हो सकेगा।

स्वास्थ्य शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिकता पर आधारित होता है, जो मनुष्य के सोचने, समझने, महसूस करने तथा कार्य करने की क्षमता को प्रभावित करता है। मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य एक-दूसरे से अलग नहीं बल्कि एक-दूसरे के पूरक एवं प्रेरक हैं। सामान्य रूप में देखा जाए तो शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग मस्तिष्क है, जो मनुष्य के सभी व्यवहारों एवं कार्यों का निर्धारण करता है। शारीरिक रूप से हम कितना भी स्वस्थ क्यों न हों, जब तक हमारा मन स्वस्थ रूप से संचालित नहीं रहता है, तब तक हम किसी भी कार्य को ठीक से नहीं कर पाते हैं। ऐसे में हमें सामाजिक और भौतिक परिस्थितियों के विभिन्न आयामों पर समायोजन की समस्या से गुज़रना पड़ता है। जो व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ है, उनका समायोजन सहज रूप से हो जाता है। मानसिक स्वास्थ्य में भावना, संवेग, संज्ञान व सामाजिकता की प्रमुखता होती है, जिससे समायोजन के साथ-साथ अन्य सभी व्यवहारों का निर्धारण सम्मिलित है। अतः मानसिक स्वास्थ्य मनुष्य की संज्ञानात्मक क्रियाओं यथा महसूस करने, समझने, सोचने तथा निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बताया गया है कि शिक्षक, बच्चे के बौद्धिक ही नहीं बल्कि भावनात्मक एवं क्रियात्मक पहलू, जैसे— मिलजुल कर कार्य करना, पूछताछ आधारित सीखना, प्रश्नोत्तरी, रोल प्ले, वाद-विवाद, चित्रकारी, गाना-बजाना, मूल्य एवं नैतिकता जैसी खूबियों को जानकर उनमें विद्यार्थियों की भागीदारी को बढ़ाएँगे। इससे शिक्षक बच्चों की रचनात्मक, अनुभवात्मक, प्रायोगिक, खोज-शक्ति, तार्किकता जैसी खूबियों की जाँच-परख करेंगे। इक्कीसवीं सदी के अनुसार बच्चों का 360 डिग्री विकास करने हेतु शिक्षक स्वयं को तैयार कर सकेंगे तथा उनके पास कक्षा-कक्ष के बाहर भी बच्चों की मदद करने के अवसर होंगे।

शिक्षक की भूमिका परामर्शदाता की भी होगी चाहे वह विद्यार्थियों हेतु विषय, हुनर (कौशल) के चयन में मदद करने की हो या फिर बोर्ड परीक्षा के भय, डर व दबाव से मुक्त करने की। साथ ही, बच्चों को सिखाने के लिए शिक्षकों द्वारा रचनात्मक, पीयर ट्यूटरिंग, परियोजना, खोज, परिवेशीय निरीक्षण, खेल गतिविधि, अनुभवात्मक, सहयोगात्मक एवं

बहुस्तरीय शिक्षण जैसी शिक्षण विधियों के प्रयोग पर बल दिया जाएगा।

मानव के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्व

शिक्षा मानव की योग्यताओं एवं क्षमताओं को उजागर करने का कार्य करती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्तियों को बेहतर तथा जागरूक बनाया जा सकता है। यह भावी पीढ़ी में दक्षता एवं मूल्यों को सिखाने का कार्य करती है। इसलिए यह ज़रूरी हो जाता है कि देश के नागरिकों को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए, जिससे वह हमारे समाज व राष्ट्र की परंपरा एवं संस्कृति को ऊँचा उठाकर वैश्विक विचारधारा के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें और उसे समाज में साझा भी कर सकें।

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में अपनाए गए 'सतत विकास एजेंडा 2030' के लक्ष्य 4 में वैश्विक स्तर पर 2030 तक 'सभी के लिए समावेशी तथा समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा निर्धारित करने और जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने' की बात कही गई है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भारत की संस्कृति एवं परंपरा से युक्त इन्हीं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर 'सबके लिए शिक्षा' की आसान पहुँच, गुणवत्ता, वहनीयता एवं जवाबदेही के बुनियादी स्तंभों को लागू किया गया है। यह नीति विद्यार्थियों में इक्कीसवीं सदी के अनुरूप रचनात्मकता, प्रायोगिक अनुभव, जीवन कौशल, डिजिटल कौशल, समस्या-समाधान कौशल एवं अवधारणात्मक समझ को विकसित करने पर बल देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भावनात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों का विकास करने वाली पाठ्य सहगामी गतिविधियों (कला-शिल्प, खेलकूद, संगीत, कौशल, शारीरिक शिक्षा, समूह कार्य, सृजनशीलता, नेतृत्व, परिश्रम करने की इच्छा एवं प्रेरणा आदि) को सीखने की प्रक्रिया से जोड़ने की बात कही गई है।

विद्यार्थियों में भावनात्मक एवं सौंदर्यबोध का विकास करने के लिए उन्हें रुचिकर कार्यों में लगाएँ, जैसे— चित्रकारी, पेंटिंग, संगीत, खेल, बागवानी, भोजन पकाना, प्रेरक पुस्तकें पढ़ना, आध्यात्मिक पुस्तकें एवं महापुरुषों की प्रेरणादायी जीवनी पढ़ना, कहानियाँ पढ़ना, पढ़ने-लिखने की आदत विकसित करना। कहानियाँ प्रेरक एवं साहसिक होती हैं तथा बच्चों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। कहानियों से बच्चों में प्रेम, सौहार्द, उदारता, संयम, शांति, तार्किकता, सकारात्मक सोच एवं चरित्र-निर्माण जैसे अच्छे गुणों का विकास किया जा सकता है।

विद्यार्थियों में कहानियों के द्वारा संवाद-कौशल, संवेदनशीलता, बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति प्रेम, पर्यावरण के प्रति सजगता, सद्भाव, समय-नियोजन, मानवीयता तथा राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम जैसे अनेक गुणों एवं भावों का विकास किया जा सकता है।

परामर्शदाताओं तथा मनोवैज्ञानिकों की अहम भूमिका

विद्यार्थियों के जीवन में असफलता, असंतोष, कुंठा आदि को परामर्शदाता के सहयोग से दूर करने का प्रयास किया जा सकता है। इसलिए विद्यार्थियों के जीवन में परामर्शदाता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यह परामर्शदाता उनके माता-पिता, शिक्षक, प्रशिक्षित परामर्शदाता या कोई अन्य व्यक्ति हो सकता है।

विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना परमावश्यक है। इसमें परामर्शदाता, शिक्षक तथा परिवार के सदस्य आपस में अंतर्क्रिया कर विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य के अंतर्गत दुःख, भय, डर, अकेलेपन, चिंता, अनिश्चितता, निराशा, दबाव, तनाव, कुंठा, क्रोध, दुश्चिंता, अवसाद आदि से मुक्त करने के लिए व्यक्ति को परामर्श दिया जाता है। मानसिक स्वास्थ्य, तनाव से ग्रसित तथा मनो-सामाजिक सरोकार से संबंधित प्रश्नों के लिए राष्ट्रीय मानसिक जाँच एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान (निम्हांस), बेंगलुरु की ओर से राष्ट्रीय टोल-फ्री हेल्पलाइन (08046110007) पर संपर्क कर सकते हैं।

मनोदर्पण का योगदान

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की पहल पर मनोदर्पण के तहत विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की देशव्यापी पहुँच के लिए एक राष्ट्रीय टोल-फ्री हेल्पलाइन (8448440632) स्थापित की गई है, जो उन्हें उनके मानसिक स्वास्थ्य, अकादमिक, जीविका तथा मनो-सामाजिक मुद्दों को दूर करने के लिए फ़ोन पर परामर्श प्रदान कर सहायता कर रही है। इस तरह की सेवाओं का उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने जीवन को प्रभावी ढंग से तथा उत्पादक रूप से जीना सुनिश्चित करना है। जीवन कौशल की मदद से समय के साथ लचीला बनना है, जिनमें चुनौतियों एवं बाधाओं का सामना करना भी सम्मिलित है। अत: मनोदर्पण एक अनोखी पहल है जो मन की बात एक परामर्शदाता के साथ, आपको हर्ष और उल्लास दे सकती है।

विद्यार्थियों (कक्षा 6 से 12) के लिए विभिन्न क्षेत्रों एवं विषयों पर सोमवार से शुक्रवार (शाम 5:00–5:30 बजे) तक परामर्शदाताओं के साथ लाइव इंटरैक्टिव सत्र—'सहयोग'—आयोजित किए जाते हैं। 'लाइव इंटरैक्टिव वेबिनार'—'परिचर्चा'—प्रत्येक शुक्रवार को दोपहर 2:30 से 4:00 बजे तक आयोजित की जाती है। ये सत्र 'पीएम ई-विद्या चैनल' पर प्रसारित होते हैं तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) के आधिकारिक यूट्यूब चैनल पर भी उपलब्ध हैं। इसमें विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों की विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण संबंधी चिंताओं को संबोधित किया जाता है।

'टेली-मानस' की पहल से विद्यार्थियों को लाभ

केंद्र सरकार ने मानसिक स्वास्थ्य संकट को स्वीकार करते हुए, देशव्यापी एक डिजिटल मानसिक स्वास्थ्य नेटवर्क स्थापित किया है। 'टेली-मानस' का उद्देश्य पूरे देश में, विशेषकर दुर्गम, सुदूर, सीमावर्ती एवं सुविधाओं से वंचित क्षेत्रों के लोगों को 24 घंटे नि:शुल्क टेली-मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। आम आदमी टेली-मानस से संबंधित सूचना 24 घंटे मोबाइल परामर्श द्वारा टोल-फ्री नंबर 14416 से प्राप्त कर सकते हैं।

विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण— रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा एक सर्वेक्षण

विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण विद्यार्थियों की विभिन्न पहलुओं पर

मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण से संबंधित धारणा का पता लगाने के लिए एक सर्वेक्षण किया गया था। यह सर्वेक्षण राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा गूगल फ़ॉर्म के माध्यम से आयोजित किया गया था, जिसमें कक्षा 6 से 8 (मध्य चरण) तथा कक्षा 9 से 12 (माध्यमिक चरण) के जेंडर आधारित विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया था। जनवरी से मार्च 2022 के बीच देश के 28 राज्यों एवं 8 केंद्र शासित प्रदेशों से कुल 3,79,842 विद्यार्थियों ने सर्वेक्षण में भाग लिया। इस सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों से ज्ञात हुआ कि 81 प्रतिशत विद्यार्थियों में पढ़ाई, परीक्षा तथा परिणाम उनकी चिंता का प्रमुख कारण हैं। 29 प्रतिशत विद्यार्थियों में एकाग्रता का अभाव है। 33 प्रतिशत विद्यार्थी अधिकांश समय पढ़ाई के दबाव में रहते हैं। 45 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी विद्यालय में अपनी छवि को लेकर चिंतित थे। 51 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें ऑनलाइन के माध्यम से सीखने में परेशानी होती है, जबकि 28 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी ऐसे हैं, जो प्रश्न पूछने से झिझकते हैं।

इस सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि विद्यार्थी यह अनुभव करते हैं कि वे अपने जीवन में अच्छा कर सकते हैं। इसके साथ ही, विद्यार्थी विद्यालयी परिवेश से संतुष्ट हैं। अधिकांश विद्यार्थी आत्मविश्वासी हैं तथा सामाजिक समर्थन प्राप्त करने में संकोच नहीं करते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य की सकारात्मक स्थिति के कारण है। इस सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ कि विद्यार्थी प्रायः प्रसन्नचित्त रहते हैं। विद्यार्थियों द्वारा यह भी बताया गया कि समय-समय पर बदलते मिज़ाज (मूड स्विंग्स) के साथ-साथ पढ़ाई, परीक्षाओं एवं परिणामों के बारे में भी वे चिंतित रहते हैं। साथ ही, नेशनल सेंटर फ़ॉर बायोटेक्नोलॉजी इनफार्मेशन द्वारा किए गए एक शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि भारत में प्रत्येक 4 वर्ष में 13 से 15 वर्ष की आयु के बच्चे अवसाद ग्रस्त हैं, जो एक गंभीर समस्या है।

शिक्षा में सृजनात्मकता

शिक्षा एवं सृजनात्मकता का एक-दूसरे से अन्योन्याश्रित संबंध है। सृजनात्मकता के बिना शिक्षा अर्थहीन होगी। शिक्षा की सार्थकता के लिए उसका रचनात्मक होना आवश्यक है, किंतु जब हम शिक्षा-व्यवस्था में सृजनात्मकता तलाशते हैं, तो विफलता ही हाथ लगती है। विषयों को रटना तथा परीक्षा में उसे पुनरुत्पादित कर देना ही, शिक्षा का लक्ष्य बन चुका है, जबकि रटने से अधिक विषयों की समझ, वैचारिक स्पष्टता पर अधिक ज़ोर होना चाहिए। हमारी शिक्षा व्यवस्था में सृजनात्मकता की कमी है।

विद्यार्थी जीवन में तनाव प्रबंधन

परीक्षा संबंधी तनाव होना स्वाभाविक है, इस अवस्था से अधिकतर विद्यार्थी गुज़रते हैं। यदि विद्यार्थियों में यह तनाव अधिक होता है, तो विद्यार्थी के निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। परीक्षा से पहले या परीक्षा के समय होने वाले तनाव को परीक्षा की चिंता कहा जाता है। परीक्षा से पहले तनाव होना आम बात है। विद्यालय में प्रतिस्पर्धा एवं निष्पादन के प्रति चिंता, अपेक्षाओं एवं लक्ष्यों के कारण भी तनाव हो सकता है। कई अन्य कारणों से भी मन में उत्पन्न भय, अधिक चिंता, तनाव तथा नकारात्मक विचार आते हैं। तनाव दो प्रकार

के होते हैं—'यूस्ट्रेस', सकारात्मक तनाव होता है। सकारात्मक तनाव, नकारात्मक तनाव की तुलना में कम स्तर का होता है, जो कार्य करने की तैयारी करने तथा कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है, जबकि नकारात्मक तनाव, तनाव की उच्च अवस्था है, जो हमारे दिन-प्रतिदिन के कार्यों और निष्पादन की क्षमता को बाधित करता है।

परीक्षा की चिंता के कुछ उदाहरण हैं, जैसे— एक समय में विद्यार्थी कुछ भी अनुभव नहीं करता है और वह कुछ भी याद नहीं रख पाता है। परीक्षा के समय ठंड लगना, अपने उत्तरों पर संदेह करना, हृदय गति में तीव्र वृद्धि, तेज़ साँस लेना, अत्यधिक पसीना आना, मतली महसूस करना आदि कुछ भावनात्मक लक्षण हैं। परीक्षा संबंधी तनाव में निराश तथा असहाय महसूस करना, आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान में कमी का अनुभव करना, नकारात्मक परीक्षा परिणाम या असफलता पर चिंता करना शामिल है।

कई कारणों द्वारा विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से ग्रस्त होते हैं। इनमें कुछ नकारात्मक परीक्षा अनुभव होते हैं, जो अत्यधिक तनाव का कारण बनते हैं। यदि किसी विद्यार्थी का अतीत में खराब अनुभव होता है, तो यह विद्यार्थी में नकारात्मक भावना पैदा कर सकता है।

परीक्षा में असफल होने का डर एक अन्य महत्वपूर्ण कारण हो सकता है। असफल होने से डरने वाले विद्यार्थियों को परीक्षा का तनाव होने की अधिक संभावना होती है। अन्य सहपाठियों के साथ तीव्र प्रतिस्पर्धा वाले विद्यार्थी भी अत्यधिक तनाव से ग्रस्त हो सकते हैं। माता-पिता के दबाव व उनकी अपेक्षाओं से भी विद्यार्थियों को परीक्षा का तनाव हो सकता है। यह विद्यार्थियों के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। परीक्षा की अपर्याप्त तैयारी से भी तनाव हो सकता है, जो विद्यार्थी अच्छी तैयारी नहीं कर पाते हैं, वे परीक्षा के समय एवं परीक्षा से पहले तनाव का सामना करते हैं।

जब विद्यार्थियों में नकारात्मक तनाव अधिक बढ़ जाता है, तब उसका प्रबंधन तथा सामना करना बहुत आवश्यक हो जाता है। तनाव का उपचार करना तथा उसे दूर करने के लिए भावनात्मक रूप से अधिक जागरूक होना आवश्यक है और सामाजिक-भावनात्मक कौशल को प्रयुक्त करना ज़रूरी है। सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा द्वारा इस स्थिति से मुक्त हुआ जा सकता है। सामाजिक-भावनात्मक कौशल विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया में विकास और तनाव को प्रबंधित करने की क्षमता को विकसित कर सकते हैं। यदि विद्यार्थी सामाजिक-भावनात्मक कौशलों से सीखते हैं, तो अपने जीवन और आसपास के लोगों के लिए एक सकारात्मक योगदानकर्ता के रूप में अपने जीवन कौशल विकसित करने में सक्षम हो पाते हैं।

परीक्षा के तनाव को प्रबंधित करने की संभावित युक्तियाँ

- **समय प्रबंधन**— समय का सदुपयोग करना एवं समय के साथ-साथ गतिविधियों को उनके महत्व के अनुसार विभाजित करना, प्रभावी समय प्रबंधन के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए, एक समय-सारणी बनाने तथा आवश्यकतानुसार विषयों को उचित समय देने से, सभी विषयों की उचित तैयारी करने का समय मिल सकता

है, जिससे विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

- **स्वस्थ दैनिक दिनचर्या**— अच्छी आदतों को दिनचर्या में शामिल करना, पौष्टिक भोजन करना, नियमित व्यायाम के साथ अपने शरीर की देखभाल करना, अच्छी नींद लेना तथा अन्य सकारात्मक व्यवहारों से तन-मन स्वस्थ रहता है। यह प्रयास प्रभावी रूप से तनाव को दूर करने में सहायता करते हैं।
- **परीक्षा से पहले तैयारी करना**— उचित समय प्रबंधन के साथ, एक विद्यार्थी पहले से परीक्षा की तैयारी कर सकता है। पहले से तैयारी करने से दोहराने के लिए अधिक समय मिलता है। विद्यार्थी जितना अधिक पुनरीक्षण करते हैं, उतना ही अधिक इसे याद रख सकते हैं तथा समझ सकते हैं, जो परीक्षा में विद्यार्थियों के निष्पादन को बेहतर कर सकता है।
- **परिणामों पर नहीं, प्रयासों पर अधिक ध्यान देना**— कभी-कभी अवास्तविक तथा अत्यधिक अपेक्षाओं के कारण विद्यार्थी परिणामों के बारे में अधिक चिंतित रहते हैं, जिससे उनमें अधिक तनाव व चिंता उत्पन्न होती है। यह उन्हें विचलित करता है और उनका ध्यान भटकाता है, इसलिए विद्यार्थियों को निरंतर सीखने के प्रयासों पर अधिक ध्यान देना ज़रूरी है।
- **नकारात्मक विचारों का प्रबंधन**— जब भी विद्यार्थियों के मन में नकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं। तब उन्हें सकारात्मक प्रतिज्ञान का उपयोग कर अपनी क्षमताओं के विकास पर अधिक ध्यान देना चाहिए। यह प्रयास परीक्षा के तनाव एवं चिंता को कम करती हैं। एक शिक्षक एवं माता-पिता (अभिभावक) के रूप में, विद्यार्थियों की ज़रूरतों को समझना एवं उन्हें उनकी क्षमताओं के प्रति जागरूक करना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत सरकार ने मनोदर्पण, टेली-मानस एवं राष्ट्रीय टेली-मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था की नींव रखी है। विशेषज्ञों के अनुसार, आने वाले समय में भारत में इस क्षेत्र में अधिक विकास होगा, क्योंकि इसके लिए सतत रूप से जागरूकता कार्यक्रम चलाएँ जा रहे हैं। इसमें आम लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है। उपरोक्त तथ्यों, साक्ष्यों तथा प्रयासों से यह स्पष्ट होता है कि मनोदर्पण, टेली-मानस और राष्ट्रीय टेली-मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम की अनोखी पहल से भारत में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, बाधाओं आदि को कम करते हुए सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। मानसिक स्वास्थ्य के पहलुओं को उजागर कर उसके निदान के लिए प्रयास किए जा रहे हैं, उससे आगामी समय में आम लोगों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होगा। अंततः यदि विद्यार्थियों की भावनाओं को समझें, तो उनकी गतिविधियों को समझना सरल होगा। साथ ही, अपने दोस्तों से मिलना उनके साथ बातचीत कर समय बिताना उनके जीवन का सुखद अनुभव है। इससे विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा। अभिभावकों द्वारा बच्चों की उचित देखभाल, परस्पर प्रेमभाव भावनात्मक

रूप से उनमें विश्वास उत्पन्न करेगा तथा मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। मानसिक रूप से स्वस्थ होने पर विद्यार्थी भारतीय मूल्यों तथा बुनियादी संवैधानिक मूल्यों (सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, शांति, त्याग, सहिष्णुता, देशभक्ति, लोकतंत्र, बड़ों का सम्मान, जेंडर आधारित संवेदनशीलता, समानता, विश्वबंधुत्ता आदि) के बारे में विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर उचित तर्क तथा निर्णय कर सकेंगे।

संदर्भ

चौधरी, कृष्ण चंद्र. 2018. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल, विकास और शिक्षा*. बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना.

——. 2021. कोविड-19 और मनोस्वास्थ्य. *योजना*. पृष्ठ संख्या 28–31. प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

प्रसाद, नगीना और मुहम्मद सुलेमान. 1984. *असामान्य मनोविज्ञान*. भारती भवन. पटना.

मेंटल हेल्थ इन द टाइम्स ऑफ़ इंडिया कोविड-19 पेंडेमिक. (अभिगम 6.9.2022) निम्हांस से प्रकाशित रिपोर्ट.

भाटिया, मनजीत सिंह. 2004. *मनोरोग— गलत धारणाएँ और सही पहलू*. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली.

https:// www.mohfw.gov.in 15.3.2023 को देखा गया।

https://manodarpan.education.gov.in 21.3.2023 को देखा गया।

https://ncert.nic.in 17.3.2023 को देखा गया।

https://nimhans.ac.in 26.3.2023 को देखा गया।

https://pib.gov.in 29.3.2023 को देखा गया।

https://www.education.gov.in 21.3.2023 को देखा गया।

जीवनशैली मापनी का निर्माण एवं मानकीकरण

अशोक कुमार शर्मा*
महेश कुमार मुछाल**

किसी भी शोध अध्ययन का मूल आधार शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या के समाधान के लिए तथ्यों, आँकड़ों या वास्तविक क्षेत्र आधारित सूचना या जानकारी प्राप्त करना होता है। इसके लिए शोधार्थी को उपयुक्त शोध उपकरणों का चयन या निर्माण कर वस्तुनिष्ठ आँकड़े व जानकारी संकलित करनी होती है। वह संकलित आँकड़ों व जानकारी का गुणवत्तापरक या उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधि का चयन कर विश्लेषण करता है, जिसके आधार पर वह संभावित निष्कर्ष या समाधान ज्ञात करता है। इस प्रकार शोध अध्ययन में शोध उपकरण किसी भी शोध को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। इन्हीं शोध उपकरणों में एक उपकरण जीवनशैली मापनी है, जिसके द्वारा किसी भी व्यक्ति की रुचियों, विचारों, व्यवहारों तथा व्यवहार संबंधी उन्मुखताओं पर पड़ने वाले नकारात्मक और सकारात्मक प्रभाव का मापन किया जा सकता है। शोधार्थी द्वारा जीवनशैली मापनी का निर्माण करते समय सर्वप्रथम परीक्षण के निर्माण हेतु आवश्यक अध्ययन सामग्री विभिन्न पुस्तकों, प्रायोगिक कार्यों के अवलोकन एवं संबंधित साहित्य का गहराई से अध्ययन कर प्राप्त की गई। इसके बाद जीवनशैली मापनी का प्रारूप तैयार किया गया, जिसमें 105 कथन थे। इसके बाद मापनी के प्रत्येक कथन का पद-विश्लेषण किया गया। पद-विश्लेषण के पश्चात मापनी के अंतिम प्रारूप में 80 कथन चयनित हुए। जीवनशैली मापनी की आमुख तथा विषयवस्तु वैधता का निर्धारण शिक्षा विशेषज्ञों तथा योग विशेषज्ञों से विचार-विमर्श कर किया गया। इस मापनी का विश्वसनीयता गुणांक अर्द्ध-विटापन विधि (Split-Half Method) तथा परीक्षण-पुनर्परीक्षण विधि (Test-Retest Method) द्वारा ज्ञात किया गया, जो क्रमशः 0.86 तथा 0.88 प्राप्त हुआ। अंत में मापनी के परिणामों का विवेचन जेड-स्कोर मानक द्वारा किया गया। इस प्रकार वैज्ञानिक विधियों के आधार पर निर्मित जीवनशैली मापनी का उपयोग विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों आदि के द्वारा जीवनशैली का मापन करने के लिए किया जाता सकता है।

जीवन एवं शैली से मिलकर जीवनशैली शब्द बना है। जीवन शब्द का तात्पर्य— मनुष्य जाति के जन्म और मृत्यु के बीच का समय या जीवित रहने का भाव से है तथा शैली शब्द का अर्थ— ढंग या तरीका है। अतः मनुष्य की जीवनशैली से तात्पर्य— मनुष्य के जीवन जीने का ढंग या तरीका होता है अर्थात हम जीवन को कैसे जीते हैं, वह हमारी जीवनशैली है। हमारे जीवन जीने के विभिन्न तरीके हो सकते हैं, परंतु प्रत्येक तरीके में चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार सम्मिलित होते हैं। किसी भी व्यक्ति की जीवनशैली

* *शोधार्थी*, शिक्षक प्रशिक्षण विभाग, दिगंबर जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़ौत, बागपत, उत्तर प्रदेश 250611
** *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, शिक्षक प्रशिक्षण विभाग, दिगंबर जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़ौत, बागपत, उत्तर प्रदेश 25061

उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों, परंपराओं एवं मान्यताओं तथा उनकी शिक्षा के साथ निर्मित होती है। आज वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण तथा भौतिक सुख-सुविधाओं की उपलब्धता के कारण व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा का स्तर आदि जैसे कारणों से उसकी सोच और जीवनशैली में तेज़ी से बदलाव आ रहा है। जीवनशैली का हमारे स्वास्थ्य पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एक स्वस्थ जीवनशैली लंबे समय तक खुशहाल रख सकती है। यदि हमारी जीवनशैली स्वस्थ होगी तो हम—

- तनाव मुक्त रहेंगे।
- सकारात्मक सोचेंगे।
- शारीरिक रूप से फिट रहेंगे।
- हमेशा सक्रिय रहेंगे।

अतः मानविकी के अंतर्गत आने वाले विषयों में व्यक्ति की जीवनशैली पर शोध अध्ययन करना हो, तो वैज्ञानिक ढंग से विकसित शोध उपकरण या जीवनशैली मापनी का होना आवश्यक है। यह मापनी किसी भी व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पक्षों का मापन करने में सक्षम हो। अतः शोधार्थी द्वारा अपने शोध अध्ययन के लिए जीवनशैली मापनी का निर्माण किया गया है।

विद्यालयी एवं अध्यापक शिक्षा में जीवनशैली मापनी की आवश्यकता

जीवनशैली व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। साथ ही, स्वस्थ जीवनशैली से मनुष्य का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है, लेकिन आधुनिक युग में मनुष्य को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों के कारण उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य व कल्याण पर विपरीत प्रभाव पड़ने लगता है अर्थात उनकी जीवनशैली में बदलाव आने लगता है। इसलिए मनुष्य की जीवनशैली के घटकों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए शोध उपकरण का होना आवश्यक है यह उपकरण मनुष्य के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास करने में उचित प्रकार से मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान कर सके, जिससे वह व्यक्ति हमेशा क्रियाशील एवं ऊर्जावान बना रहे। वर्तमान वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी युग में व्यक्ति को सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हो रही हैं, परंतु उतनी ही तेज़ी से उसके लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। आज व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वयं को अस्वस्थ महसूस कर रहा है, जिसके कारण उसकी कार्यशैली एवं सोच में परिवर्तन आ गया है। इस परिवर्तन के कारण व्यक्ति की जीवनशैली में भी परिवर्तन आ गया है। यह परिवर्तन विद्यार्थियों एवं अध्यापकों, दोनों के लिए अहितकारी सिद्ध हो रहा है। जीवनशैली के अस्त-व्यस्त होने के कारण विद्यार्थी ठीक प्रकार से अध्ययन नहीं कर पा रहे हैं तथा अध्यापक भी उचित रूप से अध्यापन करने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे में व्यक्तियों की जीवनशैली का मापन करने के लिए जीवनशैली मापनी की आवश्यकता प्रतिपादित होती है। शोधार्थी द्वारा विकसित इस जीवनशैली मापनी द्वारा जीवन के आठ क्षेत्रों— आहार संचेतना, तनाव प्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, व्यक्तिगत स्वच्छता, दिनचर्या,कर्तव्यों के प्रति समर्पण, स्वास्थ्य जागरूकता तथा मनोरंजन, वेशभूषा एवं

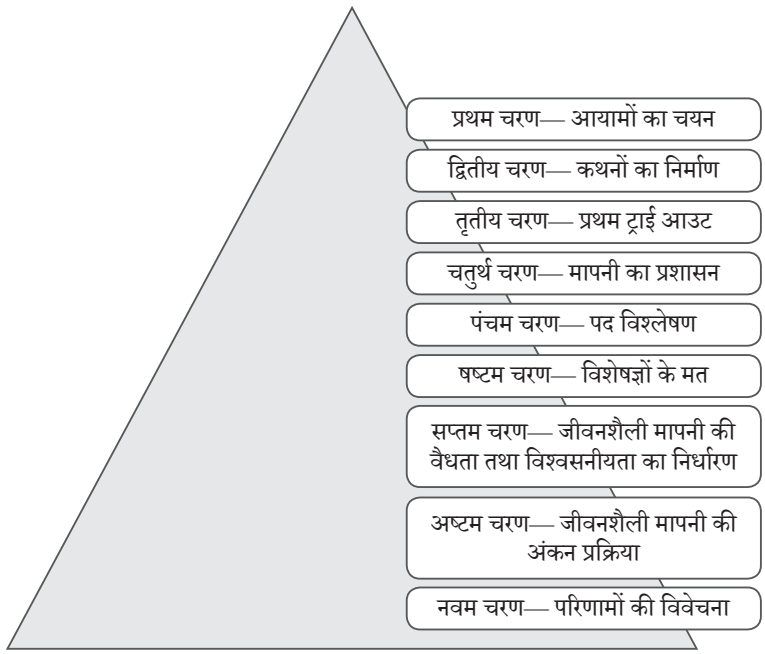

चित्र 1— जीवनशैली मापनी का निर्माण एवं मानकीकरण प्रक्रिया के चरण

शौक के प्रति रुझान का मापन किया जा सकेगा। ये आठ आयाम व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का अध्ययन करने में उपयोगी सिद्ध होंगे। इन आयामों के द्वारा किसी भी विद्यार्थी, अध्यापक तथा अन्य व्यक्तियों की जीवनशैली का मापन करके यह ज्ञात किया जा सकता है कि व्यक्ति किस प्रकार के जीवनशैली स्तर में आता है। इस प्रकार व्यक्ति अपने जीवनशैली स्तर को जानकर उसमें पर्याप्त सुधार कर सकता है। उस व्यक्ति का यह सुधार ही इस मापनी की सार्थकता को सिद्ध करेगा।

शोधार्थी द्वारा जीवनशैली मापनी के निर्माण एवं मानकीकरण की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरणों (कृपया चित्र 1 देंखें) का अनुसरण किया गया।

प्रथम चरण— आयामों का चयन

शोधार्थी द्वारा जीवनशैली, स्वास्थ्य, दिनचर्या आदि पर आधारित विभिन्न पुस्तकों, प्रायोगिक कार्यों के अवलोकन एवं संबंधित साहित्य के अवलोकन के आधार पर जीवनशैली मापनी हेतु अग्रलिखित आयामों का चयन किया गया—

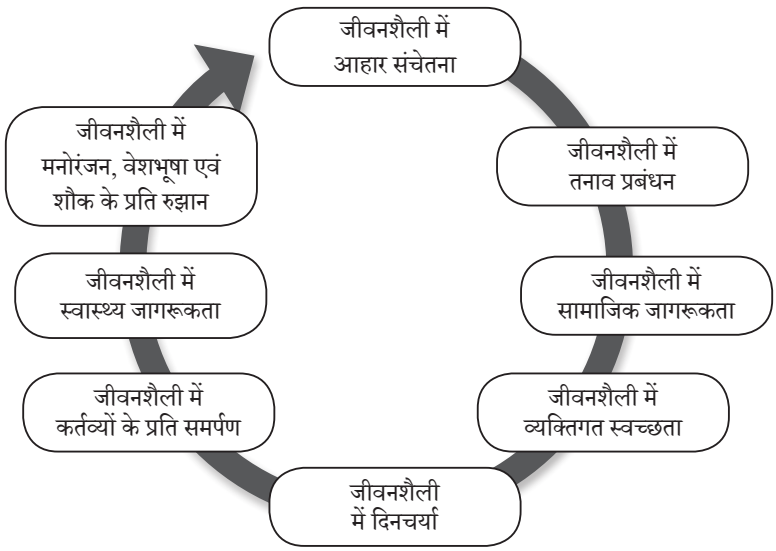

चित्र 2— जीवनशैली मापनी के आयाम

- **जीवनशैली में आहार संचेतना**— मनुष्य की स्वस्थ जीवनशैली के लिए संतुलित आहार का बहुत महत्व है। मनुष्य द्वारा शरीर के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्वों को पूरा करने का ध्यान रखकर संतुलित आहार खाने से स्वस्थ जीवनशैली प्राप्त की जा सकती है।
- **जीवनशैली में तनाव प्रबंधन**— मनुष्य की स्वस्थ जीवनशैली के लिए तनाव प्रबंधन बहुत आवश्यक है। मनुष्य को तनाव उत्पन्न करने वाले कारणों का पता लगाकर उन पर नियंत्रण लगाना चाहिए।
- **जीवनशैली में सामाजिक जागरूकता**— मनुष्य की स्वस्थ जीवनशैली के लिए समाजीकरण भी आवश्यक है। समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से मनुष्य समाज के विभिन्न रीति-रिवाज, व्यवहार, गतिविधियाँ आदि सीखता है।
- **जीवनशैली में व्यक्तिगत स्वच्छता**— व्यक्तिगत स्वच्छता प्रत्येक व्यक्ति की जीवनशैली के लिए आवश्यक आयामों में से एक है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए अपने शरीर की स्वच्छता पर उचित ध्यान देना चाहिए।
- **जीवनशैली में दिनचर्या**— प्रत्येक व्यक्ति की स्वस्थ जीवनशैली का प्रमुख घटक आदर्श दिनचर्या है। आदर्श दिनचर्या में प्रातः उठने से लेकर रात्रि में सोने तक पूरे दिन की दिनचर्या शामिल रहती है।
- **जीवनशैली में कर्तव्यों के प्रति समर्पण**— मनुष्य की जीवनशैली में कर्तव्यों के प्रति समर्पण का अर्थ है— मन, वचन व कर्म से अपने कार्य के प्रति समर्पित हो जाना है। निरंतर कर्तव्य-पालन से ही जीवन में उल्लास, आत्मिक-शांति व यश प्राप्त होता है।

- **जीवनशैली में स्वास्थ्य जागरूकता**— प्रत्येक मनुष्य की स्वस्थ जीवनशैली के लिए स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता अति आवश्यक है। अतः मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए संतुलित भोजन, व्यायाम, योग एवं उचित उपचार पर ध्यान देना चाहिए।
- **जीवनशैली में मनोरंजन, वेशभूषा एवं शौक के प्रति रुझान**— मनुष्य की स्वस्थ जीवनशैली के लिए मनोरंजन एक आवश्यक आयाम है। मनोरंजन के साथ-साथ व्यक्ति को अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं के अनुसार वेशभूषा पर भी ध्यान देना चाहिए। साथ ही, व्यक्ति को अपने जीवन में पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुसार संतुलित शौक अपनाने चाहिए।

द्वितीय चरण— कथनों का निर्माण

शिक्षा से जुड़े विविध प्रकार के साहित्य का अवलोकन एवं अध्ययन करने के पश्चात शोधार्थी द्वारा प्रत्येक आयाम से संबंधित कथनों का निर्माण किया गया।

तृतीय चरण— प्रथम ट्राई आउट

शोधार्थी द्वारा तैयार की गई जीवनशैली मापनी के प्रथम प्रारूप को अपने शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा के विशेषज्ञों तथा योग विशेषज्ञों को जीवनशैली मापनी में सम्मिलित किए गए सभी कथन संबंधित विषय के उद्देश्यों को पूरा कर रहे हैं या नहीं, इसका समीक्षात्मक मूल्यांकन के लिए दिया गया। समीक्षात्मक मूल्यांकन से इस बात का पता लगाया जा सके कि उपरोक्त विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर जीवनशैली मापनी के अस्पष्ट कथनों की भाषा में आवश्यक सुधार किया गया तथा मापनी में कुछ नवीन कथनों को जोड़ा गया तथा कुछ कथनों को हटाया गया। इस प्रकार जीवनशैली मापनी में कुल 119 कथनों को यादृच्छिक प्रकार से व्यवस्थित करके इसका द्वितीय प्रारूप तैयार किया गया, जिसका विवरण तालिका 1 में दिया गया है।

चतुर्थ चरण— मापनी का प्रशासन

शोधार्थी द्वारा निर्मित जीवनशैली मापनी के द्वितीय प्रारूप को माध्यमिक, डिग्री कॉलेज तथा बी.एड. शिक्षा संस्थानों के 300 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया था। इन विद्यार्थियों ने मापनी में दिए गए कथनों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ तालिका 2 के अंतर्गत दी गई विभिन्न श्रेणियों पर दी हैं

तालिका 1— जीवनशैली मापनी के आयाम

क्र. सं.	जीवनशैली मापनी के आयाम	कुल कथन
1.	जीवनशैली में आहार संचेतना	16
2.	जीवनशैली में तनाव प्रबंधन	12
3.	जीवनशैली में सामाजिक जागरूकता	14
4.	जीवनशैली में व्यक्तिगत स्वच्छता	12
5.	जीवनशैली में दिनचर्या	16
6.	जीवनशैली में कर्तव्यों के प्रति समर्पण	15
7.	जीवनशैली में स्वास्थ्य जागरूकता	16
8.	जीवनशैली में मनोरंजन, वेशभूषा एवं शौक के प्रति रुझान	18
	कुल कथनों का योग	119

तालिका 2— जीवनशैली मापनी की श्रेणी

श्रेणी	मापन मूल्य
पूर्णतः सहमत	5
सहमत	4
अनिश्चित	3
असहमत	2
पूर्णतः असहमत	1

पंचम चरण— पद विश्लेषण

300 विद्यार्थियों की जीवनशैली मापनी पर दी गई प्रतिक्रियाओं के आधार पर प्रत्येक पद का विश्लेषण किया गया। इसके लिए शोधार्थी द्वारा सर्वप्रथम सभी विद्यार्थियों के प्राप्तांकों को अवरोही क्रम में रखते हुए सूची बनाई गई। इसके बाद बनाई गई सूची के प्रथम 25 प्रतिशत विद्यार्थियों एवं अंत के 25 प्रतिशत विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का विश्लेषण किया गया। इन प्राप्तांकों के समूह को उच्च समूह एवं निम्न समूह कहा गया। उच्च एवं निम्न समूह के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्य उपकरण के प्रत्येक कथन के लिए 't' मान ज्ञात किया, जो उच्च एवं निम्न समूह में विभेदनशीलता को दर्शाता है। स्वतंत्रता के अंश 52 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.67 और 0.01 स्तर पर 2.66 होता है। उपरोक्त दोनों मानों पर प्रत्येक कथन की जाँच की तथा यह देखा गया कि कौन-कौन से कथन सार्थकता स्तरों पर स्वीकृत या अस्वीकृत होते हैं, जिसे तालिका 3 (पृष्ठ संख्या 35) में दर्शाया गया है।

तालिका 3— जीवनशैली मापनी के प्रत्येक कथन का t मान

कथन संख्या	t मान	विवरण	कथन संख्या	t मान	विवरण	कथन संख्या	t मान	विवरण	कथन संख्या	t मान	विवरण
1.	1.96	स्वीकृत	28.	1.40	अस्वीकृत	55.	4.15	स्वीकृत	82.	1.01	अस्वीकृत
2.	0.85	अस्वीकृत	29.	2.22	स्वीकृत	56.	3.62	स्वीकृत	83.	1.22	अस्वीकृत
3.	1.75	स्वीकृत	30.	1.21	अस्वीकृत	57.	2.55	स्वीकृत	84.	2.22	स्वीकृत
4.	1.06	अस्वीकृत	31.	2.01	स्वीकृत	58.	2.60	स्वीकृत	85.	2.56	स्वीकृत
5.	3.21	स्वीकृत	32.	3.48	स्वीकृत	59.	1.13	अस्वीकृत	86.	4.81	स्वीकृत
6.	1.89	स्वीकृत	33.	0.76	अस्वीकृत	60.	1.09	अस्वीकृत	87.	1.24	अस्वीकृत
7.	2.34	स्वीकृत	34.	2.44	स्वीकृत	61.	3.17	स्वीकृत	88.	4.26	स्वीकृत
8.	2.04	स्वीकृत	35.	3.07	स्वीकृत	62.	2.98	स्वीकृत	89.	2.31	स्वीकृत
9.	1.12	अस्वीकृत	36.	4.25	स्वीकृत	63.	2.68	स्वीकृत	90.	2.66	स्वीकृत
10.	0.98	अस्वीकृत	37.	1.87	स्वीकृत	64.	1.88	स्वीकृत	91.	3.14	स्वीकृत
11.	3.14	स्वीकृत	38.	1.02	अस्वीकृत	65.	1.99	स्वीकृत	92.	1.43	अस्वीकृत
12.	2.50	स्वीकृत	39.	2.66	स्वीकृत	66.	1.15	अस्वीकृत	93.	1.30	अस्वीकृत
13.	2.64	स्वीकृत	40.	2.53	स्वीकृत	67.	2.43	स्वीकृत	94.	2.88	स्वीकृत
14.	2.75	स्वीकृत	41.	1.90	स्वीकृत	68.	2.52	स्वीकृत	95.	2.51	स्वीकृत
15.	1.44	अस्वीकृत	42.	1.76	स्वीकृत	69.	2.09	स्वीकृत	96.	2.59	स्वीकृत
16.	1.52	अस्वीकृत	43.	2.33	स्वीकृत	70.	3.66	स्वीकृत	97.	3.05	स्वीकृत
17.	3.46	स्वीकृत	44.	2.08	स्वीकृत	71.	3.54	स्वीकृत	98.	0.87	अस्वीकृत
18.	4.55	स्वीकृत	45.	3.11	स्वीकृत	72.	1.86	स्वीकृत	99.	2.78	स्वीकृत
19.	3.28	स्वीकृत	46.	1.50	अस्वीकृत	73.	1.98	स्वीकृत	100.	2.69	स्वीकृत
20.	1.98	स्वीकृत	47.	2.56	स्वीकृत	74.	2.45	स्वीकृत	101.	1.35	अस्वीकृत
21.	2.37	स्वीकृत	48.	2.93	स्वीकृत	75.	2.63	स्वीकृत	102.	2.47	स्वीकृत
22.	1.23	अस्वीकृत	49.	2.65	स्वीकृत	76.	1.25	अस्वीकृत	103.	1.19	अस्वीकृत
23.	1.99	स्वीकृत	50.	3.79	स्वीकृत	77.	2.77	स्वीकृत	104.	3.09	स्वीकृत
24.	2.34	स्वीकृत	51.	2.32	स्वीकृत	78.	3.44	स्वीकृत	105.	2.61	स्वीकृत
25.	2.50	स्वीकृत	52.	5.56	स्वीकृत	79.	2.78	स्वीकृत			
26.	1.07	अस्वीकृत	53.	3.94	स्वीकृत	80.	4.30	स्वीकृत			
27.	2.34	स्वीकृत	54.	3.74	स्वीकृत	81.	1.92	स्वीकृत			

प्रत्येक कथन का मान ज्ञात करने के पश्चात जीवनशैली मापनी का अंतिम प्रारूप तैयार किया गया। इस मापनी में उन्ही कथनों को सम्मिलित किया गया, जिनके t-मान df-52 तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर 1.67 से अधिक है। इस प्रकार मापनी के अंतिम प्रारूप में कुल 80 कथन सम्मिलित किए गए।

करें। विशेषज्ञों के मूल्यांकन के पश्चात शोधार्थी द्वारा इस प्रकार मापनी का अंतिम प्रारूप तैयार किया गया, जिसका विवरण तालिका 4 में दिया गया है

सप्तम चरण—जीवनशैली मापनी की वैधता तथा विश्वसनीयता का निर्धारण

जीवनशैली मापनी की वैधता का निर्धारण

तालिका 4— जीवनशैली मापनी के आयाम

क्र. सं.	जीवनशैली मापनी के आयाम	कथनों के प्रकार	कथनों की क्रम संख्या	कुल कथन
1.	जीवनशैली में आहार संचेतना	धनात्मक कथन	1, 4, 6, 10, 11	11
		ऋणात्मक कथन	2, 3, 5, 7, 8, 9	
2.	जीवनशैली में तनाव प्रबंधन	धनात्मक कथन	12, 13, 14, 17, 18	08
		ऋणात्मक कथन	15, 16, 19	
3.	जीवनशैली में सामाजिक जागरूकता	धनात्मक कथन	21, 23, 26, 27, 28, 29	10
		ऋणात्मक कथन	20, 22, 24, 25	
4.	जीवनशैली में व्यक्तिगत स्वच्छता	धनात्मक कथन	32, 33, 34, 25, 36	08
		ऋणात्मक कथन	30, 31, 37	
5.	जीवनशैली में दिनचर्या	धनात्मक कथन	39, 40, 41, 43, 47, 48	13
		ऋणात्मक कथन	38, 42, 44, 45, 46, 49, 50	
6.	जीवनशैली में कर्तव्यों के प्रति समर्पण	धनात्मक कथन	51, 52, 54, 55, 58	09
		ऋणात्मक कथन	53, 56, 57, 59	
7.	जीवनशैली में स्वास्थ्य जागरूकता	धनात्मक कथन	60, 61, 63, 64, 65, 67	09
		ऋणात्मक कथन	62, 66, 68	
8.	जीवनशैली में मनोरंजन, वेशभूषा एवं शौक के प्रति रुझान	धनात्मक कथन	71, 72, 75, 76, 78, 80	12
		ऋणात्मक कथन	69, 70, 73, 74, 77, 79	
			कुल कथनों का योग	80

षष्टम चरण— विशेषज्ञों के मत

शोधार्थी द्वारा निर्मित जीवनशैली मापनी को 15 विशेषज्ञों को इस आशय पत्र के साथ दिया गया कि वे जीवनशैली मापनी के प्रत्येक आयाम से संबंधित कथनों के मूल्य एवं महत्व को देखते हुए मूल्यांकन

शोधार्थी द्वारा जीवनशैली मापनी के ब्लू प्रिंट निर्माण तथा कथनों के लेखन के समय मापनी के उद्देश्यों तथा पाठ्यवस्तु की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए मापनी की प्रत्यक्ष या आमुख वैधता (Face Validity) तथा विषयवस्तु वैधता (Content Validity) का

तालिका 5— जीवनशैली मापनी की विश्वसनीयता का निर्धारण

क्र. सं.	जीवनशैली मापनी के आयाम	अर्द्ध-विटापन विधि द्वारा ज्ञात विश्वसनीयता गुणांक	परीक्षण-पुनर्परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात विश्वसनीयता गुणांक
1.	जीवनशैली में आहार संचेतना	0.86	0.88
2.	जीवनशैली में तनाव प्रबंधन	0.82	0.85
3.	जीवनशैली में सामाजिक जागरूकता	0.85	0.83
4.	जीवनशैली में व्यक्तिगत स्वच्छता	0.90	0.91
5.	जीवनशैली में दिनचर्या	0.88	0.92
6.	जीवनशैली में कर्तव्यों के प्रति समर्पण	0.84	0.86
7.	जीवनशैली में स्वास्थ्य जागरूकता	0.86	0.84
8.	जीवनशैली में मनोरंजन, वेशभूषा एवं शौक के प्रति रुझान	0.88	0.92
	संपूर्ण मापनी का विश्वसनीयता गुणांक	**0.86**	**0.88**

निर्धारण किया गया था इसी कारण शोधार्थी द्वारा मापनी की आमुख वैधता तथा विषयवस्तु वैधता निर्धारित करने के लिए अंतिम रूप से विकसित मापनी जीवनशैली विशेषज्ञों, शिक्षा जगत के विषय विशेषज्ञों तथा योग विशेषज्ञों को दिया गया था। विषय-विशेषज्ञों द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर मापनी के कथनों की भाषा-शैली, शब्द संरचना तथा वाक्य विन्यास में आवश्यक संशोधन किया गया।

जीवनशैली मापनी की विश्वसनीयता का निर्धारण

शोधार्थी द्वारा जीवनशैली मापनी की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए अर्द्ध-विटापन विधि (Split-Half Method) तथा परीक्षण-पुनर्परीक्षण विधि (Test-Retest Method) का प्रयोग किया था। तालिका 5 में मापनी के प्रत्येक आयाम का विश्वसनीयता गुणांक दर्शाया गया है।

तालिका 6— जीवनशैली स्तर

क्र. सं.	जेड स्कोर रेंज	ग्रेड	जीवनशैली स्तर
1.	+2.01 से ऊपर	A	अत्यंत उच्च जीवनशैली
2.	+1.26 से +2.00	B	उच्च जीवनशैली
3.	+0.51 से +1.25	C	औसत जीवनशैली से ऊपर
4.	-0.50 से +0.50	D	औसत जीवनशैली
5.	-0.51 से -1.25	E	औसत जीवनशैली से नीचे
6.	-1.26 से -2.00	F	निम्न जीवनशैली
7.	-2.01 से नीचे	G	अत्यंत निम्न जीवनशैली

अष्टम चरण— जीवनशैली मापनी की अंकन प्रक्रिया

शोधार्थी द्वारा जीवनशैली मापनी में 80 कथनों के लिए अंकन प्रक्रिया तालिका 2 के अनुसार की गई

थी। जिसका विस्तार न्यूनतम अंक 80 से अंक 400 तक है।

नवम चरण— परिणामों की विवेचना

शोधार्थी द्वारा निर्मित जीवनशैली मापनी के सांख्यिकी परिणामों का विवेचन जेड-स्कोर मानक द्वारा ज्ञात किए गए, जिसके मापन का स्तर तालिका 6 में दर्शाया गया है।

जीवनशैली मापनी की उपयोगिता

अच्छी जीवनशैली वाले विद्यार्थियों एवं शिक्षक अधिगम-शिक्षण में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं। अतः स्वस्थ जीवन का मापन करने के लिए यह जीवनशैली मापनी उनके लिए उपयोगी सिद्ध होगी। यह जीवनशैली मापनी शिक्षक, प्रशासक, विद्यार्थी, शोधार्थी, समाज आदि के लिए उपयोगी होगी।

संदर्भ

अब्दुल्लाह, ओमर और अन्य. 2013. द *रिलेशनशिप बिटविन लाइफ़स्टाइल*. जनरल हेल्थ एंड एकेडमिक स्कोर्स ऑफ़ नर्सिंग स्टूडेंट्स. सांइटिफिक एकेडेमिक पब्लिशिंग. 11 सितंबर 2014 को http://article.sapub.org/10.5923.j.phr.20130303.05.html से प्राप्त किया गया.

जादव, एस. पंकज और अन्य. 2014. ए *कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ द लाइफ़स्टाइल अमंग अर्बन एंड रूरल एजुकेटेड अनइमप्लॉइड पीपल*. 6 फरवरी 2016 को http://www.indianjournals.com/ijor.aspx?target=ijor:ajrbem&volume=4&issue=5&article=031 से प्राप्त किया गया.

कुमार, राजेंद्र और मूलजीभाई परमार. 2016. ए रिलेशनशिप अमंग एडजेस्टमेंट, *लाइफ़स्टाइल* एंड लाइफ सैटिस्फैक्शन ऑफ़ एजुकेटेड अनइम्प्लॉइड यूथ. *दि इटंरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंडियन साइकॉलजी*. वर्ष 4, अंक 1. पृष्ठ संख्या 77.

केवट, आर.एन. 2003. जीवन का सहसंबंध और शिक्षकों की पेशेवर संतुष्टि. *प्राथमिक शिक्षक*. वर्ष-30, अंक-9. रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली.

मित्तल, कविता. और यतेंद्र, कुमारी. 2017. वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की जीवनशैली का एक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च*. 3(7). पृष्ठ संख्या 137–141.

मुछाल, एम.के. 2019. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की जीवनशैली का अध्ययन. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. रा.शै.अ.प्र.प., 39(3). नई दिल्ली.

वर्मा, शैलेंद्र कुमार. 2014. औद्योगिकीकरण का ग्रामीण जीवनशैली पर प्रभाव. *स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फ़ॉर इंटरनेशनल स्टडीज*. वर्ष 2(14), सितंबर-अक्तूबर 2014.

वानी, एम. और डी. लक्ष्मी. 2013. ए क्रॉसकल्चरल स्टडी ऑफ़ द लाइफस्टाइल ऑफ़ कॉलेज स्टूडेंट्स. *जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च*. 30(2). तमिलनाडु.

विकास, के. और अन्य. 2015. *लाइफ़स्टाइल*— ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ द आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज स्टूडेंट्स. *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंडियन साइकोलॉजी*. वर्ष 2, अंक 2, पृष्ठ संख्या 45–52.

सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव

शिव नंदन सिंह*
नीतू पटेल**
गौरव राव***

यह शोध पत्र विद्यार्थियों में सोशल मीडिया का उनके शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित है। इसमें शोधार्थियों द्वारा यह ज्ञात करने की कोशिश की गई है कि सोशल मीडिया विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन को किस प्रकार से प्रभावित करता है। यह शोध अध्ययन वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि पर आधारित था। इसमें प्रतिदर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा बरेली (उत्तर प्रदेश) के शहरी क्षेत्र में स्थित 10 विद्यालयों के सत्र 2022–2023 में कक्षा 11 तथा 12 के विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को सोद्देश्य न्यादर्श प्रविधि के द्वारा चयनित किया गया था। आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए स्व-निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में प्रतिशतता का उपयोग किया गया। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि सोशल मीडिया के उपयोग से अधिकतर विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। फिर भी कुछ विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति सही जागरूकता न होने के कारण उनके शैक्षिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ रहा है।

कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी के दौरान एवं पश्चात विश्व स्तर पर शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थियों का शिक्षण-अधिगम सुचारू रूप से चलता रहा। अतः इस आपातकालीन स्थिति में शिक्षण-अधिगम को सुचारू रूप से जारी रखने हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा अकादमिक गतिविधियों को पूरा करने के लिए वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2019–20 विकसित कर सभी हितधारकों, विद्यालयों एवं संस्थाओं के साथ साझा किया गया। इस कैलेंडर में सोशल मीडिया के लगभग 12 मंच, जैसे—व्हाट्सऐप, फेसबुक, ट्विटर, एडमोडो, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, ब्लॉगर, स्काइप, पिंटेरेस्ट, यू-ट्यूब तथा

* *शोधार्थी*, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश 243006
** *शोधार्थी*, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश 243006
*** *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश 243006

गूगल हैंगआउट आदि के बारे में जानकारी एवं उनके संभावित उपयोग के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया है। साथ ही, वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2021–22 में सोशल मीडिया के रूप में पीएम ई-विद्या, दीक्षा, ई-पाठशाला, एन.आर.ओ.ई.आर., प्रज्ञाता तथा स्वयं पोर्टल आदि पर विभिन्न रूपों में उपस्थित ई-अधिगम सामग्री के उपयोग से संबंधित पूर्ण जानकारी विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा शिक्षकों को प्रदान की गई है।

वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2019–20 में सुझाए गए सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म, जैसे— व्हाट्सऐप, फेसबुक, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम आदि का उपयोग विद्यार्थी चित्र, ऑडियो, वीडियो व लिखित संदेश के रूप में अधिगम सामग्री को साझा करने अथवा सीखने हेतु कर सकते हैं। विद्यार्थियों के कक्षावार अथवा विषयवार समूह बनाकर विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी साझा करने के लिए शिक्षक टेलीग्राम, व्हाट्सऐप तथा फेसबुक आदि का उपयोग कर सकते हैं। टेलीग्राम पर एक लाख तक विद्यार्थियों को समूह में जोड़ा जा सकता है। फेसबुक तथा यू-ट्यूब का उपयोग शिक्षक विद्यार्थियों से तुल्यकालिक अथवा गैर-तुल्यकालिक रूप में जुड़कर विषयवार व्याख्यान उपलब्ध कर सकते हैं। गूगल हैंगआउट तथा एडमोडो का उपयोग विद्यार्थियों के समूह से जुड़कर सिर्फ़ तुल्यकालिक अर्थात लाइव व्याख्यान देने के लिए कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त ट्विटर का उपयोग विद्यार्थियों को रोचक गतिविधियों में व्यस्त रखने तथा विशिष्ट प्रकरणों पर अपनी अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए प्रभावी शैक्षिक उपकरण के रूप में कर सकते हैं। साथ ही, शिक्षक प्रदत्त कार्य (एसाइनमेंट) तथा विभिन्न अधिगम सामग्री की लिंक को भी ट्वीट कर सकते हैं।

वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2021–22 के अनुलग्नक-1 में सुझाए गए सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के रूप में पीएम ई-विद्या पोर्टल के प्रमुख घटक में 'वन क्लास वन चैनल' है। इसमें डी.टी.एच.के 12 चैनल राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पाठ्यक्रम पर आधारित शैक्षिक सामग्री के प्रसारण हेतु ऐसे विद्यार्थियों के लिए समर्पित हैं, जिनके पास डिजिटल संसाधन नहीं हैं। दीक्षा पोर्टल भी इसी पोर्टल के अंतर्गत आने वाले 'एक राष्ट्र एक प्लेटफ़ॉर्म' का एक मंच है, जिस पर किताबों के क्यूआर कोड के साथ वीडियो, ऑडियो, चित्रात्मक उपन्यास तथा रोचक प्रश्नोत्तरी के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध की गई है। ई-पाठशाला तथा एन.आर.ओ.ई.आर. पर विद्यालयी पाठ्यचर्या के लिए बनाई गई डिजिटल सामग्री की एक विस्तृत शृंखला ऑडियो, वीडियो, ई-बुक तथा फ्लिप बुक के रूप में उपलब्ध है, जिन्हें विद्यार्थी मुफ्त में डाउनलोड कर सकते हैं और विषम परिस्थितियों में भी पढ़ाई कर सकते हैं। केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिक संस्थान (सी.आई.ई.टी.), रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा उपयुक्त संगीत ध्वनि प्रभाव एवं मीडिया जगत के अनुभवी कलाकारों की भागीदारी से उच्च गुणवत्ता वाले ऑडियो कार्यक्रम तैयार किए गए हैं। जिन्हें 226 *रेडियो स्टेशन*, *रेडियो पॉडकास्ट* तथा *जिओ सावन* के माध्यम से प्रसारित किया जाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित *प्रज्ञाता* दिशानिर्देश, गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए एक रोडमैप या संकेत प्रदान करता है, जो विद्यालय प्रमुखों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक तथा उपयोगी है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडरों में वर्णित सोशल मीडिया के मंच विद्यार्थियों को मोबाइल, लैपटॉप व अन्य डिजिटल संसाधनों के माध्यम से तुल्यकालिक व गैर-तुल्यकालिक संचार की सुविधा प्रदान करते हैं। तुल्यकालिक संचार के अंतर्गत विद्यार्थी व्यक्तिगत अथवा समूह में ऑडियो अथवा वीडियो कॉल करके तथा त्वरित संदेश सेवा ऐप का उपयोग करके अपने सहपाठियों, अभिभावकों तथा अध्यापकों से त्वरित संचार करते हैं। साथ ही, गूगल हैंगआउट, एडोमोडो, यू-ट्यूब आदि का उपयोग करके त्वरित लाइव व्याख्यान से जुड़कर अधिगम कर सकते हैं। विद्यार्थियों को विषय संबंधी कोई समस्या होती है, तो वे इन मंचों के माध्यम से लाइव रहकर एक-दूसरे को संदेश भेजकर उसका समाधान प्राप्त कर सकते हैं, जबकि गैर-तुल्यकालिक संचार के अंतर्गत यू-ट्यूब पर रिकॉर्डेड वीडियो अथवा अन्य गैर-तुल्यकालिक मंच पर किसी भी रूप में उपस्थित अधिगम सामग्री का उपयोग करते हैं। इसके अलावा विषय संबंधी कोई अन्य समस्या उत्पन्न होने पर ई-मेल संदेश या चैट के माध्यम से विद्यार्थी अपनी सुविधा के अनुसार प्रश्न पूछने के लिए संदेश भेज सकते हैं तथा अध्यापक अपनी सुविधानुसार समय मिलने पर विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर व समस्याओं के समाधान संदेश के माध्यम से भेज सकते हैं।

उपरोक्त विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया एक ऐसा मंच है, जो डिजिटल रूप में सरलता से उपलब्ध रहता है। इनका उपयोग करके विद्यार्थी अधिगम या किसी अन्य प्रकार की सामग्री को बनाने अथवा खोजने के साथ-साथ सामग्री साझा भी कर सकते हैं। यह सामग्री, जैसे— चित्र, ऑडियो, वीडियो या लिखित संदेश के रूप में हो सकती है क्योंकि वर्तमान में सोशल मीडिया पर होने वाली गतिविधियों में युवा वर्ग अधिक सक्रिय है। अतः वे इन डिजिटल माध्यमों का प्रयोग कर अपने ज्ञान एवं क्षमता का विकास कर सकते हैं।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में सोशल मीडिया की लोकप्रियता युवाओं के बीच बढ़ती जा रही है। इसके माध्यम से दुनियाभर के लगभग सभी उम्र के लोग अपने मित्रों व परिवार के लोगों के साथ संचार करते हैं। विद्यार्थी वर्ग भी इससे अछूता नहीं रहा है। वे सोशल मीडिया के द्वारा ही अपने सहपाठियों, अध्यापकों, परिजनों आदि से संपर्क स्थापित करते हैं। विद्यार्थियों को जब किसी भी पाठ्यवस्तु या व्यक्तिगत समस्या से संबंधित किसी समस्या का समाधान पाना होता है, तो वह इन्हीं डिजिटल युक्तियों के माध्यम से अपने अध्यापकों, अभिभावकों व मित्रों से संवाद कर समस्या का निवारण करते हैं। सोशल मीडिया एक ऐसा डिजिटल मंच है जिस पर विविध विचारधारा, मानसिकता, रुचि व दृष्टिकोण वाले लोगों से मिलने व विचारों को साझा करने का अवसर मिलता है। सोशल मीडिया के डिजिटल मंच पर बहुत से ऐसे व्यक्तियों के समूह हैं, जो विद्यार्थी के मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायता करते हैं।

शिक्षार्थियों के मानसिक स्तर व रुचि के अनुसार सोशल मीडिया पर विभिन्न विषयों से संबंधित अधिगम सामग्री उपलब्ध रहती है, जो चित्र, ऑडियो

अथवा वीडियो के रूप में होती है, जिसका उपयोग करके वह अपने अधिगम स्तर को बढ़ा सकते हैं। साथ ही, मनोरंजन हेतु सोशल मीडिया के फेसबुक, यू-ट्यूब आदि जैसे प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करते हैं, जिससे वे प्रायः मानसिक अवसाद के शिकार होने से बच जाते हैं। अतः यह कह सकते हैं कि सोशल मीडिया प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में वृद्धि कर उनके शैक्षिक निष्पादन को बढ़ाने का प्रयास करता है।

इन्हीं विविध पहलुओं पर कई शोध अध्ययन हुए हैं, जिनमें से कुछ शोध अध्ययन इस शोध कार्य की समस्या से संबंधित हैं, जिनमें शंकर और पुष्पा (2020) के द्वारा सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन पर प्रभाव की जाँच का अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सोशल मीडिया तथा शैक्षणिक निष्पादन के बीच सकारात्मक सह-संबंध है अर्थात सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन में सकारात्मक रूप से वृद्धि होती है। कुमार (2020) द्वारा विद्यार्थियों में सोशल मीडिया का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पढ़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करने के लिए शोध अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकतर विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति सकारात्मक रुचि थी, जो सोशल मीडिया के कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव को दर्शाता है। इस शोध अध्ययन के आधार पर यह सुझाव भी दिया गया कि अध्यापक-प्रशिक्षकों व विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया को एक शिक्षण-अधिगम सामग्री के रूप में अधिगम को प्रभावी बनाने हेतु प्रयोग करना चाहिए।

डाइमरी (2020) ने 'इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट्स— ए कंपेरेटिव स्टडी' नामक एक शोध अध्ययन किया। इसमें विद्यार्थियों के जीवन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने के साथ-साथ विद्यालयी विद्यार्थियों तथा विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सोशल मीडिया विद्यार्थियों के जीवन पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित कर रहा था। ओगुगुओ और अन्य (2020) के द्वारा किए गए शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग का उनके शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना था। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकतर विद्यार्थी नए दोस्त बनाने के लिए, प्रदत्त कार्यों तथा शैक्षिक सामग्री के स्रोतों को खोजने आदि के लिए सोशल मीडिया पर समय व्यतीत करते हैं। साथ ही, सोशल मीडिया के उपयोग व एकाउंटिंग के औसत शैक्षिक निष्पादन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं था।

शर्मा और बहल (2022) द्वारा बहिर्मुखी तथा अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर पड़ने वाले सोशल मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण करने हेतु एक तुलनात्मक शोध अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अंतर्मुखी तथा बहिर्मुखी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग का उनके शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर है। धीमन (2022) विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सोशल

मीडिया के उपयोग तथा शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए शोध अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाताओं के पास इंटरनेट सुविधा से युक्त मोबाइल फोन थे तथा उन्हें कई सोशल मीडिया साइट्स के बारे में जानकारी भी थी। ये विद्यार्थी सोशल मीडिया पर प्रतिदिन आधे घंटे से तीन घंटे का समय बिता रहे थे। सोशल मीडिया का उपयोग विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा था। यह अध्ययन विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग चैटिंग करने के बजाय पुस्तकालय में अपने शोध के अनुपूरक के रूप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने की अनुशंसा भी करता है।

सोबेह और अन्य (2022) ने यह शोध अध्ययन भारत में कोविड-19 के दौरान उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में ई-लर्निंग के लिए सोशल मीडिया के उपयोग के प्रति दृष्टिकोण को ज्ञात करने के लिए किया गया था। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों का सोशल मीडिया के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण था। सेनगुप्ता और वैश (2023) ने शोध अध्ययन में उच्चतर शिक्षा में सोशल मीडिया के उपयोग का विश्लेषण किया। इस शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कोविड-19 के समय उच्च शिक्षा में सोशल मीडिया का सबसे अधिक प्रयोग शिक्षण-अधिगम, चर्चाएँ, जनसंपर्क तथा नेटवर्किंग के लिए किया गया था। उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया के रूप में उपयोग किए जाने वाले मंचों के रूप में व्हाट्सऐप, फेसबुक, लिंक्डइन, इंस्टाग्राम तथा ट्विटर प्रमुख थे।

उल्लेखित किए गए शोध अध्ययनों की समीक्षा करने से पता चलता है कि विश्वपटल पर कई देशों में सोशल मीडिया के विभिन्न पहलुओं से संबंधित कई शोध अध्ययन हुए हैं, लेकिन भारत में इस क्षेत्र में सीमित शोध अध्ययन हुए हैं। अतः उपरोक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए शोधार्थियों ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया के प्रभाव पर शोध अध्ययन करने का निर्णय लिया। साथ ही, उक्त सभी दृष्टिकोणों का ध्यान रखते हुए शोधार्थियों द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयास किया कि विद्यार्थी सोशल मीडिया का उपयोग किस उद्देश्य के लिए कर रहे हैं? वे सोशल मीडिया पर कितना समय बिता रहे हैं? वे कौन-कौन से डिजिटल मंच का उपयोग कर रहे हैं? तथा इन मंचों का उनके शैक्षिक निष्पादन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

सोशल मीडिया— इस शोध अध्ययन में सोशल मीडिया से अभिप्राय ऐसे डिजिटल मंचों से है, जिसके द्वारा विद्यार्थी डिजिटल युक्तियों के माध्यम से आपस में तुल्यकालिक अथवा गैर तुल्यकालिक प्रकार से आभासी रूप में जुड़कर जानकारी प्राप्त करते हैं अथवा साझा करते हैं।

शैक्षिक निष्पादन— शैक्षिक निष्पादन से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों में शैक्षिक कौशलों, शैक्षिक सामग्री एवं ज्ञान प्राप्त करने के लक्ष्यों की दिशा में की गई प्रगति के मूल्यांकन से है।

शोध का उद्देश्य

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना था।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक थी, जिसमें शोध की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया था।

प्रतिदर्श तथा प्रतिदर्शन विधि

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा प्रतिदर्श के रूप में बरेली (उत्तर प्रदेश) के शहरी क्षेत्र में स्थित 10 विद्यालयों से कक्षा 11 तथा 12 के विज्ञान वर्ग में अध्ययनरत सत्र 2022–2023 के 120 विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन प्रविधि से किया गया था।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव से संबंधित प्रदत्त संकलन करने के लिए स्व-निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया था। इस प्रश्नावली में 2 खंड थे, जिसके पहले खंड में विद्यार्थियों की सामान्य जानकारी पर आधारित प्रश्न थे, जबकि दूसरे भाग में 10 प्रश्न थे। इसमें पहले तीन प्रश्नों में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया था कि विद्यार्थी सोशल मीडिया का उपयोग किस उद्देश्य से करते हैं, वह सोशल मीडिया पर कितना समय बिताते हैं तथा कौन-कौन से सोशल मीडिया मंचों का उपयोग करते हैं। इसी खंड के अन्य सात प्रश्न सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित थे। विद्यार्थियों को इन प्रश्नों के उत्तर इनके सम्मुख बने कॉलम में सकारात्मक, तटस्थ अथवा नकारात्मक में से किसी एक का चयन कर सही का निशान लगाना था। इन्हीं विकल्पों से विद्यार्थियों द्वारा चुने गए उत्तरों की संख्या के आधार पर प्रतिशतता के माध्यम से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया था।

प्रदत्त की संकलन प्रक्रिया

इस शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वप्रथम शोधार्थी द्वारा संबंधित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से अनुमति लेकर चयनित कक्षाओं के विद्यार्थियों से सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करके सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए प्रश्नावली के बारे में अवगत कराया गया। साथ ही, विद्यार्थियों को बताया गया कि इसमें आपके द्वारा दी जाने वाली जानकारी गोपनीय रखी जाएगी, जो केवल इस शोध अध्ययन हेतु ही उपयोग की जाएगी। शोधार्थियों द्वारा विद्यार्थियों द्वारा भरी गई प्रश्नावलियों को एकत्रित कर लिया गया तथा उनका विश्लेषण प्रतिशतता के माध्यम से किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन

इस शोध अध्ययन में शोधार्थियों द्वारा उद्देश्यवार उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि प्रतिशतता द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया, जिनका वर्णन इस प्रकार है—

उद्देश्य 1— विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

सोशल मीडिया का उपयोग करने के क्षेत्र

तालिका 1 का अध्ययन करने से निष्कर्ष निकलता है कि 68.3 प्रतिशत विद्यार्थी शैक्षिक प्रयोजनों, 17.5 प्रतिशत विद्यार्थी मनोरंजन के प्रयोजन से, 10.8 प्रतिशत विद्यार्थी सामाजिक प्रयोजन से तथा 3.3 प्रतिशत विद्यार्थी अन्य प्रयोजनों हेतु सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। इन आँकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों का सबसे अधिक उपयोग विद्यार्थी

शैक्षिक प्रयोजनों अर्थात अपने अधिगम को बढ़ाने हेतु करते हैं, क्योंकि इनके माध्यम से विद्यार्थियों को नि:शुल्क या बहुत ही कम कीमत पर विविध प्रकार की सामग्री तुरंत उपलब्ध हो जाती है। इस सामग्री का उपयोग करके वह अपनी अधिगम प्रक्रिया को धन व समय की बचत करके आगे बढ़ा सकते हैं। अधिकतर विद्यार्थियों का सोशल मीडिया के मंचों का शैक्षिक प्रयोजनों हेतु उपयोग करने का कारण विद्यार्थियों का शहरी क्षेत्र से जुड़ा होना था, क्योकि इस शोध अध्ययन में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को ही शामिल किया गया है। सामान्यतः शहरी परिवेश में रहने वाले परिवारों का शैक्षिक स्तर उच्च होता है, जिसके कारण इनमें सोशल मीडिया पर उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों के उचित उपयोग के प्रति जागरूकता का स्तर भी उच्च हो सकता है, जो विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के उचित उपयोग हेतु अभिप्रेरित करती है। कुछ विद्यार्थी इन मंचों का उपयोग मनोरंजन तथा सामाजिक उद्देश्यों आदि की पूर्ति के लिए करते हैं, जो कि अधिगम को अप्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक रूप में प्रभावित करते हैं, क्योंकि मनोरंजन आदि से उनका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। जिसका अधिगम प्रक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 1— विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग करने के क्षेत्र

उपयोग के क्षेत्र	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
शैक्षिक	82	68.3%
मनोरंजन	21	17.5%
सामाजिक	13	10.8%
अन्य	4	3.3%

प्रतिदिन सोशल मीडिया पर बिताया गया समय

तालिका 2 (पृष्ठ संख्या 46) का अध्ययन करने से पता चलता है कि 26.7 प्रतिशत विद्यार्थी एक घंटे से कम, 37.5 प्रतिशत विद्यार्थी एक से तीन घंटे, 25.8 प्रतिशत विद्यार्थी तीन से पाँच घंटे तथा 10 प्रतिशत विद्यार्थी पाँच घंटे से अधिक समय तक प्रतिदिन सोशल मीडिया पर बिताते हैं। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी एक घंटे से तीन घंटे तक सोशल मीडिया पर बिताते हैं। विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया पर बिताया जाने वाला यह समय अधिगम सामग्री को खोजने, सीखने व साझा करने, अन्य व्यक्तियों अथवा समूहों से संवाद करने तथा मनोरंजन हेतु प्रयुक्त किया जाता है। कुछ विद्यार्थी ऐसे भी हैं, जो तीन से पाँच घंटे तथा पाँच घंटे से अधिक समय तक सोशल मीडिया पर बिताते हैं, यह उनके सीखने की प्रक्रिया को नकारात्मक रूप से भी प्रभावित कर सकता है, क्योंकि सोशल मीडिया पर आवश्यकता से अधिक बिताया गया समय विद्यार्थियों के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनकी अधिगम की प्रक्रिया को भी विचलित कर सकता है। विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया पर बिताए जाने वाले अधिक समय का कारण विद्यार्थियों के सामाजिक व आर्थिक स्तर का उच्च होना हो सकता है, क्योंकि इस शोध अध्ययन में शामिल किए गए विद्यार्थी शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले थे। इन विद्यार्थियों को विद्युत की समुचित आपूर्ति तथा परिवार की आर्थिक स्थिति उच्च होने से उन्हें डिजिटल संसाधन, जैसे— मोबाइल, लैपटॉप तथा इंटरनेट आदि आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं।

तालिका 2— विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन सोशल मीडिया पर बिताई गई समयावधि

समयावधि	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1 घंटा से कम	32	26.7%
1 से 3 घंटे	45	37.5%
3 से 5 घंटे	31	25.8%
5 घंटे से अधिक	12	10%

विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफ़ार्म

तालिका 3 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 65.8 प्रतिशत विद्यार्थी यू-ट्यूब, 19.2 प्रतिशत विद्यार्थी फेसबुक, 8.3 प्रतिशत विद्यार्थी व्हाट्सऐप तथा 6.7 प्रतिशत विद्यार्थी अन्य सोशल मीडिया मंचों का उपयोग अपने दैनिक जीवन में स्वयं या अभिभावकों के मोबाइल के द्वारा कर रहे हैं। इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी यू-ट्यूब का उपयोग शैक्षिक तथा मनोरंजन के लिए करते हैं। यू-ट्यूब पर उपलब्ध अधिकतर सामग्री श्रव्य-दृश्य रूप में होती है, जो विद्यार्थियों को कठिन अवधारणाओं को सीखने में मदद करने के लिए वीडियो व्याख्यान, एनीमेशन वीडियो तथा 360 डिग्री वीडियो जैसे संसाधन उपलब्ध होते हैं। वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले सोशल मीडिया मंच के रूप में फेसबुक है, जो विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु के साथ चित्र, ऑडियो, वीडियो तथा दस्तावेजों से संबंधित जानकारी साझा करने में सहायता करता है। फेसबुक का उपयोग करते समय विद्यार्थी अन्य उपयोगकर्ताओं को मित्र के रूप में जोड़कर उनसे संपर्क स्थापित करते हैं, इससे उनमें सामुदायिक रूप से सीखने की भावना विकसित होती है।

तालिका 3— विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

प्लेटफॉर्म	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
यू-ट्यूब	79	65.8%
फेसबुक	23	19.2%
व्हाट्सऐप	10	8.3%
अन्य	8	6.7%

कक्षा में पढ़ाई के दौरान पाठ्यवस्तु को प्रभावी रूप से समझने में सोशल मीडिया का प्रभाव

तालिका 4 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 83.3 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से पाठ्यवस्तु को सकारात्मक रूप से समझने में मदद मिलती है, 6.7 प्रतिशत विद्यार्थी इस संदर्भ में तटस्थ थे, जबकि 10 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि इसका नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी कक्षा में पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु को और अधिक प्रभावी रूप से सीखने व समझने हेतु ऑनलाइन सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। जब विद्यार्थी अध्यापक द्वारा पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु को यू-ट्यूब चैनल (जैसे— राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अधिकारिक या कोई अन्य शैक्षिक

तालिका 4— विद्यार्थियों द्वारा पढ़ाई के दौरान पाठ्यवस्तु को समझने में सोशल मीडिया का प्रभाव

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	100	83.3%
तटस्थ	8	6.7%
नकारात्मक	12	10%

यू-ट्यूब चैनल) तथा फेसबुक जैसे— विभिन्न शैक्षिक संस्थानों द्वारा बने समूह आदि पर उपलब्ध वीडियो तथा एनीमेशन वीडियो के माध्यम से पढ़ते हैं, तो यह अध्ययन सामग्री विषयवस्तु को अधिक सरल व रुचिकर रूप से समझने में सहायता करती है। जबकि 10 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का कक्षा में पढ़ाई गई पाठ्यवस्तु को समझने में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वह इनका उपयोग केवल मनोरंजन तथा अपने दोस्तों व अन्य व्यक्तियों से संवाद करने हेतु करते हैं, जिससे उनके समय का दुरुपयोग होता है। यदि वह इस समय का उपयोग किताबों या अध्यापक द्वारा पढ़ाए गए पाठ के अध्ययन हेतु करते हैं, तो पाठ्यवस्तु को अच्छे से समझ सकते हैं।

सोशल मीडिया के उपयोग की अधिगम हेतु अभिप्रेरणा

तालिका 5 का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 80 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया का उपयोग उनके अधिगम को अभिप्रेरित करता है। साथ ही, 9.2 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया उन्हें अधिगम हेतु अभिप्रेरित करता है या नहीं, यह बताना कठिन है अर्थात वह इस कथन को लेकर तटस्थ थे। इसके अतिरिक्त 10.8 प्रतिशत विद्यार्थियों का यह मानना था कि सोशल मीडिया उनके अधिगम को अभिप्रेरित नहीं करता है। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी सोशल मीडिया से अधिगम करने हेतु अभिप्रेरित होते हैं, क्योंकि जब विद्यार्थियों को विविध प्रकार की अधिगम-सामग्री द्वारा सीखने को मिलता है, तो उनमें सीखने का अभिप्रेरणा स्तर उच्च हो जाता है। कुछ विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के मंच उन्हें अधिगम हेतु अभिप्रेरित करने के स्थान पर अधिगम से विचलित करते हैं, क्योंकि ये विद्यार्थी शायद सोशल मीडिया का उपयोग केवल मनोरंजन हेतु करते हैं।

तालिका 5— विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग की अधिगम हेतु अभिप्रेरणा

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	96	80%
तटस्थ	11	9.2%
नकारात्मक	13	10.8%

सोशल मीडिया के उपयोग का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

तालिका 6 (पृष्ठ संख्या 48) का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 75 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया का उपयोग करने से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जबकि 15 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वहीं 10 प्रतिशत विद्यार्थी इस संदर्भ में तटस्थ थे। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी सोशल मीडिया के माध्यम से पढ़ते हैं, तो उनके शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि ये मंच विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध विषयवस्तु को रुचिकर व प्रभावपूर्ण रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे वे अधिगम हेतु अभिप्रेरित होते हैं। वहीं कुछ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिसका कारण यह है कि उनके द्वारा इन मंचों का उचित रूप से उपयोग

नहीं किया जाता है। इस प्रकार ये विद्यार्थी अधिगम से विचलित हो जाते हैं।

तालिका 6— विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	90	75%
तटस्थ	12	10%
नकारात्मक	18	15%

सोशल मीडिया के उपयोग का लेखन कौशल पर प्रभाव

तालिका 7 के अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 60 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके लेखन कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा 10 प्रतिशत विद्यार्थी इस बात को लेकर तटस्थ थे। वहीं 30 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके लेखन कौशल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया का उपयोग करने से अधिकतर विद्यार्थियों के लेखन कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस सकारात्मक प्रभाव का कारण यह है कि जब वह सोशल मीडिया पर किस्से, कहानी, प्रसंग या कोई अन्य सामग्री लिखते हैं अथवा पढ़ते हैं, तो उनकी हिंदी व्याकरण, शब्दावली तथा प्रभावशीलता संबंधी कौशलों में सुधार होता है। लेकिन 30 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे भी थे, जिनका मानना था कि जब वह सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, तो उनका लेखन कौशल अर्थात सुलेख खराब हो जाता है। और लेखन कौशल खराब होने के पीछे का कारण उन्होंने सोशल मीडिया के मंच पर लेख, टिप्पणी अथवा विचार आदि के लेखन हेतु लैपटॉप, मोबाइल व कंप्यूटर आदि जैसे डिजिटल उपकरणों का उपयोग बताया, जिससे हस्त लेखन के कौशल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 7— सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थियों के लेखन कौशल पर प्रभाव

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	72	60%
तटस्थ	12	10%
नकारात्मक	36	30%

सोशल मीडिया के उपयोग का अधिगम को रुचिकर बनाने पर प्रभाव

तालिका 8 (पृष्ठ संख्या 49) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 80 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि सोशल मीडिया के द्वारा वह अधिगम को रुचिकर बनाते हैं। साथ ही 11.7 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनकी अधिगम में रुचि उत्पन्न नहीं होती है, जबकि 8.3 प्रतिशत विद्यार्थी इस विषय में तटस्थ थे। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कह सकते हैं कि अधिकतर विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग कर अधिगम को रुचिकर बनाया जाता है। एक ओर जहाँ परंपरागत अधिगम-शिक्षण व्यवस्था में अधिगम सामग्री को लिखित रूप में तथा व्याख्यान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म पर अधिगम सामग्री ऑडियो,

वीडियो तथा चित्र के रूप में विविधता के साथ प्रस्तुत करने से विद्यार्थियों में सीखने की रुचि उत्पन्न होती है, जबकि कुछ विद्यार्थियों की सोशल मीडिया से अधिगम करने की रुचि नहीं होती है, क्योंकि जब वे सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर उपलब्ध रोचक सामग्री के संपर्क में आते हैं, तो उनके लिए सोशल मीडिया के मंच अधिगम के स्थान पर मनोरंजन का साधन मात्र बनकर रह जाते हैं।

तालिका 8— विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग से अधिगम को रुचिकर बनाना

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	96	80%
तटस्थ	10	8.3%
नकारात्मक	14	11.7%

सोशल मीडिया के उपयोग का संप्रेषण कौशल के विकास पर प्रभाव

तालिका 9 का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया के उपयोग से 71.7 प्रतिशत विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्त 12.5 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि उनके संप्रेषण कौशल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जबकि 15.8 प्रतिशत विद्यार्थी इस संदर्भ में तटस्थ थे। अतः इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी सोशल मीडिया का उपयोग करके अपने संप्रेषण कौशलों में सुधार कर अधिक प्रभावी संप्रेषण करना सीख रहे हैं। विद्यार्थी जब सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म, जैसे— यू-ट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम तथा ब्लॉगर आदि पर ऑडियो, वीडियो अथवा लिखित रूप में कोई सामग्री देखते या पढ़ते हैं तथा समूह अथवा व्यक्ति विशेष से संवाद करते हैं, तो उनके संप्रेषण कौशलों में सकारात्मक परिवर्तन होता है, क्योंकि वह अन्य व्यक्तियों से संवाद करके अथवा वीडियो आदि देखकर अपने शब्द भंडार में वृद्धि करते हैं।

तालिका 9— सोशल मीडिया के उपयोग का विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल पर प्रभाव

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशतता
सकारात्मक	86	71.7%
तटस्थ	19	15.8%
नकारात्मक	15	12.5%

तालिका 10— सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थियों के उनके व्यवहार में परिवर्तन

उत्तर का आधार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	89	74.2%
तटस्थ	16	13.3%
नकारात्मक	15	12.5%

सोशल मीडिया के उपयोग का व्यवहार में परिवर्तन पर प्रभाव

तालिका 10 के अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 74.2 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। इसके अतिरिक्त 12.5 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि उनके व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जबकि 13.3 प्रतिशत विद्यार्थी इस संबंध में तटस्थ थे। इन आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकतर विद्यार्थी सोशल मीडिया के द्वारा अपने व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन कर रहे हैं। व्यक्ति जब सोशल मीडिया के मंच के माध्यम से किसी दूसरे व्यक्ति या अन्य लोगों के व्यवहार को वीडियो, ऑडियो

या लिखित संदेश के रूप में देखता व पढ़ता है, तो वह अपने व्यवहार में उनके गुणों का समावेशन करने का प्रयास करता है। वहीं कुछ विद्यार्थियों का मानना है कि सोशल मीडिया के इन मंचों पर अन्य व्यक्तियों से संवाद करने तथा उनके विचारों को पढ़ने तथा वीडियो आदि देखने से उनके व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन से निष्कर्ष रूप में पाया गया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वह सोशल मीडिया पर शैक्षिक प्रयोजन हेतु प्रतिदिन लगभग तीन से पाँच घंटे यू-ट्यूब जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर बिता रहे हैं। कुछ विद्यार्थी फेसबुक व व्हाट्सऐप, जैसे— ऐप का उपयोग शैक्षिक प्रयोजन व मनोरंजन आदि के लिए कर रहे हैं। सोशल मीडिया का उपयोग विद्यार्थियों में अधिगम को रुचिकर बनाने, अधिगम हेतु अभिप्रेरणा, संप्रेषण-कौशलों में सुधार, शैक्षिक उपलब्धि में सुधार तथा पाठ्य-सामग्री को प्रभावी रूप से समझने में सकारात्मक रूप से योगदान देता है। यद्यपि कुछ विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के उपयोग के बारे में सार्थक जानकारी न होने के कारण उनके शैक्षिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है अर्थात जब विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के उपयोग के बारे में जागरूकता नहीं होती है, तो वह इनका उपयोग केवल मनोरंजन तथा अपने दोस्तों से अंतर्क्रिया आदि के लिए ही करते हैं, जिससे वे अपने अधिगम से विचलित हो जाते हैं। ऐसे में इन विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर में वर्णित सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों तथा इनके समुचित उपयोग के बारे में विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों तथा अध्यापकों को सार्थक जानकारी प्रदान की जाए, तो वह इनका उपयोग करके अपने अधिगम को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं, जिससे उनके शैक्षिक निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर अग्रलिखित शैक्षिक निहितार्थ हो सकते हैं—

- विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा कक्षा 11 व 12 के लिए वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर में सुझाए गए सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों का उपयोग विज्ञान विषय को जानने व सीखने के लिए किया जा सकता है। इन मंचों पर विज्ञान विषय से संबंधित लिखित, सामग्री, चित्र, ऑडियो तथा वीडियो के रूप में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री का उपयोग कर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर, सरल तथा प्रभावी बनाया जा सकता है।
- सोशल मीडिया के माध्यम से उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु विज्ञान विषय से संबंधित विश्व स्तर की शिक्षण-अधिगम सामग्री को निःशुल्क या

न्यूनतम मूल्य पर आसानी से उपलब्ध करवाया जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों का विज्ञान विषय के अधिगम पर व्यय होने वाले धन व समय की बचत होगी।

- विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर उपस्थित बहु ज्ञानेंद्रिय आधारित अधिगम सामग्री के द्वारा अधिगम हेतु अभिप्रेरित किया जा सकता है।
- ऐसे विद्यार्थी जो किसी कारणवश विद्यालय जाने में असमर्थ हैं, वे सोशल मीडिया के मंचों, जैसे— यू-ट्यूब, टेलीग्राम तथा फेसबुक आदि पर चित्र, ऑडियो, वीडियो तथा लिखित सामग्री का अध्ययन कर सीख सकते हैं।

संदर्भ

ओगुगुओ, बी. सी. और अन्य. 2020. इन्फ्लुएंस ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट्स अकेडमिक अचीवमेंट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इवैल्यूएशन एंड रिसर्च इन एजुकेशन*. 9(4). पृष्ठ संख्या 1000–1009.

कुमार, आर., एस. 2020. इफेक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन एकेडमिक परफ़ॉरमेंस ऑफ़ द स्टूडेंट्स. द *ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ डिस्टेंस एंड लर्निंग*. 8 (2).

डाइमरी, पी. 2020. इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट्स: ए कंपेरेटिव स्टडी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मैनेजमेंट*. 11(11). पृष्ठ संख्या 291–299.

धीमन, बी. 2022. यूज एंड इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन एकेडमिक परफ़ॉरमेंस ऑफ़ कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स — ए केस स्टडी. *एस.एस.आर.एन. इलेक्ट्रॉनिक जर्नल*. https://www.researchgate.net/publication/363463095.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2019–2020. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 2021–2022. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

शंकर, वी. एस., और बी. पुष्पा. 2020. इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन अकादमिक परफ़ॉरमेंस ऑफ़ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स – ए फील्ड सर्वे ऑफ़ एकेडमिक डेवलपमेंट. *टेक्नोलर्न— एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी*. 10(2). पृष्ठ संख्या 01–07.

शर्मा, एस. और आर. बहल. 2022. एनालासिंग द इंपैक्ट ऑफ़ सोशल मीडिया ऑन स्टूडेंट्स अकादमिक परफॉरमेंस— ए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ़ एक्स्ट्रावर्शन एंड इंट्रोवर्शन पर्सनालिटी. *साइकालजी स्टडी*. 67(4). पृष्ठ संख्या 549–559.

सेनगुप्ता, एस., और ए. वैश. 2023. ए स्टडी ऑन सोशल मीडिया एंड हायर एजुकेशन डयूरिंग द कोविड-19 पेंडेमिक. *यूनिवर्सल एक्सेस इन द इनफ़ार्मेशन सोसाइटी*. https://doi.org/10.1007/s10209-023-00988-x

सोबेह, और अन्य. 2022. सोशल मीडिया यूज इन ई लर्निंग अमिड कोविड-19 पेंडेमिक— इंडियन स्टूडेंट्स पर्सपेक्टिव. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एन्वायरमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ*. एम.डी.पी.आई. 19.

विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत का अध्ययन

सुनील कुमार*

आनंद कुमार**

यह शोध-पत्र माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत या व्यसनलिप्तता (नोमोफोबिया) के अध्ययन पर आधारित है। शोधार्थी द्वारा इस शोध अध्ययन के लिए वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया था। इस शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रविधि से जनपद में चंपावत के विकासखंड लोहाघाट (उत्तराखंड) के अंतर्गत वर्ष 2022–23 में अध्ययनरत कक्षा 11वीं तथा 12वीं के 132 विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया था। प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा विजयश्री एवं मौसाद अंसारी (2021) द्वारा निर्मित स्मार्टफ़ोन की लत मापनी स्मार्टफ़ोन की लत के लिए मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया था। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंर्तगत माध्य एवं मानक विचलन तथा अनुमानात्मक सांख्यिकी में परीक्षण का उपयोग किया गया था। इस शोध अध्ययन के पश्चात यह परिणाम प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है, वहीं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत को कम करने में सहायक होंगे। यह शोध पत्र विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों में स्मार्टफ़ोन की लत से संबंधित जागरूकता एवं स्मार्टफ़ोन का अत्यधिक उपयोग करने से व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को जानने में सहायता प्रदान करेगा।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के इस युग में शिक्षा में कई परिवर्तन हुए हैं। आई.सी.टी. के द्वारा शिक्षा को सरल एवं रुचिकर बनाया गया है, इसलिए भारत सरकार के द्वारा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के इस युग में शिक्षा के क्षेत्र में नई तकनीकों का उपयोग करना होगा। कोविड-19 महामारी के दौर में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से संबंधित विभिन्न मंचों का उपयोग किया गया तथा इन मंचों ने महामारी के दौरान शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने में योगदान दिया। मौजूदा डिजिटल प्लेटफॉर्मों एवं

* *शोधार्थी*, शिक्षा विद्यापीठ, श्री गुरू राम राय विश्वविद्यालय देहरादून एवं *सहायक प्राध्यापक*, बी.एड. विभाग, स्वामी विवेकानंद, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लोहाघाट (चंपावत), उत्तराखंड 248001

***प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विद्यापीठ, श्री गुरू राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून 248001

आई.सी.टी. आधारित शैक्षिक पहलों को सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए सुगम बनाने हेतु अनुकूलित आनलॉइन माध्यम एवं संसाधन उपलब्ध करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ऑनलाइन शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के अंतर्गत स्कूली शिक्षा से उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर अधिगम-शिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए प्रमुख पहलों की अनुशंसा की गई है, जिनमें शामिल हैं— (क) ऑनलाइन शिक्षा/ डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एन.ई.टी.एफ़., सी.आई.ई.टी., एन.आई.ओ.एस., इग्नू, आई.आई.टी., एन.आई.टी. जैसी विभिन्न संस्थाएँ पायलट अध्ययन करेंगी। (ख) डिजिटल अवसंरचना (इंफ्रास्ट्रक्चर) (ग) ऑनलाइन शिक्षण मंच (प्लेटफॉर्म) एवं उपकरण (घ) सामग्री निर्माण, डिजिटल रिपॉजिटरी एवं प्रसार (ङ) डिजिटल अंतर को कम करना (च) आभासी (वर्चुअल) प्रयोगशाला (छ) शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण तथा प्रोत्साहन (ज) ऑनलाइन मूल्यांकन और परीक्षाएँ (झ) अधिगम के मिश्रित मॉडल (ञ) मानकों को पूरा करना है। इनके अतिरिक्त यह भी कहा गया है कि विश्व स्तरीय डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, शैक्षिक डिजिटल कंटेंट सामग्री तथा क्षमता का निर्माण करने के लिए एक समर्पित इकाई का निर्माण किया जाएगा। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने स्मार्टफ़ोन को भी जन्म दिया है। वर्तमान में स्मार्टफ़ोन ने शिक्षा को अत्यधिक सुगम बना दिया है। स्मार्टफ़ोन शिक्षार्थियों की विभिन्न शैक्षिक एप्लिकेशन (ऐप), डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन कक्षाएँ तथा शिक्षा संसाधनों तक पहुँच प्रदान कर रहा है, जिसके आधार पर विद्यार्थी विभिन्न विषयों की पढ़ाई तथा अभ्यास कर रहे हैं। वे ऑनलाइन वीडियो, कोर्स, वेबसाइट, ब्लॉग, विभिन्न शिक्षा-संबंधित वेबसाइटों और अन्य संसाधनों का उपयोग करके सरल एवं सृजनात्मक रूप में सीखने का प्रयास कर रहे हैं। इसके अलावा, वे शिक्षकों तथा सहपाठियों के साथ इंटरनेट के माध्यम से संपर्क कर अपने ज्ञान एवं अनुभव को साझा कर सीख रहे हैं। स्मार्टफ़ोन पर उपलब्ध शिक्षा संबंधी ऐप्स, विद्यार्थियों को विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों, मॉक टेस्ट, शब्दावली बढ़ाने के उपाय, गणित और विज्ञान के संबंध में अभ्यास, भाषा सीखने एवं अन्य शैक्षिक गतिविधियों के लिए विविध प्रकार के संसाधन प्रदान करते हैं। ये ऐप्स विद्यार्थियों की सीखने को रुचिपूर्ण और संवेदनशील बनाने में मदद कर सकते हैं। स्मार्टफ़ोन विद्यार्थियों को अपनी गति, रुचि एवं स्वतंत्रतापूर्वक अध्ययन करने में सहायता करता है। लेकिन स्मार्टफ़ोन पर अत्यधिक निर्भरता विद्यार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव भी डालती है, जिससे वे स्मार्टफ़ोन की लत से ग्रसित हो सकते हैं। इसलिए शोधार्थी द्वारा इस विषय पर अध्ययन कर कुछ संभावित समाधान खोजने का प्रयास किया गया है।

स्मार्टफ़ोन की लत (नोमोफ़ोबिया)

स्मार्टफ़ोन, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी युग का सबसे बड़ा आविष्कार माना जा सकता है। प्रौद्योगिकी के इस युग में स्मार्टफ़ोन, मानव जाति के जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि इसके बिना मनुष्य अपने प्रतिदिन के अधिकतर कार्यों को करने में असमर्थता का अनुभव करता है। आज मनुष्य इस

यंत्र (स्मार्टफ़ोन) पर अधिक निर्भर होता जा रहा है। स्मार्टफ़ोन ने मनुष्य के जीवन को सरल तो बनाया है, लेकिन अत्यधिक निर्भरता के कारण वह इसकी लत से ग्रसित भी हो सकता है, जिसका प्रभाव उसके मानसिक स्तर एवं सामाजिक जीवन पर पड़ सकता है। कई शोध अध्ययन बताते हैं कि जो लोग अत्यधिक मोबाइल का उपयोग करते हैं, वे अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं (सरदर्द, थकान, अनिद्रा तथा सुनने की समस्या आदि) से ग्रसित पाए गए हैं (सिंह, 2012)। स्मार्टफ़ोन की लत से ग्रसित व्यक्ति को चिकित्सा के क्षेत्र में विशेषकर नोमोफ़ोबिया भी कहा जाता है। वर्तमान समय में भारत में स्मार्टफ़ोन की पहुँच आम व्यक्ति तक हो गई है। इसमें युवाओं एवं किशोरों तक अधिक पहुँच हो गई है। वर्तमान में किशोरों में स्मार्टफ़ोन के अत्यधिक उपयोग के कारण विशेषकर सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेम एवं अन्य विभिन्न ऐप के प्रयोग के कारण मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक दुष्परिणाम बढ़ा है और जिससे उनमें इसके उपयोग की लत को जन्म दिया है। भारत में स्मार्टफ़ोन की लत की मात्रा 39 प्रतिशत से 44 प्रतिशत पाई गई (सिंह, 2018)।

शोध अध्ययन का औचित्य

घोष और अन्य (2021) ने अपने शोध अध्ययन 'ए स्टडी ऑन स्मार्टफ़ोन एडिक्शन एंड इट्स इफैक्ट्स ऑन स्लीप क्वॉलिटी अमंग नर्सिंग स्टूडेंट्स इन ए म्युन्सिपैलटी टाउन ऑफ़ वेस्ट बंगाल' से ज्ञात किया कि स्मार्टफ़ोन व्यसनलिप्तता एवं देर रात तक उपयोग करने से निद्रा प्रभावित होती है। सेंटेलियन और रामोस (2021) 'एडिक्शन टू दी स्मार्टफ़ोन इन हाईस्कूल स्टूडेंट्स— हाउ इट्स इन डेली लाइफ?' नामक शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों में उच्च स्तर पर स्मार्टफ़ोन की लत पाई गई, जिसमें पाया गया कि स्मार्टफ़ोन का अत्यधिक उपयोग सोशल नेटवर्किंग साइट पर किया जा रहा है। (भंडेरी और अन्य 2021) द्वारा किए गए शोध अध्ययन 'स्मार्टफ़ोन यूज एंड इट्स एडिक्शन अमंग एडोलेसेंट्स इन दी एज ग्रुप ऑफ़ 16–19 इयर्स', से यह ज्ञात हुआ कि 83.9 प्रतिशत विद्यार्थी स्मार्टफ़ोन का उपयोग कर रहे हैं, जिसमें 37 प्रतिशत विद्यार्थियों को स्मार्टफ़ोन की लत है। ली और अन्य (2021) के शोध अध्ययन 'कुआंतन, मलेशिया में माध्यमिक स्कूली विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन का उपयोग एवं व्यसनलिप्तता में पाया गया कि विद्यार्थियों द्वारा सप्ताह में प्रतिदिन तीन घंटे से अधिक तक स्मार्टफ़ोन का उपयोग किया गया, जिसमें 81.8 प्रतिशत स्मार्टफ़ोन का उपयोग सोशल मीडिया के लिए करते हैं, जिसके कारण 57.6 प्रतिशत विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत का जोखिम पाया गया। जाउड़े और अन्य (2020) के शोध अध्ययन 'स्मार्टफ़ोन, सोशल मीडिया यूज एंड यूथ मेंटल हेल्थ' से ज्ञात हुआ कि सोशल मीडिया एवं बहुउद्देश्य क्रियाओं में विद्यार्थी स्मार्टफ़ोन का अत्यधिक प्रयोग करते हैं, जिसका सकारात्मक प्रभाव उनकी अधिगम क्षमता, संज्ञानात्मक नियंत्रण एवं शैक्षिक प्रदर्शन पर पाया गया। गन और कोकास 2020 के शोध अध्ययन 'इवैलूएशन ऑफ़ हाईस्कूल स्टूडेंट्स स्मार्टफ़ोन एडिक्शन एंड इन्सोमनिया लेवल' (हाईस्कूल के विद्यार्थियों के स्मार्टफ़ोन की लत एवं अनिद्रा स्तर

का मूल्यांकन) से ज्ञात हुआ कि स्मार्टफ़ोन की लत एवं अनिद्रा की गंभीरता के मध्य सकारात्मक संबंध है। स्मार्टफ़ोन की लत सबसे अधिक छात्राओं में पाई गई, जो कम से कम दिन में 49 मिनट या उससे अधिक समय स्मार्टफ़ोन उपयोग करने में व्यतीत करती पाई गईं कि रात को सोने से पहले स्मार्टफ़ोन का उपयोग अनिद्रा की समस्या का कारण बना है।

मख्दूमी और अन्य (2020) के शोध अध्ययन 'द इंपैक्ट ऑफ़ स्मार्टफ़ोन एडिक्शन ऑन एकेडमिक परफॉर्मेंस ऑफ़ हायर एजुकेशन स्टूडेंट्स' (उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर स्मार्टफ़ोन की लत के प्रभाव का अध्ययन) में पाया गया कि व्यावहारिकता एवं अकादमिक प्रदर्शन के मध्य एक सकारात्मक सहसंबंध है। अग्रवाल और अन्य (2020) के शोध अध्ययन 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन' में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन के बढ़ते प्रयोग का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक सकारात्मक सह-संबंध पाया गया तथा स्मार्टफ़ोन के प्रयोग का शैक्षिक उपलब्धियों पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया, परंतु उसका सीमित प्रयोग ही होना चाहिए।

अध्ययन का औचित्य

आज स्मार्टफ़ोन के उपयोग के कारण मानव की जीवन शैली तथा कार्यप्रणाली सरल हो गई है। मनुष्य प्रत्येक कार्य के लिए इस उपकरण पर निर्भर हो गया है। वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान लोगों को घर के भीतर रहने पर विवश होना पड़ा। इस स्थिति में, यह आवश्यकता थी कि विद्यार्थियों को कैसे शिक्षा प्रदान की जाए, यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। फिर भी, इस कार्य को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए ऑनलाइन मंचों का उपयोग किया गया, जिसमें स्मार्टफ़ोन का अधिकतम उपयोग किया गया। परंतु आज विद्यार्थी स्मार्टफ़ोन का उपयोग शिक्षण-अधिगम के लिए कम और गेम एवं सोशल साइट्स तथा अन्य कार्यों के लिए अधिक करने लगे हैं अर्थात वे अधिकतर समय स्मार्टफ़ोन पर व्यतीत करने लगे हैं। विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन पर निर्भरता के कारण उनमें इसकी लत (नोमोफोबिया) बढ़ती जा रही है, जिससे उनकी जीवन शैली प्रभावित हो रही है। अतः शोधार्थी द्वारा इसी विषय को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत के प्रभाव को शोध समस्या के रूप में चयनित किया गया है।

शोध के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा इस शोध अध्ययन के लिए वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया था।

शोध का सीमांकन

यह शोध अध्ययन केवल माध्यमिक सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों पर किया गया था।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

शोधार्थी द्वारा इस शोध अध्ययन के लिए जनसंख्या के रूप में विकासखंड लोहाघाट (उत्तराखंड) के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों का चयन किया गया था। शोधार्थी ने इस शोध अध्ययन हेतु ऑनलाइन प्रतिदर्श आकार संगणक के माध्यम से सरकारी एवं निजी विद्यालयों के लगभग 132 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि के अंतर्गत लॉटरी प्रणाली से किया था।

उपकरण

इस शोध अध्ययन के लिए प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा परीक्षण के अंतर्गत मानकीकृत उपकरण विजयश्री और अंसारी (2021) द्वारा निर्मित 'स्मार्टफ़ोन की लत मापनी' का प्रयोग किया गया था।

प्रदत्त संकलन प्रक्रिया

शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों का संकलन करने के लिए शोध अध्ययन हेतु चयनित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की अनुमति लेकर चयनित प्रतिदर्श (विद्यार्थियों) पर स्मार्टफ़ोन की लत मापनी प्रशासित की गई थी।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत मध्यमान, मानक विचलन एवं t-टेस्ट का उपयोग की गई।

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है। छात्रों की स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर का मध्यमान 64.97 तथा मानक विचलन 12.5 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार, छात्राओं की स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर का मध्यमान 62.52 तथा मानक विचलन 11.83 प्राप्त हुआ। छात्रों तथा छात्राओं की स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर के मध्यमानों की तुलना t-टेस्ट से करने पर t-मान 1.19 प्राप्त हुआ, जो कि t-तालिका में स्वतत्रंता के अंश 130 के 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रांतिक मान 1.97

तालिका 1— छात्र एवं छात्राओं के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर का विश्लेषण

चर	जेंडर	N	मध्यमान (*M*)	मानक विचलन (*SD*)	t-मान	*df*	CV (t)	सार्थकता स्तर
स्मार्टफ़ोन की लत	छात्र	65	64.97	12.50	1.19	130	1.978	P > 0.05 सार्थक नहीं
	छात्रा	67	62.52	11.83				

से कम है। जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।' को स्वीकृत किया जाता है। यह भी ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं के मध्यमानों की तुलना करने पर छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक स्मार्टफ़ोन की लत पाई गई। इसका कारण छात्रों की अपेक्षा अत्यधिक रूप में ऑनलाइन वीडियो गेम, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर स्थायी रूप से जुड़े रहने, अपडेट्स देखने एवं अन्य कार्यों में स्मार्टफ़ोन का प्रयोग हो सकता है।

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर का मध्यमान 62.45 तथा मानक विचलन 10.28 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार, निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर का मध्यमान 65.00 तथा मानक विचलन 13.14 प्राप्त हुआ। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर के मध्यमानों की तुलना t-टेस्ट (परीक्षण) से करने पर t-मान 1.23 प्राप्त हुआ, जो t-तालिका में स्वतत्रंता के अंश 130 के 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रांतिक मान 1.97 से कम है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को स्वीकृत किया जाता है। तालिका 2 में दिए गए मध्यमानों की तुलना करने पर यह भी ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत अधिक पाई गई। इसका कारण यह हो सकता है कि निजी विद्यालयों में आमतौर पर अधिकतम आधुनिकता तथा तकनीकी सुविधाएँ होती हैं। साथ ही, सभी विद्यार्थियों के पास स्मार्टफ़ोन होने के कारण भी सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत अधिक हो सकती है।

शोध अध्ययन का परिणाम

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर

तालिका 2— विद्यार्थियों के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर का विश्लेषण

चर	विद्यालय	N	मध्यमान *(M)*	मानक विचलन *(SD)*	t-मान	*df*	*CV (t)*	सार्थकता स्तर
स्मार्टफ़ोन की लत	सरकारी विद्यालय	66	62.45	10.28	1.23	130	1.978	P>0.05 सार्थक नहीं
	निजी विद्यालय	66	65.00	13.14				

में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया तथा मध्यमानों की तुलना करने पर यह भी परिणाम ज्ञात हुआ कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक स्मार्टफ़ोन की लत पाई गई।

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य स्मार्टफ़ोन की लत के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया तथा मध्यमानों की तुलना करने पर यह परिणाम ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन की लत अधिक पाई गई।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के परिणाम के आधार पर यह कहा जा सकता है कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में स्मार्टफ़ोन व्यसन का स्तर अधिक है। इसलिए छात्रों पर स्कूल प्रबंधन, शिक्षकों एवं अभिभावकों के द्वारा ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। जिससे छात्र स्मार्टफ़ोन का उपयोग कम करते हुए उचित समय प्रबंधन कर और वास्तविक जीवन के विकास की अन्य गतिविधियों में शामिल हो सकें। साथ ही, विद्यार्थियों को इंटरनेट एवं स्मार्टफ़ोन के सही उपयोग के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों की स्मार्टफ़ोन की लत से निपटने के लिए सार्थक नीतियाँ तथा कार्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं, जिसमें विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम, जैसे— सामाजिक गतिविधियों, सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं, एन.सी.सी., एन.एस.एस., स्काउटिंग-गाइडिंग एवं विभिन्न खेलों से संबंधित कार्यक्रम हो सकते हैं। इन कार्यक्रमों को विद्यालय स्तर पर आयोजित करने से प्रत्येक विद्यार्थी को सहभागिता करने के अवसर मिलेंगे, जिससे वे स्मार्टफ़ोन का उपयोग कम अथवा आवश्यक होने पर ही कर सकेंगे। इसलिए इस शोध अध्ययन के परिणाम निश्चित रूप से विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, प्रशासकों एवं शोधार्थियों के लिए सहायक सिद्ध होंगे।

संदर्भ

अग्रवाल, पूजा और अन्य. 2020. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्मार्टफ़ोन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेशनल एजुकेशनल एपलायड रिसर्च जर्नल*. वर्ष 04, अंक 09, सितंबर 2020.

कगन, ओ. और कोका बैन्नट. 2020. इवेल्यूएशन ऑफ़ हाईस्कूल स्टूडेंट्स स्मार्टफ़ोन एडिक्शन एंड इन्सोमनिया लेवल. *जर्नल ऑफ़ टर्किश स्लीप मैडिसीन*. गेलनस पब्लिशिंग हाउस. DOI: 10.4274/jtsm.gelenos.2020.84755

घोष, त्रिशन एवं अन्य. 2021. ए स्टडी ऑन स्मार्टफ़ोन एडक्शिन एंड इट्स इफैक्ट्स ऑन स्लीप क्वालिटी अमंग नर्सिंग स्टूडेंट्स इन अ म्यूनिसिपैलिटी टाऊन ऑफ वेस्ट बेंगॉल. *जर्नल ऑफ़ फैमिली मेडिसिन एंड प्राइमरी केयर*. 10 (1) पृष्ठ संख्या 378–386, जनवरी 2021, DOI: 10.4103/jfmpc.jfmpc_1657_20

जाउड़े, एलिया अवि एवं अन्य. 2020. *स्मार्टफ़ोन, सोशल मीडिया यूज़ एंड यूथ मेंटल हेल्थ. कैनेडियल मैडिकल एसोसिएशन जर्नल;* नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन; 192(6) link-ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/pmc70126221

डेवी, एस. और ए. डेवी. 2014. असेसमेंट ऑफ स्मार्टफ़ोन एडिक्शन इन इंडियन एडोलेसेंट्स: ए मिक्स्ड मैथड स्टडी बाए सिसटमैटिक-रिव्यू एंड मेटा-एनालाइसिस एप्रौच. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ प्रिवेंटिव मेडिसिन*. वर्ष 5, अंक 12, दिसंबर.

डिसूज़ा, जून बी. एंव अन्य. 2019. स्मार्टफ़ोन एडिक्शन इन रिलेशन टू एकेडमिक परफोर्मेंस ऑफ स्टूडेंट्स इन थाईलैंड. जर्नल आफॅ कम्युनिटी डेवेलमपेंट रिसर्च. 13(2).

भंडेरी, डीजे. और अन्य. 2021. स्मार्टफ़ोन यूज़ एंड एडिक्शन अमंग एडोलेसेंट्स इन द ऐज ग्रुप ऑफ़ 16–19 इयर. *इंडियन जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी मेडिसिन*. पृष्ठ संख्या 88–92. https://www.ijcm.org.in/articlecited.asp? ISSN=0970-

मरुदूमी एवं अन्य 2020. द इम्पैक्ट ऑफ *स्मार्टफ़ोन एडिक्शन ऑन एकेडमिक परफ़ॉर्मेंस ऑफ़ हायर एजुकेशन स्टूडेंट्स* 10 जनवरी, 2023 *mpra.ub.uni-muenchen.de/104485/ से प्राप्त किया*

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf से प्राप्त किया गया।

मोअज़्ज़म. मो. 2019. इम्पैक्ट ऑफ मोबाईल फोन यूसेज ऑन एकेडमिक परफ़ॉर्मेंस. वर्ल्ड साईटिफिक न्युज़: एन इंटनेशनल साईटिफिक जर्नल EISSN2392-2192. पृष्ठ संख्या 164–180. http://www.ijpam.eu से प्राप्त किया गया.

ली, एसपी. एवं अन्य. 2021. स्मार्टफ़ोन यूज़ एंड ऐडिक्शन अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन कुंआंतन, मलेशिया. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ केयर स्कोलर्स*. वर्ष 4(1),

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर*. 2021–22. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए, भाग-1. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/AAC-Higher-Secondary-English-10-2-22-1.pdf.

विजयश्री और मसौद अंसारी. 2021. *मैनुअल फ़ॉर स्मार्टफ़ोन एडिक्शन स्केल* (एस.ए.एस.-वी.ए.एम.), नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा, उत्तर प्रदेश.

सिम; सनसूक एवं बैंग, मीरन. 2019. स्मार्टफ़ोन एडिक्शन, सेल्फ-कंट्रोल एंड लर्निंग फॅला ऑफ नर्सिंग स्टूडेंट्स. मेडिको लीगल अपडेट. एन इटरनेशनल जर्नल. अंक 19(11).

सिनसोमसैक, नेपासफोल और वैफोट कुलाचाई. 2018. ए स्टडी ऑन द इम्पैक्ट्स ऑफ स्मार्टफ़ोन एडिक्शन. एडवांकिस इन सोशल साईंस, एजुकेशन एंड ह्यमैनिटीज़ रिसर्च (ASSE HR): 15वीं इंटरनेशनल सिम्पोसियम ऑन मैनेजमेंट (15th Internation symposium on managment -INSYMA 2018).

सिंह, रश्मि. 2012. *समस्याग्रस्त इंटरनेट उपयोग एवं भारतीय परिदृश्य*. मनोविज्ञान विभाग महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणासी. https://www.mgkvp.ac.in/Uploads/Lectures/30/7131.pdf

——. 2018. स्मार्टफ़ोन की लत, अकेलापन तथा अवसाद के संबंध का मनोवैज्ञानिक अध्ययन. *मानविकी*. IX(II).

एसईओ, एस-एस. 2018. मिडिल स्कूल नेटवर्किंग सेवा में स्मार्टफ़ोन का उपयोग और स्मार्टफ़ोन की लत तथा गेम का उपयोग. स्वास्थ्य मनोविज्ञान ओपन. 1–15। (2015)

सुमति और अन्य. 2018. उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के बीच अकादमिक प्रदर्शन पर स्मार्टफ़ोन के उपयोग के प्रभाव की समीक्षा. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ प्योर एंड एप्लाइड मैथमेटिक्स*. वॉल्यूम 118, नंबर 8 2018, पृष्ठ संख्या 1–7.

सेंटिलियन और रामोस. 2021. एडिक्शन टू द स्मार्टफ़ोन इन हाईस्कूल स्टूडेंट्स: हाऊ इट्स इन डेली लाइफ? कंटम्पेरी एजुकेशनल टैक्नोलॉजी. वर्ष 13, अंक-2, e-ISSN:1309-517X.

सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

शशी यादव*
सुमित गंगवार**

यह शोध पत्र सेवा-पूर्व अध्यापकों (बी.एड. प्रशिक्षुओं) की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के शोध अध्ययन पर आधारित है। इसके अतिरिक्त आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र के आधार पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया था, जो वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि पर आधारित था। इस अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) में नामांकित 62 सेवा-पूर्व अध्यापकों (बी.एड. प्रशिक्षुओं) का चयन प्रासंगिक प्रतिदर्शन प्रविधि द्वारा किया गया था। शोध संबंधित आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए शोधार्थी द्वारा पाँच बिंदु लिकर्ट मापनी पर आधारित स्व-निर्मित बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया था। इस मापनी में बहुसांस्कृतिक शिक्षा की प्रकृति, उसकी आवश्यकता तथा औचित्य को ध्यान में रखते हुए कुल 26 कथनों (19 धनात्मक तथा 7 ऋणात्मक) को सम्मिलित किया गया था। इस मापनी द्वारा एकत्रित आँकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधार्थी द्वारा सांख्यिकीय प्रविधियों के अंतर्गत प्रतिशत, विचरणशीलता गुणांक, स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण तथा मान-व्हिटनी U परीक्षण प्रविधियों का उपयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषणोपरांत शोध निष्कर्ष के रूप में ज्ञात हुआ कि सेवा-पूर्व अध्यापकों (बी.एड. प्रशिक्षुओं) की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। साथ ही, आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र के आधार पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। इस शोध परिणाम के आलोक में सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अपनी सकारात्मक अभिवृत्ति की सहायता से भावी सेवाकालीन शिक्षा में शिक्षण-अधिगम पारिस्थितिकी के विभिन्न घटकों यथा पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण-अधिगम विधियों, आकलन प्रविधियों इत्यादि को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के दृष्टिकोण से परिवर्तन एवं परिमार्जन करके विद्यार्थी-केंद्रित बनाने में सक्षम हो सकेंगे।

भारत सरकार ने इक्कीसवीं सदी के भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु भारतीय शिक्षा में बदलाव करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू किया है। इस नीति में शिक्षा के सभी स्तरों

* *विद्यार्थी*, एम.एड., शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 244001
** *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226007

की गुणवत्ता संवर्धन हेतु अनेक अनुशंसाएँ की गई हैं। भारत जैसे बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषिक देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच को सुनिश्चित करने के लिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कई अनुशंसाएँ की गई हैं, जिससे भारत की सांस्कृतिक तथा भाषिक वैविध्यता को सम्मान प्रदान करते हुए वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास का सुनिश्चयन किया जा सके। इस नीति के मूलभूत सिद्धांतों में इस बात की महत्ता को स्पष्ट किया गया है कि बहुभाषिकता और अध्ययन-अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन दिए जाने के साथ-साथ सभी पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र और नीति में स्थानीय संदर्भ की विविधता एवं स्थानीय परिवेश का सार्थक समावेशन करना चाहिए। समाज तथा संस्कृति को भारतीय जड़ों और गौरव से बाँधे रखने के लिए शिक्षा में भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति तथा ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं से प्रेरित होते हुए उन्हें सम्मिलित करना चाहिए। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के बिंदु 2.8 में भी इस बात को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है कि शिक्षा में बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषिकता को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त बिंदु 4.11 से बिंदु 4.23 में भी इस संप्रत्यय पर बल दिया गया है कि शिक्षा की गुणवत्ता के उन्नयन में बहुभाषिकता तथा बहुसांस्कृतिकता सकारात्मक सहयोग देती है। ऐसे में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रत्येक पक्ष में बहुभाषिकता तथा बहुसांस्कृतिकता को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए विद्यार्थियों को सीखने के अवसर देने चाहिए।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा, शिक्षा का प्रकार्यात्मक प्रारूप है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ विविधता में एकता एक संवैधानिक एवं सामाजिक मूल्य है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षण-अधिगम की उत्पत्ति हुई, जो प्राचीनकाल से ही भारतीय दर्शन पर आधारित है, जिसमें सामाजिक न्याय, समता एवं समानता, विविधता तथा बहुभाषाई एवं बहुसांस्कृतिक समावेशी अधिगम-शिक्षण निहित है।

विभिन्न शैक्षिक विद्वान सांस्कृतिक विविधता को विद्यालयों एवं शैक्षिक संस्थानों की शैक्षिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं। बहुसांस्कृतिक शिक्षा, शिक्षण का एक तरीका है, जो विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को स्कूल में यथासंभव सफल होने में मदद करता है। यह सुनिश्चित करने की कोशिश करता है कि सभी को सीखने का समान अवसर मिले, चाहे उनकी जाति, क्षेत्रीयता, जेंडर या संस्कृति कुछ भी हो। इसलिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा विद्यार्थियों को सांस्कृतिक वातावरण से जोड़ने एवं सीखने का सार्थक उपागम है।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा के लक्ष्य

बहुसांस्कृतिक शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य बच्चों को उनके व्यक्तिगत जेंडर, जाति, वर्ग और संस्कृति के आधार पर सकारात्मक पहचान बनाने में मदद करना है। इससे उन्हें मज़बूत सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध विकसित करने में मदद मिल सकती है तथा यह भी सिखाती है कि विविध सांस्कृतिक वातावरण में कैसे रहना है?

भारत में विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को मुख्यधारा की कक्षा में शामिल करने पर लगभग सभी शिक्षा नीतियों एवं आयोगों में अनुशंसा की गई है, जिसके माध्यम से अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों द्वारा सेवा-पूर्व अध्यापकों एवं सेवाकालीन अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। अध्यापक शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009* में भी अध्यापकों को विभिन्न संस्कृतियों से आने वाले लोगों के साथ काम करने के कौशल सिखाने और सांस्कृतिक शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यचर्या में एकीकृत करने पर बल दिया गया है।

लोगों का धार्मिक विश्वास, जीवनशैली व सामाजिक संबंधों की समझ एक-दूसरे से बहुत अलग है। सभी समुदायों को सहअस्तित्व तथा समान रूप से समृद्ध होने का अधिकार है और शिक्षा व्यवस्था को भी हमारे समाज में निहित इस सांस्कृतिक विविधता के अनुरूप होना चाहिए। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में उल्लेखित है कि अध्यापकों को पाठ्यचर्या को तीन मुख्य सिद्धांतों (प्रासंगिकता, सुसंगतता और एकीकरण) के आधार पर निर्मित करना चाहिए। विभिन्न संस्कृतियों से आने वाले विद्यार्थियों को पढ़ाते समय ये सिद्धांत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि ये सिद्धांत अध्यापकों को यह सुनिश्चित करने में मदद करते हैं कि विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले पाठ विद्यार्थियों के जीवन के लिए प्रासंगिक हैं और पाठ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में स्पष्ट रूप से उल्लेखित किया गया है कि—

- बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं, जब वे विद्यालय में सीखी गई बातों का उपयोग अपने वास्तविक जीवन में करते हैं।
- हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हमारी पाठ्यचर्या बच्चे को सभी क्षेत्रों में विकसित होने के अवसर प्रदान करे।
- बच्चों में ऐसी पहचान विकसित करने पर बल दिया जाए जो राष्ट्रीय सरोकारों को ध्यान में रखती है और प्रकृति में लोकतांत्रिक हो।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और यूनेस्को 2019 अनुशंसा करते हैं कि अध्यापकों को अपनी कक्षाओं में बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए, क्योंकि यह एक बहुसांस्कृतिक समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा का विचार हाल के वर्षों में अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि विद्यालयों और अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में यह माना जाने लगा है कि यह विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने में मदद करने का एक मूल्यवान तरीका है। *कमीशन ऑन मल्टी कल्चर एजुकेशन ऑफ़ द अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ कालेजिस फ़ॉर टीचर एजुकेशन* ने बहुसांस्कृतिक शिक्षा के संदर्भ में निम्नलिखित तीन मुख्य बिंदु बताएँ हैं (बैपटिस्ट और बैपटिस्ट, 1980)—

- सांस्कृतिक विविधता एक मूल्यवान संपत्ति है, जिसका उपयोग कक्षाओं को समृद्ध बनाने के लिए किया जा सकता है।
- बहुसांस्कृतिक शिक्षा विभिन्न संस्कृतियों की समझ विकसित करके उनकी स्वीकृति प्रदान करने में सहायक होती है, जो प्रतिफल आधारित अधिगम के लिए आवश्यक है।

- अध्यापकों को सांस्कृतिक विविधता के सभी पहलुओं से अवगत होने की आवश्यकता है ताकि सभी विद्यार्थियों के लिए एक स्वागत योग्य और सहायक वातावरण बनाया जा सके।

सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रयास

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प) सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में विभिन्न ठोस कदम उठा रही है। परिषद् अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के संबंध में केंद्र तथा राज्य सरकारों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं विश्वविद्यालयों को सलाह देने के साथ-साथ अध्यापक शिक्षा से जुड़ी सभी प्रकार की पाठ्यचर्या निर्धारित करके समय-समय पर नूतन पाठ्यक्रम आरंभ करती है। संस्थानों के मानक एवं मानदण्ड विकसित करने तथा उनके अनुसार अध्यापक शिक्षा संस्थानों के संचालन की निगरानी कर अध्यापक शिक्षा की गुणवता सुनिश्चित करती है। इसके अतिरिक्त परिषद् केंद्र सरकार द्वारा अध्यापक शिक्षा के संबंध में लिए गए निर्णयों को क्रियान्वित भी करती है। साथ ही, अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अंतराष्ट्रीय स्तर पर संबंध स्थापित करके नवाचारों को बढ़ावा देकर सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में अपना योगदान दे रही है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में विभिन्न ठोस कदम उठा रही है। यह प्रारंभिक तथा माध्यमिक स्तर की अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य निश्चित करने के साथ-साथ पाँच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की सहायता से सेवा-पूर्व एवं सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम संचालित करती है। यह परिषद् पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल के माध्यम से माध्यमिक व्यावसायिक शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या एवं अधिगम-सामग्री तथा माध्यमिक व्यावसायिक अध्यापक प्रशिक्षण प्रदान करती है। वर्तमान समय में यह परिषद् डिजिटल शिक्षा के विभिन्न माध्यमों, जैसे— ई-पाठशाला, दीक्षा, निष्ठा तथा स्वयंप्रभा के माध्यम से सेवा-पूर्व एवं सेवकालीन अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में अपना योगदान दे रही है। इसके अतिरिक्त परिषद् अध्यापक शिक्षा के लिए विभिन्न प्रकार की पाठ्यपुस्तकों, हैंडबुक, संसाधन सामग्री, शोध पत्रिकाओं आदि द्वारा अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता को अभिवृद्धित कर रही है।

शोध का औचित्य

भारत एक बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषिक देश है। शिक्षा तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बहुसांस्कृतिकता तथा बहुभाषिकता का विशिष्ट महत्व होता है। वर्तमान समय में विश्व के वे देश जिनके समाजों में बहुसांस्कृतिकता तथा बहुभाषिकता की विशेषता देखने को मिलती है, वे अपनी पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण-अधिगम विधियों, आकलन प्रविधियों इत्यादि में इसके अनुरूप परिवर्तन एवं परिमार्जन कर रहे हैं। ऐसे में यह जानना अति आवश्यक हो जाता है कि भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में शिक्षा के भावी अध्यापकों का बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण कैसा है? शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन में संबंधित साहित्य की समीक्षा के दौरान यह पाया कि भारत में अभी बहुसांस्कृतिक

शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक शोध अध्ययन करने की आवश्यकता है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में अधिकांश शोध अध्ययन विषयवस्तु के विश्लेषण पर आधारित थे। अत: शोधार्थी को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में इस अनुभवपरक शोध अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई, जिसमें उन्होंने सेवा-पूर्व अध्यापकों की आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र को ध्यान में रखकर बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयास किया।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

1. **सेवा-पूर्व अध्यापक**— इस शोध अध्ययन में सेवा-पूर्व अध्यापकों का तात्पर्य शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद, में अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के बी. एड. के कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों अर्थात सेवा-पूर्व अध्यापकों से है।
2. **बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति**— बहुसांस्कृतिक शिक्षा विभिन्न समूहों के इतिहास, संस्कृतियों और योगदान के बारे में विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए विकसित शैक्षिक विधियों का एक समूह है। हमारी वे विशेष वृत्तियाँ, जो किसी व्यक्ति, पदार्थ, समस्या, परिस्थिति या विचार के प्रति हमारे आचरण का स्वरूप निर्धारित करती हैं, अभिवृत्ति कहलाती हैं। इस शोध अध्ययन में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तात्पर्य शिक्षा संकाय मुरादाबाद में अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के बी.एड. के कार्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थी शिक्षकों अर्थात सेवा-पूर्व अध्यापकों के 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' पर प्राप्त प्राप्तांकों से है।

शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे—

- सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करना।
- अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की शोध परिकल्पनाएँ इस प्रकार थीं—

- सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है।
- ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है।
- अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है, जिसके अंतर्गत सर्वेक्षण शोध विधि (क्रॉस-सेक्शनल सर्वे

डिज़ाइन) का उपयोग किया गया था। इस अभिकल्प में शोधार्थी एक समय पर एक ही बार में शोध से संबंधित समस्त आँकड़ों का एकत्रीकरण करता है। इस अभिकल्प की सहायता से शोध अध्ययन में चयनित प्रतिदर्श की वर्तमान अभिवृत्तियों या अभ्यासों को ज्ञात किया जा सकता है (क्रेसवेल, 2012)।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर

इस शोध अध्ययन में सेवा-पूर्व अध्यापकों (बी.एड. प्रशिक्षुओं) की आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र को गुण (*एट्रिब्यूट*) चर और बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को निकष (*क्राइटेरियन*) चर के रूप में प्रयुक्त किया गया था।

प्रतिदर्श तथा प्रतिदर्शन प्रविधि

इस शोध अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के अंतर्गत संचालित बी. एड. कार्यक्रम के अकादमिक सत्र 2021–23 तथा 2022–24 में अध्ययनरत सभी सेवा-पूर्व अध्यापकों को सम्मिलित किया गया था। शोध से संबंधित आँकड़ों के एकत्रीकरण के दिन (दिनाँक 02.02.2023) सत्र 2021–23 तथा 2022–24 में क्रमशः 25 तथा 43 सेवा-पूर्व अध्यापक उपस्थित थे। इनमें से सत्र 2021–23 के 21 तथा सत्र 2022–24 के 41 सेवा-पूर्व अध्यापकों ने ही अभिवृत्ति मापनी भरकर शोधार्थी को दी थी। इस प्रकार अंतिम रूप से चयनित प्रतिदर्श में सेवा-पूर्व अध्यापकों की कुल संख्या 62 थी, जिसका चयन असंभाविता प्रतिदर्शन विधि (Non-Probability Sampling Method) के अंतर्गत प्रासंगिक प्रतिदर्शन प्रविधि (Accidental or Incidental Sampling Technique) की सहायता से किया गया था। शोध में प्रयुक्त चरों के आधार पर अंतिम रूप से चयनित प्रतिदर्श का पुनर्वितरण तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी ने सेवा-पूर्व अध्यापकों से शोध संबंधित मात्रात्मक आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए पाँच बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित 26 कथनों (19 धनात्मक तथा 7 ऋणात्मक) से युक्त स्व-निर्मित 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' का उपयोग किया था। 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' की प्रत्यक्ष/आमुख वैधता (Face Validity) तथा अंतर्विषयक वैधता (Content Validity) का निर्धारण विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों में कार्यरत सात शिक्षक-प्रशिक्षकों (विषय विशेषज्ञों) की सहायता से किया गया। इसके अतिरिक्त विश्वसनीयता (आतंरिक संगतता विधि) का निर्धारण विभक्तार्द्ध विश्वसनीयता विधि (Split-half Reliability Method) के अंतर्गत स्पीयरमैन-ब्राउन प्रोफेसी सूत्र (Spearman-Brown Prophecy

तालिका 1— शोध में प्रयुक्त चरों के आधार पर प्रतिदर्श का विवरण

क्र. सं.	गुण चर	समूह	संख्या (N)	कुल संख्या
1.	आवासीय पृष्ठभूमि	ग्रामीण	32	62
		शहरी	30	
2.	अकादमिक सत्र	2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर)	41	62
		2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर)	21	

Formula) की सहायता से किया गया, जिसका मान + 0.53 प्राप्त हुआ।

प्रदत्त संकलन प्रक्रिया

इस शोध अध्ययन से संबंधित प्रदत्तों के एकत्रीकरण के लिए शोधार्थी ने सर्वप्रथम शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के प्राचार्य से अपने शोध अध्ययन से अवगत कराया। अवगत कराने के पश्चात, प्रदत्तों के एकत्रीकरण के लिए अनुमति प्राप्त की। उसके बाद शोधार्थी ने शोध अध्ययन में चयनित सेवा-पूर्व अध्यापकों से तादातम्य स्थापित करते हुए शोध के विषय में बताया। साथ ही, उनसे 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' के कथनों पर प्रतिक्रिया देने के लिए अनुरोध किया। इसके अतिरिक्त उनको यह भी बताया कि आपसे प्राप्त जानकारी को गोपनीय रखते हुए इसका उपयोग मात्र शोध अध्ययन के लिए किया जाएगा।

फलांकन प्रक्रिया

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सेवा-पूर्व अध्यापकों पर 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' के प्रशासन करने के पश्चात प्राप्त शोध संबंधी मात्रात्मक आँकड़ों का फलांकन, फलांकन कुंजी की सहायता से किया गया। 'बहुसांस्कृतिक शिक्षा अभिवृत्ति मापनी' के धनात्मक कथनों पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत पर दी गई प्रतिक्रियाओं को क्रमशः 5, 4, 3, 2 तथा 1 अंक एवं ऋणात्मक कथनों पर दी गई प्रतिक्रियाओं को क्रमशः 1, 2, 3, 4 तथा 5 अंक प्रदान किए गए। इस प्रकार सेवा-पूर्व अध्यापकों द्वारा मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों का प्रसार 26–130 अंकों के मध्य था।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियाँ

इस शोध अध्ययन में समस्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधार्थी द्वारा सांख्यिकी प्रविधियों के अंतर्गत प्रतिशत, विचरणशीलता गुणांक, मान व्हिटनी U परीक्षण तथा स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का उपयोग किया गया था।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

- शोध अध्ययन के पहले उद्देश्य 'सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन' के लिए सभी सेवा-पूर्व अध्यापकों से प्राप्त आँकड़ों को सांख्यिकी प्रविधियों के अंतर्गत माध्य, मानक विचलन, प्रतिशत तथा विचरणशीलता गुणांक की सहायता से विश्लेषित किया गया, जिसका परिणाम तालिका 2 तथा 3 (पृष्ठ संख्या 67) में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2— बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति समस्त सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति

क्र. सं.	प्राप्तांकों की स्थिति	सेवा-पूर्व अध्यापकों की संख्या (N)	प्रतिशत %	अभिवृत्ति का स्तर
1.	110–130	24	38.70	अत्यधिक उच्च स्तर
2.	89–109	38	61.30	उच्च स्तर
3.	68–88	00	00.00	औसत स्तर
4.	47–67	00	00.00	निम्न स्तर
5.	26–46	00	00.00	अत्यधिक निम्न स्तर
कुल		62	100 %	–

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति कुल 62 सेवा-पूर्व अध्यापकों में से 38 सेवा-पूर्व अध्यापकों को 89 से 109 प्राप्तांकों के मध्य प्राप्तांक प्राप्त हुए हैं। वहीं 24 सेवा-पूर्व अध्यापकों को 110 से 130 प्राप्तांकों के मध्य प्राप्तांक प्राप्त हुए, जबकि किसी भी सेवा-पूर्व अध्यापक को 88 तथा इससे कम प्राप्तांक प्राप्त नहीं हुए हैं। चूँकि चयनित न्यादर्श का 61.30 प्रतिशत भाग बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के उच्च स्तर से संबंधित है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। अतः इस परिप्रेक्ष्य में दिशाई परिकल्पना सेवा-पूर्व अध्यापकों में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है, निरस्त नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का माध्य तथा मानक विचलन क्रमशः 4.123 तथा 0.428 है, जो यह दर्शाता है कि सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा के पक्ष में अपनी उच्च स्तर की सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। इसी प्रकार माध्य पर आधारित विचरणशीलता गुणांक 10.38 प्रतिशत है। यह मान बहुत कम है जोकि इस तथ्य का द्योतक है कि सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। इसी प्रकार (4.123/5)*100 = 82.46 प्रतिशत अर्थात सेवा-पूर्व अध्यापकों के द्वारा दी गईं प्रतिक्रियाएँ 10.38 प्रतिशत विचलन के साथ 82.46 प्रतिशत बहुसांस्कृतिक शिक्षा के पक्ष में हैं। इसलिए समेकित रूप से यह कहा जा सकता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है।

इस शोध अध्ययन का प्रथम उद्देश्य 'सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन' करना था। इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के उपरांत शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। इस परिणाम की पुष्टि यिल्दिरिम और तेज़िस (2016) और टोरे (2020) के शोध परिणामों से भी होती है। इन शोधार्थियों ने विभिन्न स्तरों पर कार्यरत अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को जानने के लिए शोध अध्ययन किए और पाया कि विभिन्न स्तरों पर कार्यरत अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है।

इस शोध अध्ययन के इस परिणाम का प्रमुख कारण यह हो सकता है कि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में बहुसांस्कृतिक शिक्षा पर बल दिया गया है तथा कक्षा के स्वरूप को बहुसांस्कृतिक बनाने की बात कही गई है।

तालिका 3— सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का माध्य, मानक विचलन तथा विचरणशीलता गुणांक

समूह	संख्या (N)	माध्य	मानक विचलन	विचरणशीलता गुणांक
सेवा-पूर्व अध्यापक	62	4.123	0.428	10.38%

शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में बी.एड. कार्यक्रम के लिए विकसित पाठ्यचर्या में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के संप्रत्यय तथा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* को सम्मिलित किया गया है। सेवा-पूर्व अध्यापकों को कक्षागत शिक्षण-अधिगम में ऐसा वातावरण प्राप्त होता है जहाँ प्रत्येक संस्कृति के विद्यार्थियों की संस्कृति को आदर-सम्मान दिया जाता है। साथ ही, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पाठ्यचर्या को इस प्रकार नियोजित एवं क्रियान्वित किया जाता है कि सभी सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा, इसकी आवश्यकता एवं महत्व से परिचित हो जाएँ। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में ये सभी अभ्यास सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च होने के कारण हो सकते हैं।

- शोध अध्ययन के दूसरे उद्देश्य ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए सभी सेवा-पूर्व अध्यापकों से प्राप्त आँकड़ों को आवासीय पृष्ठभूमि (ग्रामीण तथा शहरी) के आधार पर व्यवस्थित करके सर्वप्रथम स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जाँच की गई। इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी सभी अभिधारणाओं के संतुष्ट हो जाने के बाद स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का विवरण तालिका 4 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सेवा-पूर्व अध्यापकों की आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करने पर यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण सेवा-पूर्व अध्यापकों के अभिवृत्ति फलांकों का माध्य 105.31 तथा मानक विचलन 6.15 है। इसी प्रकार शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों के अभिवृत्ति फलांकों का माध्य 109.20 तथा मानक विचलन 10.01 है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों के अभिवृत्ति फलांकों का परिकलित स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान 1.855 है, जिसका स्वतंत्र्यांश 60 पर सार्थकता मान 0.069 है। यह मान 0.01 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है, इसलिए सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा

तालिका 4— सेवा-पूर्व अध्यापकों की आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान

आवासीय पृष्ठभूमि	संख्या (N)	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	t-मान	p-मान	सार्थकता स्तर	टिप्पणी
ग्रामीण	32	105.31	6.15	60	1.855	0.069	0.01	p-मान सार्थक नहीं है।
शहरी	30	109.20	10.01					

के प्रति ग्रामीण सेवा-पूर्व अध्यापकों तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह स्पष्ट होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनकी आवासीय पृष्ठभूमि का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। तालिका 4 में प्रदर्शित ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति फलांकों के माध्य क्रमशः 105.31 तथा 109.20 है, जो लगभग समान हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान है।

इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के उपरांत शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर एकसमान है। इस शोध परिणाम की पुष्टि डबबेल्ड और अन्य (2019) के शोध परिणाम से होती है। इन शोधार्थियों का शोध परिणाम भी इस तथ्य की पुष्टि करता है कि विद्यालयी स्तर पर कार्यरत ग्रामीण तथा शहरी अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा प्रत्यक्षण में सार्थक अंतर नहीं है। इस शोध परिणाम के प्रमुख कारण ये हो सकते हैं कि शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में ग्रामीण तथा शहरी सेवा-पूर्व अध्यापकों के लिए शैक्षिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश एकसमान है। साथ ही, इन सेवा-पूर्व अध्यापकों की कक्षा में अध्ययन-अध्यापन के दौरान अध्यापकों द्वारा भी आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर पक्षपात नहीं किया जाता है। शिक्षण सामग्री को आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर तटस्थ मानकर सभी सेवा-पूर्व अध्यापकों को अधिगम के समान तथा पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाते हैं।

- शोध अध्ययन के तीसरे उद्देश्य अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए सेवा-पूर्व अध्यापकों से प्राप्त आँकड़ों को अकादमिक सत्र के आधार पर व्यवस्थित किया गया। उसके उपरांत स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जाँच की गई। अभिधारणाओं की जाँच करते समय देखा गया कि इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी एक अभिधारणा 'दोनों समूहों के प्रसरणों में समजातीयता' की अभिधारणा असंतुष्ट हो गई। अतः अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के माध्य फलांकों की जगह माध्य रैंकों की तुलना करने के लिए शोधार्थी द्वारा अप्राचलिक सांख्यिकी अर्थात मान-व्हिटनी U परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया। मान-व्हिटनी U परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का विवरण तालिका 5 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 5 (पृष्ठ संख्या 70) के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति सेवा-पूर्व अध्यापकों के अकादमिक सत्र के आधार पर अभिवृत्ति फलांकों के माध्य रैंकों की तुलना करने पर यह ज्ञात होता कि मान-व्हिटनी U परीक्षण का मान 352.50 है, जिसका सार्थकता मान 0.245 है। यह मान 0.01 सार्थकता स्तर के

तालिका 5— सेवा-पूर्व अध्यापकों के अकादमिक सत्र के आधार पर अभिवृत्ति फलांकों का मान-व्हिटनी U परीक्षण का मान

अकादमिक सत्र	संख्या (N)	माध्य रैंक	रैंकों का योग	मान-व्हिटनी U मान	p-मान	टिप्पणी
2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर)	41	29.60	1213.50	352.50	0.245	p-मान सार्थक नहीं है।
2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर)	21	35.21	739.50			
कुल	62					

मान से अधिक है, अतः सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना अकादमिक सत्र 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों के माध्य रैंकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की अभिवृत्ति के माध्य रैंकों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह स्पष्ट होता है कि सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अकादमिक सत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 5 में प्रदर्शित 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति फलांकों के माध्य रैंक क्रमशः 29.60 तथा 35.21 हैं, जो लगभग समान हैं। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है 2022–24 (द्वितीय सेमेस्टर) तथा 2021–23 (चतुर्थ सेमेस्टर) के सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान है।

इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि अकादमिक सत्र के आधार पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एकसमान थी। इस परिणाम के प्रमुख कारण ये हो सकते हैं कि शिक्षा संकाय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में बी.एड. में प्रवेश के पश्चात सेवा-पूर्व अध्यापकों का उन्मुखीकरण किया जाता है, इस उन्मुखीकरण में पूरी पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर विस्तृत चर्चा की जाती है। साथ ही, उनके इसलिए विकसित पाठ्यचर्या में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के संप्रत्यय तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सम्मिलित किया गया है। दोनों अकादमिक सत्रों में पढ़ाई जाने वाली शिक्षण सामग्री इस प्रकार नियोजित तथा क्रियान्वित की जाती है कि सभी सेवा-पूर्व अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा तथा अध्यापन वृत्ति में इसकी महत्ता से परिचित हो सकें। दोनों अकादमिक सत्रों के सेवा-पूर्व अध्यापकों को जो शिक्षक-प्रशिक्षक पढ़ाने आते थे, वे अपनी कक्षा की अधिगम पारिस्थितिकी में प्रत्येक सेवा-पूर्व अध्यापक की संस्कृति को महत्वपूर्ण स्थान देते थे।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के परिणाम यह सिद्ध करते हैं की सेवा-पूर्व अध्यापकों में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के

प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है। साथ ही, आवासीय पृष्ठभूमि तथा अकादमिक सत्र के आधार पर सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। इस शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, जिनमें निर्माता पाठ्यचर्या नीति-निर्धारक, पुस्तक-लेखक, अध्यापक तथा शिक्षा से जुड़े अन्य हितधारक हो सकते हैं, जो अग्रलिखित हैं—

पाठ्यचर्या निर्माताओं के लिए

इस शोध अध्ययन में सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च पाया गया है। यह शोध अध्ययन पाठ्यचर्या निर्माताओं के लिए यह अनुशंसित करता है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर अध्यापन कार्य के लिए शिक्षित हो रहे सेवा-पूर्व अध्यापकों की पाठ्यचर्या में बहुसांस्कृतिक शिक्षा को सम्मिलित करके इसके अभ्यास को सुनिश्चित किया जा सके।

पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए

इस शोध अध्ययन के परिणाम पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए भी सहायक सिद्ध होंगे। भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में बहुसांस्कृतिक शिक्षा की बहुत आवश्यकता है, इसलिए पाठ्यपुस्तकों द्वारा विद्यार्थियों तथा अध्यापकों को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के विषय में जागरूक किया जा सकता है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा को ध्यान में रखकर लेखकों द्वारा उसी प्रकार की सामग्री का निर्माण किया जाना चाहिए, जिसमें प्रत्येक संस्कृति को सम्मान दिया जाए। साथ ही, पुस्तक में संकलित विषय-सामग्री में किसी भी प्रकार का सांस्कृतिक पूर्वाग्रह न हो।

अध्यापकों के लिए

इस शोध अध्ययन में सेवा-पूर्व अध्यापकों की बहुसांस्कृतिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च पाया गया है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा की महत्ता के प्रति जागरूक एवं सकारात्मक दृष्टि रखने वाले ये सेवा-पूर्व अध्यापक अपने सहकर्मियों को बहुसांस्कृतिक शिक्षा के बारे में बताएँगे। साथ ही, भविष्य में कक्षा में इस ज्ञान को अभ्यास में भी लाएँगे, जिससे कक्षा में शिक्षा का समावेशी और अनुकूल वातावरण तैयार किया जा सकेगा।

विद्यार्थियों के लिए

बहुसांस्कृतिक शिक्षा की महत्ता के प्रति जागरूकता एवं सकारात्मक दृष्टि रखने वाले अध्यापक अपनी कक्षा में अध्यापन के दौरान विद्यार्थियों को भारतीय एवं स्थानीय संस्कृति के बारे में बताएँगे, जिससे विद्यार्थियों में संस्कृति के प्रति जागरूकता विकसित होगी। अध्यापक संस्कृतिक पूर्वाग्रहों से बचकर अपनी कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को नियोजित तथा क्रियान्वित करेगा। इससे अध्यापकों को विद्यार्थियों में सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों एवं संवैधानिक मूल्यों को विकसित करने में सहायता मिलेगी।

अन्य शोधार्थियों के लिए

इस शोध अध्ययन की प्रक्रिया तथा परिणाम शिक्षा, मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र से जुड़े उन शोधार्थियों के लिए सहायक सिद्ध होंगे, जो बहुसांस्कृतिक शिक्षा के क्षेत्र में शोध अध्ययन कर रहे हैं।

संदर्भ

क्रेसवेल, जे. डब्ल्यू. 2012. *एजुकेशनल रिसर्च*. पाँचवाँ संस्करण. पियर्सन एजुकेशन, बोस्टन.

डबबेल्ड, ए. और अन्य. 2019. टीचर्स मल्टीकल्चरल एटीट्यूडस एंड पर्सेपशन ऑफ़ स्कूल पॉलिसी एंड स्कूल क्लाइमेट इन रिलेशन टू बर्नआउट. *इंटरकल्चरल एजुकेशन*. 30(6). पृष्ठ संख्या 599–617. DOI: 10.1080/14675986.2018.1538042

टोरे, इ. 2020. एक्ज़ामिनिंग टीचर्स एटीट्यूडस टुवर्ड्स मल्टीकल्चरलिज़्म अकोर्डिंग टू वेरियस वैरियेबल. *इंटरनेशनल ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइंसेज*. 12 (1). पृष्ठ संख्या 228–246. 28 जनवरी, 2023 को https://www.researchgate.net/publication/339831175_Examining_Teachers%27_Attitudes_towards_Multiculturalism_according_to_Various_Variables से प्राप्त किया गया।

बैपटिस्ट, एच. और एम. बैपटिस्ट. 1980. कम्पीटेंसिस टुवर्ड्स मल्टीकल्चरलिज़्म. *मल्टीकल्चरल टीचर एजुकेशन-प्रीपेयरिंग टीचर एजुकेटर टू प्रोवाइड एजुकेशनल एक्विटी*. (संपादन— बैपटिस्ट, एच., एम. बैपटिस्ट और डी. गोलनिक, प्रथम संस्करण. अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ कोलेजेस फ़ॉर टीचर एजुकेशन. वाशिंगटन, डी. सी. 15 जनवरी, 2023 को https://files.eric.ed.gov/fulltext/ED186355.pdf से प्राप्त किया गया।

यूनेस्को गाइडलाइन्स फ़ॉर इंटरकल्चरल एजुकेशन. 2019. 18 जनवरी को https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000147878 से प्राप्त किया गया।

यिल्दिरिम, एस. और इ. तेज़िस. 2016. टीचर्स एटीट्यूडस, बिलिफ्स एंड सेल्फ़ एफ़ीकेसी अबॉउट मल्टीकल्चरल एजुकेशन— ए स्केल डेवेलपमेंट. *यूनिवर्सल जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च*. 4 (12A). पृष्ठ संख्या 196–204. 20 जनवरी, 2023 को https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1126044.pdf से प्राप्त किया गया।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. 24 जनवरी, 2023 को https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/hindi.pdf से प्राप्त किया गया।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्. 2009–10. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फ़ॉर टीचर एजुकेशन— टुवर्ड्स प्रीपेयरिंग प्रोफेशनल एंड ह्यूमन टीचर*. एन.सी.टी.ई. 12 फ़रवरी, 2023 को https://ncte.gov.in/website/PDF/NCFTE_2009.pdf से प्राप्त किया गया।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता
एक अनुभवात्मक अध्ययन

राजेन्द्र प्रसाद*

शैक्षिक प्रतिस्पर्धा में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ होती हैं, जिनमें उच्च शिक्षा के दौरान उनमें भावी जीवन में जीविकोपार्जन के स्रोतों तथा अध्ययनरत कक्षा में उच्चस्तरीय प्रतिफल प्राप्त करने की अपेक्षा होती है। इस कारण उनमें तनाव, चिंता, अवसाद आदि जैसे मनोवैज्ञानिक विकार उत्पन्न हो जाते हैं। इन विकारों का प्रभाव दिव्यांग विद्यार्थियों पर अधिक दिखाई देता है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता की स्थिति उनके अध्ययन-अध्यापन एवं दैनिक जीवन की विशेष आवश्यकताओं के कारण अलग हो सकती है, इसलिए उनकी अकादमिक दुश्चिंता की स्थिति का अध्ययन तथा उसके समाधान हेतु उपयुक्त युक्तियों के सुझाव के लिए शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक शोध अध्ययन किया गया। न्यादर्श के रूप में जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्नातक एवं परास्नातक विभागों में वर्ष 2022–23 में अध्ययनरत 191 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया। वैज्ञानिक आँकड़ों के संकलन हेतु सिद्दीकी एवं रहमान (2017) द्वारा विकसित मानकीकृत अकादमिक दुश्चिंता मापनी का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के अंतर्गत मध्यमान, मानक विचलन, ज़ेड-मानक, विषमता (स्केवनेस), वक्रता (कुरटोसिस) एवं शापिरो-विल्क परीक्षण सूचकांक की गणना की गई। वहीं पर शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु अनुमानात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत टू-ग्रुप t-टेस्ट एवं अकादमिक दुश्चिंता की विभिन्न विमाओं में सार्थक अंतर जानने हेतु प्रसरण विश्लेषण (अनोवा) का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि इन विद्यार्थियों में औसत स्तर की अकादमिक दुश्चिंता है। जेंडर आधारित आयाम पर दृष्टिबाधित छात्रों में दृष्टिबाधित छात्राओं की तुलना में सार्थक रूप से अधिक अकादमिक दुश्चिंता पाई गई, लेकिन निवास स्थान की पृष्ठभूमि के आधार पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

इक्कीसवीं सदी में विद्यार्थियों के समक्ष कई प्रकार की समस्याएँ आ रही हैं, जिसके कारण विद्यार्थियों के अकादमिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना बनी रहती है। उन्हीं समस्याओं में से एक समस्या है— अकादमिक दुश्चिंता। यह शैक्षिक प्रक्रियाओं से जुड़ी दुश्चिंता है, जो विद्यार्थी के शैक्षिक निष्पादन को प्रभावित करती है। अकादमिक दुश्चिंता तनाव की वह अवस्था होती है, जो भिन्न-भिन्न घटकों, जैसे— शिक्षकों, विषयों, पाठ्यचर्या, परीक्षा निष्पादन के साथ-साथ संस्थानों

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग (केंद्रीय शिक्षा संस्थान), दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110007

के वातावरण से संबंधित होती है। अकादमिक दुश्चिंता शैक्षणिक संस्थान की विपरीत या कठिन परिस्थितियों के कारण बेचैनी या संकट की मानसिक स्थिति होती है, जिसे नकारात्मक रूप में देखा जाता है। अकादमिक दुश्चिंता ध्यान तथा एकाग्रता को कम करके अकादमिक कठिनाई या बाधा उत्पन्न करती है (इसनेक, 2009)। अकादमिक दुश्चिंता के चार मुख्य घटक होते हैं— भावुकता, अध्ययन कौशल में कमी, कार्य जनित बाधा एवं तनाव। भावुकता जैविक संकेतों से प्रदर्शित होती है, जबकि अध्ययन कौशल की कमी अपर्याप्त अध्ययन तकनीकों का परिणाम है, जो तनाव को जन्म देती है। कार्य जनित बाधा अनुत्पादक व्यवहारों का परिणाम होती है, जो शैक्षिक निष्पादन को प्रभावित करती है, जैसे कि विद्यार्थी द्वारा उन प्रश्नों पर अधिक समय व्यतीत करना, जिनका उत्तर देने में वे असमर्थ हैं। अकादमिक दुश्चिंता कुछ अप्रत्यक्ष कारकों (तनाव एवं विकार) के कारण भी उत्पन्न होती है, जैसे— शारीरिक अस्वस्थता, मानसिक रोग, दवाओं का प्रभाव, सामाजिक दबाव या अन्य कोई दबाव, जिससे विद्यार्थी विभिन्न विकारों, जैसे— संत्रास विकार (*पैनिक डिसऑर्डर*), सामान्यीकृत चिंता विकार, फोबिक विकार, मनोग्रसित-बाध्यता विकार (*ऑब्सेसिव कम्पलसिव डिसऑर्डर*), पृथक्करण विकार एवं तनाव विकार आदि से पीड़ित हो सकते हैं। उपरोक्त विकारों के उत्पन्न होने में कई अन्य कारकों की भूमिका हो सकती है, जैसे— विद्यालयी तनाव, व्यक्तिगत संबंधों के कारण तनाव, वित्तीय अभाव के कारण तनाव की स्थिति, भावात्मक आघातों के रूप में तनाव, काम का तनाव, आपदा के कारण तनाव, गंभीर बीमारी एवं नशे के कारण तनाव आदि।

दुश्चिंता शैक्षिक निष्पादन में कमी का एक प्रमुख कारण बनती है, क्योंकि लिगी, फ्रनसेसक, मारिया एवं वलीनफीन (2007) ने अपने शोध अध्ययन में पाया है कि 'अत्यधिक स्तर की दुश्चिंता अकादमिक निष्पादन को कमज़ोर बनाती है। इसके विपरीत विरोधाभासी शोध अध्ययन के प्रमाण भी मिलते हैं कि दुश्चिंता एक औसत स्तर पर लोगों को प्रेरित तथा कार्यशील बनाए रखने में सहायक एवं उपयोगी होती है एवं उनके निष्पादन में सुधार करने में सहायक होती है' (शकीरा, 2014)। इस प्रकार पूर्व शोध से यह भी ज्ञात हुआ है कि 'संज्ञानात्मक दुश्चिंता का अकादमिक निष्पादन के साथ नकारात्मक संबंध होता है एवं शारीरिक दुश्चिंता का अकादमिक निष्पादन के साथ वक्रीय संबंध होता है। संज्ञानात्मक दुश्चिंता ही वह घटक है, जो अकादमिक निष्पादन को सबसे अधिक प्रभावित करती है। संज्ञानात्मक दुश्चिंता बढ़ने से अकादमिक निष्पादन कम होता है' (इंगगिरो, 1999 और राव, 2005)। इसी प्रकार से फैजी एवं हार्डी (1988) ने भी पाया है कि 'जब शारीरिक उत्तेजना कम होती है, तो संज्ञानात्मक दुश्चिंता का अकादमिक निष्पादन के साथ सकारात्मक संबंध होता है। जबकि उच्च स्तर की दुश्चिंता वाले विद्यार्थी अपनी परीक्षा में सामान्यतः औसत से कम निष्पादन कर पाते हैं।'

अब अकादमिक दुश्चिंता एवं इसके कारकों को दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में समझते हैं। कक्षागत परिस्थितियों में विद्यार्थियों की भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि के कारण कक्षाएँ विभिन्न विविधताओं

से युक्त होती हैं। दृष्टिबाधित विद्यार्थी भी उन्हीं में से एक हैं, जिनकी समस्याएँ न केवल सामान्य विद्यार्थियों से अलग होती हैं, बल्कि कई बार बहुत गंभीर प्रकृति की भी होती हैं। इसका मुख्य कारण दैनिक कार्यों, शैक्षिक सहायता एवं समर्थन हेतु अन्य व्यक्तियों पर निर्भरता है क्योंकि वे सर्वप्रथम शैक्षिक संस्थाओं में पहुँचने के लिए दिव्यांगता अनुकूल यातायात के साधनों का अभाव होने के कारण एक प्रकार की मानसिक चिंता से ग्रस्त रहते हैं। जहाँ तक शिक्षणशास्त्र का प्रश्न है, उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षक दृष्टिबाधित अनुकूल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से परिचित नहीं होते हैं, क्योंकि उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों को दृष्टिबाधित अनुकूल शिक्षणशास्त्र का कोई सार्थक प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। इसके अतिरिक्त दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिपि में पठन-पाठन सामग्री का न केवल अभाव होता है, बल्कि अध्ययन सामग्री के रिकॉर्डिंग के लिए सहपाठी विद्यार्थियों या पारिवारिक सहायकों पर निर्भर होना पड़ता है। यदि उन्हें समय पर उचित सहयोग न मिले तो उन्हें मानसिक तनाव होना स्वाभाविक है।

इसी प्रकार, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की पुस्तकालयों तक पहुँच भी सरल नहीं होती है, क्योंकि पुस्तकालय में किताबें ढूँढ़ने के लिए कंप्यूटरों में दृष्टिबाधित अनुकूल सॉफ़्टवेयर, जैसे— स्पीच टू टेक्स्ट एवं स्क्रीन रीडर, जो इलेक्ट्रॉनिक विषयवस्तु को पढ़कर सुनाते हैं, न हो तो स्वतंत्र रूप से पठन-पाठन की सामग्री भी नहीं ढूँढ़ सकते। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की पुस्तकालयों में पहुँच की सुगमता, अनुकूल वातावरण एवं सहयोग का सदैव अभाव रहता है। इसके अतिरिक्त उनके स्वास्थ्य, पुनर्वास, निर्देशन व परामर्श पर अतिरिक्त आर्थिक व्यय उनके परिवार पर अतिरिक्त आर्थिक भार होता है, जो दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए तनाव का एक अन्य कारण है। अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि शिक्षा प्रणाली में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता उत्पन्न करने वाले अनेक कारक विद्यमान हैं। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशी शिक्षा के विभिन्न प्रावधान किए गए हैं, जैसे— दिव्यांग विद्यार्थियों के अधिगम-शिक्षण हेतु अल्पकालीन कोर्स, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु समान अवसर एवं समर्थकारी तंत्रों की स्थापना करना, पाठ्यक्रम एवं प्रवेश प्रक्रिया को समावेशी बनाना, माता-पिता हेतु तकनीकी आधारित उन्मुखीकरण, भाषा यथोचित अधिगम सामग्री का निर्माण, तकनीकी आधारित सहायक उपकरण, सुरक्षा उपाय, सहायता एवं पुनर्वास, उच्च गुणवत्तापूर्ण गृह आधारित शिक्षा तथा इसकी सामर्थ्य एवं प्रभावशीलता का परीक्षण।

दिव्यांग विद्यार्थियों को कैसे पढ़ाया जाए, को सभी अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रमों का अभिन्न अंग बनाकर जागरूकता एवं ज्ञान का निर्माण, अकादमिक संस्थाओं में सहयोग, समर्थन एवं संसाधनों को साझा किया जाना, विभिन्न मापकों द्वारा समता, भवनों एवं सुविधाओं को दिव्यांगों के अनुकूल बनाना। इसके अतिरिक्त शैक्षणिक संस्थानों में आकलन एवं मूल्यांकन को गुणवत्तापूर्ण बनाने हेतु बुनियादी शिक्षा से उच्च शिक्षा तक के (प्रवेश परीक्षाएँ भी सम्मिलित) आकलन एवं

प्रमाणन परिस्थितिकी तंत्र हेतु राष्ट्रीय आकलन केंद्र 'परख' की स्थापना, जैसे— नवाचारी प्रावधान किए गए हैं। इसके अतिरिक्त विधिक परिप्रेक्ष्य में, द *राइट्स ऑफ़ पर्सन्स विद डिसेबिलिटीज एक्ट* (2016) भी दिव्यांग विद्यार्थियों के संदर्भ में सहायता एवं समर्थन प्रदान करने पर विशेष बल देता है, जिसमें विशेषतः समर्थकारी एवं सुगम्य वातावरण के माध्यम से शैक्षणिक एवं सामाजिक विकास की उच्चतम सीमा प्राप्त करने में सहायता का प्रबंध किया जाना, शिक्षा के प्राप्ति स्तरों एवं पूर्णता के रूप में भागीदारी, प्रगति को मॉनीटर किया जाना, व्यावसायिक नियोजन के माध्यम से आर्थिक समर्थन प्रदान किया जाना, समुदाय के भीतर स्वतंत्र रूप से रहने में अनुकूलित वातावरण का निर्माण किया जाना, पुनर्वास का उपबंध, निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा तथा उच्च शिक्षण संस्थानों में आरक्षण आदि का उपबंध किया गया है। यह सामाजिक, वातावरणीय, पुनर्वास तथा आर्थिक सहायता के माध्यम से दुश्चिंता उत्पन्न करने वाले कारकों को सीमित करने का उपबंध करता है, इसलिए यह ज्ञात करना आवश्यक है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के क्या कारण हैं?

संबंधित शोधों का सर्वेक्षण

अकादमिक दुश्चिंता पर पूर्व में किए गए शोध अध्ययनों के परिणामों में न केवल अत्यधिक भिन्नता एवं विरोधाभासी प्रमाण प्राप्त हुए हैं, अपितु इन शोध अध्ययनों के कुछ विचारों में साधारण लोगों की राय की कमी भी दृष्टिगोचर होती है। अधिकांश शोध अध्ययनों में दुश्चिंता के कारणों एवं अकादमिक दुश्चिंता के परिणामस्वरूप अकादमिक निष्पादन में कमी का आना, जैसे परिणामों में आम सहमति देखी जा सकती है, जैसे— 'कक्षा में शिक्षक के डाँटने के डर के कारण विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता उत्पन्न हो जाती है (दत्ता, 2015 एवं *न्यूडर्ट एंड स्चमिडटेक*, 2009)। इसके अतिरिक्त कई शोध अध्ययन यह भी प्रदर्शित करते हैं कि 'संज्ञानात्मक स्थिति के अलावा बच्चे की शारीरिक एवं आर्थिक स्थिति का भी अकादमिक दुश्चिंता उत्पन्न करने में सकारात्मक योगदान होता है' (इर्कान, 2008)। कई शोध अध्ययनों के परिणामों से ज्ञात हुआ है कि 'सामाजिक कारकों से भी दुश्चिंता की स्थिति उत्पन्न होती है, जैसे— 'समाज के द्वारा विद्यार्थियों के ऊपर उच्च अकादमिक उपलब्धि हेतु दबाव डालना' (यांग, 2018; दहमनी, 2010; गुरेरा, 1990)। इसके अतिरिक्त दुश्चिंता के कारण अकादमिक निष्पादन में कमी आती है (हैंडकाक, 2001; जान और मधु, 2018)।

दिव्यांग विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के परिप्रेक्ष्य में शोधों के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि इस विषय को आधार बनाकर बहुत ही कम मात्रा में शोध अध्ययन किए गए हैं। इस क्षेत्र में हुए कुछ शोध अध्ययन प्रदर्शित करते हैं कि दिव्यांग बच्चों की शारीरिक स्थिति का प्रभाव उनके अकादमिक निष्पादन पर होता है, जिसके कारण उनमें अकादमिक दुश्चिंता उत्पन्न होती है। ऐसा विशेषतः दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के साथ अधिक होता है (शाह, 2019; जुबिन और आजाद, 2018; केरोल और जाने, 2006)। इसके अतिरिक्त दिव्यांग बच्चों के लिए समाज द्वारा निर्मित बाधित सामाजिक वातावरण भी अकादमिक दुश्चिंता का कारण बनता है

(शर्मा और शाकिर, 2019 और चेन, 2001)। दिव्यांग बच्चों के जेंडर का प्रभाव भी अकादमिक दुश्चिंता पर पड़ता है अर्थात दिव्यांग लड़कियों में दिव्यांग लड़कों के सापेक्ष अधिक अकादमिक दुश्चिंता होती है (महाजन, 2015 एवं पेरिआंटों, 2022)। कई शोध अध्ययन दर्शाते हैं कि आर्थिक कारकों के कारण भी दिव्यांग बच्चों में अकादमिक दुश्चिंता देखने को मिलती है (जॉनसन, 1985), वहीं पर कुछ शोध अध्ययन इस ओर भी इंगित करते हैं कि अधिगम की विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सापेक्ष अन्य प्रकार के दिव्यांग बच्चों में अकादमिक दुश्चिंता कम दिखती है (यांग, 2018 और रावत, 2009)।

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन हेतु चयनित शोध समस्या उपरोक्त शोधों से भिन्न है। पहला, उपरोक्त शोध अध्ययन समावेशन मॉडल पर आधारित शैक्षिक संस्थाओं में पठन-पाठन करने वाले दिव्यांगों पर किए गए हैं, जबकि यह शोध अध्ययन उच्च शिक्षा में विशेष मॉडल (स्पेशल एजुकेशन मॉडल) वाले वातावरण पर आधारित है। क्योंकि इस शोध अध्ययन के न्यादर्श के रूप में चयनित संस्थान जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश में दिव्यांग विद्यार्थियों को शामिल किया गया है, जो कि इस शोध की वातावरणीय भिन्नता का कारण है। दूसरा, उपर्युक्त शोध अध्ययन के भिन्न-भिन्न परिणामों से अकादमिक दुश्चिंता उत्पन्न होने का कारण एवं उसके पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में अंतर्विरोध पाए गए हैं, जैसे— कुछ शोध अध्ययनों के परिणामों से ज्ञात हुआ कि जेंडर का अकादमिक दुश्चिंता पर सकारात्मक प्रभाव होता है, जबकि कुछ शोध अध्ययनों में पाया गया है कि जेंडर का अकादमिक दुश्चिंता पर नकारात्मक प्रभाव होता है। कुछ शोध अध्ययनों के परिणामों में पाया गया कि दुश्चिंता का एक स्तर तक होना अकादमिक निष्पादन को सकारात्मक रूप से प्रभावी बनाता है, किंतु कुछ शोध परिणाम दर्शाते हैं कि दुश्चिंता का अकादमिक निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव होता है।

शोध की सार्थकता

अकादमिक निष्पादन के परिप्रेक्ष्य में, जब किसी विशेष समूह अर्थात दिव्यांग विद्यार्थी की चर्चा की जाती है, तब कई अन्य कारक भी हो सकते हैं, जो उनके अकादमिक निष्पादन को प्रभावित करते हैं। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संदर्भ में शैक्षिक बाधाओं के अतिरिक्त सामाजिक एवं वातावरण से जुड़े कई कारक भी होते हैं, जो उनके अकादमिक निष्पादन को प्रभावित करते हैं। साथ ही, उनके लिए मानसिक तनाव का कारण बनते हैं, जैसे— दृष्टिबाधित होने के कारण सहायक साधनों की आवश्यकता होती है, किंतु संपूर्ण सहायक साधनों का अभाव होता है, जिसके कारण अकादमिक निष्पादन कम हो जाता है (दत्ता और जाय, 2016)। दैनिक वातावरणीय बाधा भी दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए तनाव का कारण बनती है। यह भी देखा गया है कि समाज इन दिव्यांग बच्चों को उनसे अलग होने का अनुभव कराता है, जिसके कारण उनमें दुश्चिंता की स्थिति उत्पन्न होती है। 'सामाजिक दुश्चिंता दृष्टिबाधित तथा श्रवणबाधित बच्चों के लिए सबसे गंभीर मुद्दों में से एक है, जिसका अर्थ है— किसी व्यक्ति के व्यवहार या निष्पादन को प्रकट करने वाली स्थितियों के लिए जाँच या मूल्यांकन किए जाने का

अत्यधिक या तर्कहीन भय होने की स्थिति यह डर इस अपेक्षा के कारण होता है कि व्यक्ति को नकारात्मक रूप से आकलित किया जाएगा' (हेरिंग, क्लेन और कानन, 2015)। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में प्रतियोगिता से युक्त शैक्षिक एवं रोज़गार जगत में स्थान बनाना कठिन होता है, क्योंकि प्रतियोगिता रूपी समाज में वे उस प्रकार से सहभागिता नहीं कर पाते, जिस तरह से सामान्य विद्यार्थी करते हैं। इसका मुख्य कारण, अपने पठन-पाठन एवं प्रतियोगी परीक्षा में प्रतिभागिता लेने हेतु सहयोगी लेखक पर उनकी निर्भरता है। सामान्य विद्यार्थियों के लिए बनी शिक्षा प्रणाली के वातावरण में स्वयं को अनुकूलित करना एवं विभिन्न बाधाओं के बावजूद भी स्वयं को अभिप्रेरित रखना, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है, जो उनकी अकादमिक दुश्चिंता का एक मुख्य कारण हो सकती है। अतः उपरोक्त तर्कों को दृष्टिगत रखते हुए दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता की स्थिति को जानना अति आवश्यक है, ताकि अकादमिक दुश्चिंता को कम करने हेतु आवश्यक सकारात्मक कदम उठाए जा सकें।

समस्या कथन

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता— एक अनुभवात्मक अध्ययन

कार्यात्मक परिभाषाएँ

दृष्टिबाधित विद्यार्थी— दृष्टिबाधित विद्यार्थी से तात्पर्य उन विद्यार्थियों से है, जो दृष्टिबाधित हैं तथा जिन्हें कानूनी रूप से दृष्टिबाधित होने (विजुअॅल इम्पेयरमेंट) का प्रामाणिक मेडिकल बोर्ड द्वारा निर्गत अक्षमता (डिसेबिलिटी) प्रमाण पत्र प्राप्त है एवं जिनका पठन-पाठन ब्रेल लिपि में होता है।

अकादमिक दुश्चिंता— इस शोध अध्ययन में, अकादमिक दुश्चिंता से तात्पर्य अकादमिक दुश्चिंता के विभिन्न घटकों, जैसे— दुश्चिंता के लक्षण, निम्न अध्ययन आदतों से जुड़ी दुश्चिंता, विषय के कारण दुश्चिंता, विश्वविद्यालय वातावरण के कारण दुश्चिंता, शिक्षकों के कारण दुश्चिंता एवं परीक्षाओं से जुड़ी दुश्चिंता पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों द्वारा दी गई व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के संदर्भ से है।

शोध के उद्देश्य

शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे—

1. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता का अध्ययन करना।
2. दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता का अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ इस प्रकार थीं—

1. दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन की प्रकृति एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया था। जो मात्रात्मक उपागम केंद्रित है।

शोध की जनसंख्या

जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्नातक एवं परास्नातक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत दृष्टिबाधित विद्यार्थी इस शोध की जनसंख्या हैं।

न्यादर्श आकार एवं विधि

इस शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश के 191 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि के माध्यम से किया गया था। इनमें 111 छात्र एवं 80 छात्राएँ तथा 65 शहरी एवं 126 ग्रामीण विद्यार्थी थे।

आँकड़ों का संकलन

शोधार्थी द्वारा आँकड़ों के संकलन हेतु सिद्दीकी और रहमान (2017) द्वारा मानकीकृत अकादमिक दुश्चिंता मापनी का प्रयोग किया गया था। इस दुश्चिंता मापनी में कुल 44 प्रश्न हैं, जो छह आयामों, जैसे— दुश्चिंता के लक्षण, निम्न अध्ययन आदतों से जुड़ी दुश्चिंता, विषय के कारण दुश्चिंता, विश्वविद्यालय वातावरण के कारण दुश्चिंता, शिक्षकों के कारण दुश्चिंता एवं परीक्षाओं से जुड़ी दुश्चिंता में वितरित हैं। मापनी का विश्वसनीयता गुणांक 0.85 है। इस प्रकार यह एक उच्च विश्वसनीय उपकरण है। वहीं मापनी की वैधता का निर्धारण कसौटी एवं समवर्ती वैधता द्वारा ज्ञात किया गया है। अतः यह एक वैध उपकरण भी है। मूल प्राप्तांकों की अर्थपूर्ण व्याख्या हेतु जेड-प्राप्तांक मानक विकसित किए गए हैं। मापनी के ब्रेल लिपि में उपलब्ध न होने एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए दुश्चिंता मापनी का प्रशासन समूह में ना करके व्यक्तिगत रूप से किया गया था।

आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया

शोधार्थी द्वारा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के मूल प्राप्तांकों को तुलनात्मक बनाने एवं उनकी अर्थपूर्ण तथा सार्थक व्याख्या हेतु मूल प्राप्तांकों को एक सामान्य स्केल पर परिवर्तन किया गया। इसके लिए जेड-स्कोर को मानक के रूप में प्रयोग किया गया। शोधार्थी द्वारा संकलित आँकड़ों की वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत मध्यमान, मध्यांक, मानक विचलन, वक्रता मूल्य (कुरटोसिस), विषमता मूल्य (स्केवनेस), प्रसार एवं प्रसरण के माध्यम से गणना की गई। आँकड़ों की सामान्य वितरण की प्रकृति के परीक्षण हेतु वक्रता मूल्य, विषमता मूल्य, शापिरो-विल्क परीक्षण का प्रयोग किया गया। साथ ही, विभिन्न शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु स्वतंत्र टू-ग्रुप t-परीक्षण का भी प्रयोग किया गया। शोधार्थी द्वारा अकादमिक दुश्चिंता के विभिन्न आयामों में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए प्रसरण विश्लेषण (अनोवा) का प्रयोग किया गया। उपरोक्त सभी वर्णनात्मक एवं अनुमनात्मक सांख्यिकी के मापकों की गणना स्टैटिस्टिकल पैकेज फ़ॉर सोशल साइंसेज (एस.पी.एस.एस.) द्वारा की गई।

तालिका 1— विषमता, वक्रता एवं शापिरो-विल्क परीक्षण सूचकांक सामान्य परीक्षण

	शापिरो-विल्क परीक्षण						
	सांख्यिकी	*स्वातंत्र्य कोटि*	*एस.आई.जी. (Sig.)*	*विषमता (स्केवनेस)*	*विषमता मानक त्रुटि*	*वक्रता (कुरटोसिस)*	*वक्रता मानक त्रुटि*
अकादमिक दुश्चिंता	.989	191	.172	.359	.176	.183	.350

तालिका 2— दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के स्तर

क्र. सं.	जेड-स्कोर की श्रेणी	अकादमिक दुश्चिंता का स्तर	विद्यार्थियों का प्रतिशत
1.	+2.01 से अधिक	अत्यधिक उच्च	2.61 %
2.	+1.26 से + 2.00	उच्च	8.90 %
3.	+0.51 से + 1.25	औसत से अधिक	18.84 %
4.	-0.50 से +0.50	औसत	35.60 %
5.	-1.25 से -0.51	औसत से कम	23.03 %
6.	-2.00 से -1.26	निम्न	9.94 %
7.	-2.01 से कम	अत्यधिक निम्न	1.04 %

आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

तालिका 1 से यह ज्ञात होता है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के अकादमिक दुश्चिंता प्राप्तांकों में सकारात्मक विषमता है, लेकिन यह विषमता सूचकांक (0.359) बहुत कम एवं नगण्य है, क्योंकि प्राप्त विषमता मान 0.359 (विषमता मानक त्रुटि 0.176) सामान्य विषमता मान शून्य के बहुत नज़दीक है। वहीं पर दूसरी ओर प्राप्तांकों की वक्रता की तुलना सामान्य वक्र के वक्रता मान 0.263 से करते हैं, तो ज्ञात होता है कि वक्रता मान सामान्य वक्रता मान के अनुसार ही है, क्योंकि प्राप्त वक्रता मान 0.183 (वक्रता मानक त्रुटि 0.352) सामान्य वक्रता मान 0.263 के आसपास ही है। इस विश्लेषण से ज्ञात सीमित आँकड़ों में इस मामूली विषमता एवं वक्रता का कारण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की दृष्टिबाधिता एवं उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि हो सकती है, फिर भी आँकड़ों के समान वितरण की बिल्कुल सही स्थिति जानने हेतु शापिरो-विल्क परीक्षण की गणना की गई, जिसका सूचकांक 0.172 सार्थकता स्तर 0.05 ($p > 0.05$) से अधिक प्राप्त हुआ। शापिरो-विल्क परीक्षण के उपरोक्त सूचकांक का अर्थ यह हुआ कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के प्राप्तांक वितरण सामान्य रूप से वितरित हैं। अतः आँकड़ों के सामान्य वितरण की शर्त की पूर्णतः संतुष्टि हो जाने के पश्चात ही अनुमानात्मक सांख्यिकी की गणना की गई।

तालिका 2 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकतर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में औसत स्तर की अकादमिक दुश्चिंता है, क्योंकि इस

समूह में सबसे अधिक 35.60 प्रतिशत विद्यार्थी पाए गए, जो कि अधिकतम हैं। वहीं पर 23.03 प्रतिशत दृष्टिबाधित विद्यार्थी औसत से कम स्तर की अकादमिक दुश्चिंता की श्रेणी में आते हैं तथा 18.84 प्रतिशत दृष्टिबाधित विद्यार्थी औसत से ऊपर की अकादमिक दुश्चिंता रखते हैं। इसके अतिरिक्त दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में 2.61 प्रतिशत अत्यधिक उच्च एवं इसी प्रकार बहुत ही कम विद्यार्थियों 1.04 प्रतिशत को अत्यधिक निम्न श्रेणी की अकादमिक दुश्चिंता की समस्या है। जहाँ तक उच्च एवं निम्न स्तरीय दुश्चिंता समूह का प्रश्न है, तो उच्च समूह में मात्र 8.90 प्रतिशत दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को एवं निम्न समूह में भी केवल 9.94 प्रतिशत विद्यार्थियों को अकादमिक दुश्चिंता थी। अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकतर दृष्टिबाधित विद्यार्थी औसत स्तर की अकादमिक दुश्चिंता से ग्रसित हैं। बहुत ही कम विद्यार्थी अत्यधिक उच्च एवं अत्यधिक निम्न अकादमिक दुश्चिंता की समस्या का सामना कर रहे हैं। लेकिन कोई भी दृष्टिबाधित विद्यार्थी अकादमिक दुश्चिंता की समस्या से मुक्त नहीं है। इसका कारण यह हो सकता है कि उनकी कमज़ोर अध्ययन आदतें, समय प्रबंधन के कौशलों की कमी, रोज़गार पाने हेतु पारिवारिक एवं सामाजिक दबाव, अकादमिक सहायता हेतु दूसरों पर निर्भरता एवं परीक्षाओं की तैयारी हेतु दबाव हो सकता है।

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता के मध्यमान 158.58 व 156.22 एवं मानक विचलन 17.76 व 13.46 प्राप्त हुए। साथ ही, तालिका में प्राप्त t-परीक्षण का मान 2.82 द्वि-पुंच्छीय परीक्षण के लिए सार्थकता स्तर 0.01 के टेबल मान 2.60 से अधिक है। इससे यह ज्ञात होता है कि दृष्टिबाधित छात्रों की अकादमिक दुश्चिंता का मध्यमान 158.58 दृष्टिबाधित छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता के मध्यमान 156.22 से सार्थक रूप से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना, 'दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता में सार्थक अंतर नहीं है।', को निरस्त किया जाता है। उपरोक्त सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष ज्ञात होता है कि जेंडर कारक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि जेंडर दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता में सार्थक प्रसरण उत्पन्न कर रहा है, इससे यह ज्ञात होता है कि दृष्टिबाधित छात्रों (158.58) दृष्टिबाधित छात्राओं (156.22) की तुलना में सार्थक रूप से अधिक अकादमिक दुश्चिंता रखते हैं। इसका संभावित कारण दृष्टिबाधित छात्रों द्वारा सामाजिक एवं शैक्षिक दबाव अधिक महसूस

तालिका 3— दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता

समूह-जेंडर	कुल संख्या	मध्यमान	मानक त्रुटि	स्वातंत्र्य कोटि	t-परीक्षण
दृष्टिबाधित छात्र	111	158.58	17.76	189	2.82
दृष्टिबाधित छात्राएँ	80	156.22	13.46		

करना हो सकता है। क्योंकि अधिकतर यह देखने में आया है कि पुरुषों पर परिवार के लिए समस्त व्यवस्थाओं की ज़िम्मेदारी होती है। वहीं पर दृष्टिबाधिता के कारण समस्याओं, भविष्य की पारिवारिक ज़िम्मेदारी की जागरूकता एवं दबाव के साथ-साथ अकादमिक चुनौतियों (जैसे— परीक्षा के कारण दुश्चिंता दृष्टिबाधित छात्रों में अधिक पाई गई) के संज्ञानात्मक भाव एवं विचारों के कारण दृष्टिबाधित छात्रों में अकादमिक दुश्चिंता अधिक होने का कारण हो सकता है।

इसके अतिरिक्त पूर्व में हुए शोध अध्ययनों से भी यह प्रमाणित हो चुका है कि सामाजिक कारकों के कारण दुश्चिंता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है (यांग, जेड. और अन्य., 2019; दहमनी, 2010; गुरेरा, 1990), लेकिन उपरोक्त शोध परिणाम महाजन (2015); पेरिआंटों (2022) के शोध परिणामों से भिन्न हैं, जिन्होंने पाया कि दिव्यांग लड़कियों में दिव्यांग (स्टूडेंट विद स्पेशल नीड्स) लड़कों के सापेक्ष अधिक अकादमिक दुश्चिंता होती है, किंतु (महाजन, 2015 और पेरिआंटों, 2022) द्वारा संपादित शोध समावेशी वातावरण पर आधारित था, जबकि इस शोध अध्ययन के परिणाम उच्च शिक्षा में विशेष मॉडल (स्पेशल एजुकेशन मॉडल) वाले वातावरण या संस्थान पर आधारित हैं। अतः दोनों प्रकार के शोध परिणामों में भिन्नता का कारण वातावरणीय भिन्नता का होना एक प्रमुख कारक हो सकता है, परंतु पूर्व में हुए अन्य शोध परिणामों से भी इस शोध अध्ययन के परिणामों में अंतर्विरोध भी प्राप्त हुआ है, जैसे— सुधीर (2021) ने भी अपने शोध परिणामों से प्रमाणित किया कि छात्राओं में अकादमिक दुश्चिंता छात्रों की अपेक्षा अधिक होती है।

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता के विभिन्न आयामों पर मध्यमान

तालिका 4— दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता के विभिन्न आयामों पर गणना

क्र. सं.	आयाम	कुल संख्या	जेंडर	मध्यमान	मानक त्रुटि	स्वातंत्र्य कोटि	t-परीक्षण
1.	अकादमिक दुश्चिंता के लक्षण	111	छात्र	24.92	4.04	189	0.26
		80	छात्राएँ	25.06	3.56		
2.	कमज़ोर अध्ययन आदतों के कारण दुश्चिंता	111	छात्र	26.03	3.68	189	2.33
		80	छात्राएँ	24.91	3.21		
3.	विषय के कारण दुश्चिंता	111	छात्र	17.79	3.08	189	1.06
		80	छात्राएँ	17.33	2.99		
4.	विश्वविद्यालय वातावरण के कारण दुश्चिंता	111	छात्र	26.63	4.36	189	1.41
		80	छात्राएँ	27.41	3.46		
5.	शिक्षक के कारण दुश्चिंता	111	छात्र	32.77	5.61	189	0.01
		80	छात्राएँ	32.76	3.98		
6.	परीक्षा के कारण दुश्चिंता	111	छात्र	30.71	5.16	189	2.48
		80	छात्राएँ	28.97	4.57		

क्रमशः इस प्रकार प्राप्त हुए— दुश्चिंता के लक्षण (24.92 व 25.06), कमज़ोर अध्ययन आदतों के कारण दुश्चिंता (26.03 व 24.91), विषय के कारण दुश्चिंता (17.79 व 17.33), विश्वविद्यालय वातावरण के कारण दुश्चिंता (26.63 व 27.41) एवं शिक्षकों के कारण दुश्चिंता (32.77 व 32.76)। दृष्टिबाधित छात्रों एवं छात्राओं की अकादमिक दुश्चिंता के उपरोक्त किसी भी आयाम पर दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः इससे ज्ञात होता है कि दोनों समूह अकादमिक दुश्चिंता की प्रथम पाँच आयाम पर समान हैं। उनमें कोई सार्थक अंतर नहीं है। लेकिन 'परीक्षाओं से दुश्चिंता' के संदर्भ में विपरीत परिणाम प्राप्त हुए, क्योंकि दृष्टिबाधित छात्रों की परीक्षा के कारण दुश्चिंता का मध्यमान (30.71) दृष्टिबाधित छात्राओं के मध्यमान (28.97) से सार्थक रूप से अधिक था। इससे यह ज्ञात होता है कि दृष्टिबाधित छात्रों में दृष्टिबाधित छात्राओं की तुलना में परीक्षाओं के संदर्भ में अधिक दुश्चिंता होती है। इस प्रकार के परिणामों का कारण दृष्टिबाधित छात्रों द्वारा दृष्टिबाधित छात्राओं की अपेक्षा परीक्षा की कमज़ोर तैयारी के कारण अधिक परीक्षा दबाव महसूस करना हो सकता है।

शहरी एवं ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता को तालिका 5 में दर्शाया गया है। इस तालिका से स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता का मध्यमान क्रमशः 160.58 व 156.05 एवं मानक विचलन 15.69 व 16.16 प्राप्त हुए। t-परीक्षण मान 1.87 मुक्तांश 189 के लिए, द्वि-पुच्छीय परीक्षण हेतु सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना शहरी एवं ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता में सार्थक अंतर नहीं है, को स्वीकार किया जाता है। इससे यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी दृष्टिबाधित विद्यार्थी समान रूप से अकादमिक दुश्चिंता महसूस करते हैं, क्योंकि शहरी दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता का अवलोकित मध्यमान (160.58), ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के मध्यमान (156.05) की तुलना में सार्थक रूप से अधिक नहीं है। अतः 'अधिवास या आवास स्थान' के आधार पर कोई सार्थक प्रसरण प्राप्त नहीं हुआ, दूसरे शब्दों में कहा जाए तो 'अधिवास' अकादमिक दुश्चिंता में कोई सार्थक भेद उत्पन्न नहीं करता है। इसका कारण शहरी एवं ग्रामीण दोनों दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन में विभिन्न समस्याओं के अनुभवों का लगभग समान होना हो सकता है, इसलिए निवास स्थान की पृष्ठभूमि में दोनों समूहों में कोई सार्थक प्रसरण उत्पन्न नहीं कर पाई हो। परंतु उपरोक्त परिणाम सुल्तान और भट्ट (2019) के शोध परिणामों से विपरीत हैं, क्योंकि सुल्तान और भट्ट (2019) ने

तालिका 5— शहरी एवं ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता

समूह-आवास	कुल संख्या	मध्यमान	मानक त्रुटि	स्वातंत्र्य कोटि	t-परीक्षण
शहरी	65	160.58	15.69	189	1.87
ग्रामीण	126	156.05	16.16		

पाया कि ग्रामीण छात्रों में शहरी छात्रों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक अकादमिक दुश्चिंता होती है। इसके अतिरिक्त शर्मा और शाकिर (2019) के शोध परिणामों के साथ भी इस शोध के परिणामों की असंगतता दिखाई देती है, क्योंकि शर्मा और शाकिर (2019) ने पाया कि शहरी छात्रों में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अकादमिक दुश्चिंता अधिक होती है। अतः दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के निवास स्थान की पृष्ठभूमि एवं अकादमिक दुश्चिंता के संदर्भ में भी शोध परिणामों में परस्पर सहमति का अभाव है।

तालिका 6 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शहरी एवं ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के विभिन्न आयामों के क्रमशः मध्यमानों, जैसे— कमज़ोर अध्ययन आदतों के कारण दुश्चिंता (25.67 व 25.50), विषय के कारण दुश्चिंता (17.60 व 17.60), विश्वविद्यालय वातावरण के कारण दुश्चिंता (27.61 व 26.62), शिक्षकों के कारण दुश्चिंता (33.58 व 32.34) एवं परीक्षाओं के कारण दुश्चिंता (30.81 व 29.55) की सार्थकता के संदर्भ में सांख्यिकीय गणना से एकसमान अकादमिक दुश्चिंता है, क्योंकि उपरोक्त विभिन्न क्षेत्रों में दुश्चिंता के कारणों में सार्थक अंतर नहीं है। परंतु दूसरी ओर अकादमिक दुश्चिंता के क्षेत्र 'अकादमिक दुश्चिंता के लक्षण' पर ग्रामीण एवं शहरी दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में सार्थक अंतर पाया गया, क्योंकि शहरी दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के लक्षण रूप का मध्यमान (25.8), ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्यमान (24.56) की तुलना में सांख्यिकीय गणना से सार्थक रूप से अधिक है। इससे यह ज्ञात होता है कि शहरी दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अकादमिक

तालिका 6— शहरी एवं ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के विभिन्न आयामों पर गणना

क्र. सं.	दुश्चिंता के आयाम	कुल संख्या	आवास	मध्यमान	मानक त्रुटि	स्वातंत्र्य कोटि	t-परीक्षण
1.	अकादमिक दुश्चिंता के लक्षण	65	शहरी	25.8	3.53	189	2.55
		126	ग्रामीण	24.56	3.93		
2.	कमज़ोर अध्ययन आदतों के कारण दुश्चिंता	65	शहरी	25.67	3.63	189	0.32
		126	ग्रामीण	25.50	3.48		
3.	विषय के कारण दुश्चिंता	65	शहरी	17.60	3.19	189	0
		126	ग्रामीण	17.60	2.98		
4.	विश्वविद्यालय वातावरण के कारण दुश्चिंता	65	शहरी	27.61	4.01	189	1.65
		126	ग्रामीण	26.62	3.99		
5.	शिक्षक के कारण दुश्चिंता	65	शहरी	33.58	4.77	189	1.67
		126	ग्रामीण	32.34	5.06		
6.	परीक्षा के कारण दुश्चिंता	65	शहरी	30.81	4.98	189	1.68
		126	ग्रामीण	29.55	4.95		

दुश्चिंता के लक्षण होते हैं। अतः अकादमिक दुश्चिंता के लक्षण शहरी दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अधिक पाए जाते हैं। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को शिक्षा तथा प्रतियोगिता परीक्षाओं में प्रतिभाग करने का अधिक अवसर मिलता है, जिसके कारण शैक्षिक जीवन एवं भविष्यगामी करियर के प्रति जागरूकता बढ़ती है, जिसकी प्राप्ति हेतु एक अतिरिक्त मानसिक दबाव उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त अन्य शोधों से यह प्रमाणित हो चुका है कि सामाजिक कारकों से भी दुश्चिंता की स्थिति उत्पन्न होती है (यांग, 2018; दहमनी, 2010 और गुरेरा, 1990)। इसके साथ ही, शहरी क्षेत्रों में सामाजिक अंतर्क्रिया के सीमित अवसर मिलने के कारण भी अकादमिक दुश्चिंता के लक्षणों में वृद्धि होना एक कारण हो सकता है।

शोध के निष्कर्ष

आँकड़ों के विश्लेषण से निम्नलिखित शोध निष्कर्ष प्राप्त हुए—

- दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता के समंक सामान्य वितरण में सामान्य रूप से वितरित पाए गए।
- अधिकतर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में औसत स्तर की अकादमिक दुश्चिंता पाई गई, वहीं पर बहुत कम विद्यार्थियों में अत्यधिक अकादमिक दुश्चिंता पाई गई। इसी प्रकार से बहुत कम विद्यार्थियों में अत्यधिक कम अकादमिक दुश्चिंता पाई गई, लेकिन कोई भी दृष्टिबाधित अकादमिक दुश्चिंता के प्रभाव से अछूता नहीं था।
- जेंडर का दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि दृष्टिबाधित छात्रों में दृष्टिबाधित छात्राओं की तुलना में अधिक अकादमिक दुश्चिंता पाई गई, लेकिन दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं में अकादमिक दुश्चिंता के विभिन्न आयामों, जैसे— दुश्चिंता के लक्षण, कमज़ोर अध्ययन आदतों, विषय से, विश्वविद्यालय वातावरण से, शिक्षकों के कारण होने वाली दुश्चिंता दोनों में समान रूप से पाई गई, लेकिन परीक्षाओं के संदर्भ में दृष्टिबाधित छात्र, दृष्टिबाधित छात्राओं की तुलना में अधिक अकादमिक दुश्चिंतित पाए गए।
- ग्रामीण एवं शहरी दृष्टिबाधित विद्यार्थी एकसमान अकादमिक दुश्चिंता महसूस करते हैं। यद्यपि 'अधिवास' के आधार पर कोई अंतर प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन शहरी दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में ग्रामीण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक 'अकादमिक दुश्चिंता के लक्षण' पाए गए। अन्य अकादमिक दुश्चिंता के आयामों, जैसे— कमज़ोर अध्ययन आदतों से, विषय से, विश्वविद्यालय वातावरण से, शिक्षकों से एवं परीक्षाओं से होने वाली दुश्चिंता पर दोनों समान पाए गए।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध के परिणाम निम्नलिखित हितग्राहियों के लिए लाभकारी हो सकते हैं—

विश्वविद्यालय शिक्षक

प्रथम, दृष्टिबाधित विद्यार्थी अकादमिक रूप से दुश्चिंतित पाए गए, इसलिए विश्वविद्यालय के शिक्षक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता के लक्षणों को पहचान कर एवं अकादमिक

दुश्चिंता के नकारात्मक प्रभाव को कम करने हेतु निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम को शिक्षा प्रक्रिया का एक प्रमुख हिस्सा बनाकर, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं। द्वितीय, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता के परिणामों को देखते हुए विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोध के परिणामों का उपयोग स्वयं में भावात्मक परिवर्तन करने हेतु कर सकते हैं। यह भी देखा गया है कि शिक्षकों की अक्रामक भाषा शैली के कारण भी छात्रों में एक भय का वातावरण उत्पन्न हो जाता है, इसलिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों को मित्रवत, सहानुभूतिपूर्ण तथा शालीन व्यवहार दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के साथ करना चाहिए, ताकि वह हर प्रकार के भय से मुक्त हो सके। तृतीय, शिक्षकों द्वारा उनमें यह भावना विकसित करनी चाहिए कि वे अन्य प्रकार के उद्देश्यों या परिणामों पर अधिक ध्यान न देकर अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया को समृद्ध बनाने पर मुख्य रूप से अधिक ध्यान दें। चतुर्थ, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता में जेंडर भेद पाया गया है। अतः विश्वविद्यालय शिक्षकों को जेंडर भेद समाप्त करने हेतु युक्तियों को खोजने की आवश्यकता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थी

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में औसत स्तर की अकादमिक दुश्चिंता पाई गई। वहीं पर विभिन्न शोधों के शोध परिणामों (गबोरे, 2006 और अदेयेमो, 2005) से भी यह प्रमाणित हो चुका है कि अध्ययन आदतों एवं अकादमिक उपलब्धि में सकारात्मक संबंध होता है। कमज़ोर अध्ययन आदतें, कमज़ोर अकादमिक उपलब्धि का एक बड़ा कारण होती हैं। अतः मन में चिंता उत्पन्न होना स्वाभाविक है, इसलिए समर्थ अध्ययन आदतों, जैसे— ब्रेल भाषा में नोट्स तैयार करना, कक्षागत परिस्थितियों में शिक्षकों के व्याख्यान को रिकॉर्डिंग करने की कला, समय का उचित प्रबंधन, अभ्यास, ध्यान केंद्रीकरण, अंतःक्रिया के द्वारा पढ़ना, आईसीटी उपकरण का समुचित उपयोग कर अध्ययन करना आदि के विकास पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सतत रूप से ध्यान देना चाहिए।

जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय प्रशासन एवं भविष्य के शोध की प्रकृति

प्रथम, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में परीक्षा से जुड़ी दुश्चिंता अधिक प्राप्त हुई। उनका परीक्षा में निष्पादन इस बात पर निर्भर करता है कि सहयोगी लेखक किस प्रकार सहयोग एवं लेखन कार्य करता है। परीक्षा के दौरान दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के बौद्धिक निष्पादन की अपेक्षा सहयोगी लेखक के सहयोग के निष्पादन का प्रश्न है। अत: परीक्षा से जुड़ी दुश्चिंता के संदर्भ को दृष्टिगत रखते हुए जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय प्रशासन के द्वारा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के प्रति भावात्मक रूप से समर्पित ऐसे सहयोगी लेखकों की पहचान करके आवंटन या जोड़ना चाहिए, जो दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की पठन-पाठन एवं परीक्षाओं से जुड़ी समस्याओं से भली-भाँति परिचित हों, जिससे उन्हें अधिकतम सहयोग प्राप्त हो सके।

दूसरा, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता को निष्प्रभावी बनाने हेतु विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा व्यापक शोध कराए जाने की आवश्यकता है, क्योंकि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों

में औसत स्तर की अकादमिक दुश्चिंता प्राप्त हुई, जिसके अनेक कारक उत्तरदायी हो सकते हैं। आइए, इसे एक उदाहरण द्वारा समझते हैं, जैसे— माना कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में अकादमिक दुश्चिंता के 50 कारक हो सकते हैं। क्या सभी कारकों को एक साथ निष्प्रभावी किया जा सकता है? शायद नहीं! क्योंकि सभी कारकों को एक साथ निष्प्रभावी करना व्यावहारिक रूप से कठिन हो सकता है, इसलिए कारक विश्लेषण (फैक्टर एनालिसिस) के द्वारा अकादमिक दुश्चिंता के लिए उत्तरदायी उन कारकों को खोजना अति आवश्यक है, जिनका योगदान सर्वाधिक हो। क्योंकि हो सकता है कि 10 कारकों का योगदान अकादमिक दुश्चिंता में 60 प्रतिशत हो जबकि शेष 40 कारकों का योगदान मात्र 40 प्रतिशत हो। अतः स्वाभाविक है कि सबसे पहले 40 कारकों की अपेक्षा उन 10 कारकों को निष्प्रभावी करने की आवश्यकता है, जिनका योगदान दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अकादमिक दुश्चिंता में सर्वाधिक (60 प्रतिशत) है, ताकि अकादमिक दुश्चिंता को कम करने हेतु विश्वविद्यालय प्रशासन, शिक्षकों एवं सहयोगियों के द्वारा आवश्यक प्रभावी सकारात्मक कदम उठाए जा सकें।

संदर्भ

अदेयेमो, ओ. 2005. *इंप्रूविंग रीडिंग स्किल्स— अ हैंडबुक फ़ॉर स्टूडेंट्स*. अकवा: लकेंजा पब्लिशिंग. लंदन.

अलेसी, एम. और अन्य. 2015. इमोशनल प्रोफाइल एंड इंटेलेक्च्यूल फंक्शनिंग— ए कंपेरिजन अमंग चिल्ड्रेन विद बॉर्डर लाइन इंटेलेक्च्यूल फंक्शनिंग एंड गिफ्टेड इंटेलेक्च्यूल फंक्शनिंग. *जर्नल ऑफ़ साइकोलाजिकल अबनॉरमैलीटिज*. 28(1). पृष्ठ संख्या 1–9.

इर्कान, आई. और अन्य. 2008. एवोलुशन ऑफ़ एंग्जायटी अमंग मेडिकल एंड इंजीनियरिंग स्टूडेंट बाई फैक्टर एनालायसिस. *स्टूडिया साइकोलाजी*. 50(3). पृष्ठ संख्या 267–275.

इंगगिरो. 1999. रोल ऑफ़ सोशियो-इकोनोमिक स्टेट्स इन अकादमिक स्ट्रेस ऑफ़ सीनीयर सेकेन्ड्री स्टूडेंटस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांसड एजुकेशन एंड रिसर्च*. 1,12. पृष्ठ संख्या 44–50.

इसनेक. 2009. *द इफेक्ट ऑफ़ एंग्जायटी ऑन एकाडमिक अचीवमेंट ऑफ़ स्टूडेंट*. http://www.sciencedaily.com/releases/2009/06/090623090713.htm,.

कोरोल, जे.एम. और ई. जाने. 2006. एन असेसमेंट ऑफ़ एंग्जायटी लेवल इन डिसलेक्सिया स्टूडेंट इन हायर एजुकेशन. *ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलाजी*. 76(1). पृष्ठ संख्या 651–662.

गबोरे, अ. 2006. *फैक्टर्स वंडरिंग इफेक्टिव स्टडी हैबिट्स अमंग स्टूडेंट्स— अ हैंडबुक फ़ॉर स्टूडेंट्स इन कॉलेजेस एंड यूनिवर्सिटीज*. नाकुरु: एगेर्टोन पब्लिशिंग, टर्की.

गुरेरा, आर. डी. 1990. जेंडर एंड सोशल क्लास डिटरमाइन ऑफ़ एंग्जायटी इन द मैक्सीकन कल्चर. *क्रास कल्चर एंग्जायटी*. हेम्पसायर, यू.एस.ए.

चेन, डी. 2001. *विजुअल इम्पेयरमेंट इन यंग चिल्ड्रेन— अ रिव्यू ऑफ़ द लिट्रेचर विथ इम्प्लीकेशन फ़ॉर वर्किंग विद फैमिलीज़ ऑफ़ डाइवर्स कल्चरल एंड लिंगविस्टीक बैकग्राउंड*. http://clas.uiuc.edu/techreport/tech7.html. से प्राप्त.

जान और पी. मधु. 2018. एंग्जायटी डिसॉर्डर अमंग एडोलसेंस इन अ रूरल एरिया ऑफ़ नॉर्थ इंडिया. *इंडियन जर्नल ऑफ़ कम्यूनिटी मेडिसन अफिशल पब्लिकेशन ऑफ़ इंडियन एसोसिएशन ऑफ़ प्रेवएन्टीव एंड सोशल मेडिसन*. 44(4). पृष्ठ संख्या 31–37.

जॉनसन, आर. पी. 1985. एटीटयूड असेसमेंट एंड प्रमोशन ऑफ़ कॉलेज अटेंन्डेंस अमंग इकोनामिकली डिसएडवांटेड स्टूडेंट. *जर्नल ऑफ़ कालेज स्टूडेंट पर्सनल*. 26(अ). पृष्ठ संख्या 339–342.

जुबिन, एन. और ए. ए. आजाद. 2018. एकेडमिक एंग्जायटी अमंग एडोलसेंस इन इण्डिया. *स्कॉलरी रिर्सच जर्नल फ़ॉर इंटरडिसिप्लीनरी स्टडीज*. 44(5). पृष्ठ संख्या 10702–10716.

ट्रीफिनी, ए. और एम. शाहिनी. 2011. हाउ डज़ इग्ज़ाम एंग्जायटी अफेक्टेड द परफ़ॉरमेंस ऑफ़ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट?. *मेडेटेरियन जर्नल ऑफ़ सोशल साइंस*. 2(2). पृष्ठ संख्या 93–100.

दत्ता, पी. 2015. एन एक्सप्लोरेशन इन टू द सपोर्ट सर्विस फार स्टूडेंट्स विथ माइल्ड इनटलेक्चूअल डिसबिलिटी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इन्क्लूसिव एजुकेशन*. 19(3). पृष्ठ संख्या 235–249. DOI: 10.1080/13603116.2014.929185.

दत्ता, पी. और टी. जाय. 2016. द इंपैक्ट ऑफ़ सपोर्ट सर्विस ऑन स्टूडेंट टेस्ट एंजायटी आर देअर एबिलिटी टू सबमिट असाइनमेंट ए फोकस ऑन विजन इम्पेयरमेंट एंड इंटेलेक्च्यूअल डिसेबिलिटी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनक्लूसिव एजुकेशन*. 12 (4). पृष्ठ संख्या 408–411.

दहमनी, एस. 2010. प्रीमेडिकेशन विद कलोनिडीने इस सुपीरियर टु बेंजोडाइजेपाइन— ए मेटा एनालिसिस ऑफ़ पब्लिशड स्टडीज़. *एक्ट अनाथियोगिका स्कैनडिनाविका सुपलेमेटम*. अप्रैल. 54(4). पृष्ठ संख्या 397–402.

पेरिआंटों, ई. 2022. फैक्टर काजिंग एकेडमिक एंग्जायटी इन स्टूडेंट विद स्पेशल नीड्स. *के.एन.ई. सोशल साइंस*. 7(14). पृष्ठ संख्या 946–957.

फैजी और हार्डी. 1988. अ काटस्ट्रोफ मॉडल ऑफ़ एंग्जायटी एंड परफॉरमेंस.मई. 82(2). पृष्ठ संख्या 163–178.

मिनिस्ट्री ऑफ़ लॉ एंड जस्टिस. *द राइट्स ऑफ़ पर्सन्स विद डिसेबिलिटीज एक्ट, 2016*. (लेजिसलेटिव डिपार्टमेंट), भारत सरकार, नई दिल्ली.

महाजन, जी. 2015. एकेडमिक एंग्जायटी ऑफ़ सेकंड्री स्कूल स्टूडेंट इन रिलेशन टू देअर पैरेन्टल इनकरेजमेंट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस*. 3(4). पृष्ठ संख्या 23–29.

यांग, जेंग एवं अन्य. 2019. एन एक्सप्लोरेशन ऑफ़ प्राब्लमेटिक स्मार्टफ़ोन यूज अमांग चाइनिज यूनिवर्सिटी स्टूडेंट— एसोसिएशनस विद एकेडमिक एंग्जायटी, एकेडमिक प्रोकरेस्टीनेशन, सेल्फ़ रेगुलेशन एंड सब्जेक्टीव विलिंग. *इंटरनेशनल जर्नल मेंटल हेल्थ एडिक्शन*. 17(1). पृष्ठ संख्या 596–614. https//doi.org/10.1007/511469-018-9961-1

राव, बी. वी. 2005. स्टडी द एकेडमिक एंग्जायटी ऑफ़ सेकेंड्री स्कूल स्टूडेंट इन रिलेशन टू जेंडर एंड लोकलिटी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज, आर्ट एंड लिटरेसी*. 5(12). पृष्ठ संख्या 59–62.

रावत, पी. 2009. अकादमिक एंग्जायटी ऑफ़ रूरल अन सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंटस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड एनालीटिकल रिव्यूज़*. 6(1). पृष्ठ संख्या 676–678.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय. भारत सरकार, नई दिल्ली

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. 2002. *मेंटल हेल्थ एंड वेल बीइंग ऑफ़ स्कूल स्टूडेंट्स— ए सर्वे*. मनोदर्पण सेल डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी एंड फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

लिगी, एम. और अन्य. 2007. द रोल ऑफ़ एंग्जायटी सिम्टम्स इन स्कूल परफॉरमेंस इन अ कम्युनिटी सैंपल ऑफ़ चिल्ड्रेन एंड एडोलसेंस. *बी.एम.सी. पब्लिक हेल्थ*. 7(347).

शकीरा, एस. 2014. टेस्ट एंग्जायटी इन एडोलसेंस विद डिसेबिलिटी एंड विहैवियर डिसऑर्डर. *एक्सेप्शनल चिल्ड्रेन*. 62(5). पृष्ठ संख्या 389–397.

शर्मा, एस और एम. शाकिर. 2019. स्टडी ऑफ़ एकेडमिक एंग्जायटी ऑफ़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू लोकल एंड टाइप ऑफ़ स्कूल. *रिसर्च एंड रिफ्लेक्शंस ऑन एजुकेशन*. 17(04). पृष्ठ संख्या 1–9.

शाह, पी. 2019. एंग्जायटी, डिप्रेशन, सेल्फ़ स्टीम इन लर्निंग डिसेबिलिटी. *इण्डियन जर्नल ऑफ़ मेंटल हेल्थ*. 6(4). पृष्ठ संख्या 368–376.

सिद्दीकी, एम. अ एवं अ. यू. रहमान. 2017. *अकादमिक दुश्चिंता मापनी*. एच.पी भार्गवा बुक हाउस. आगरा.

सुधीर, के. वी. 2021. जेंडर डिफरेंसेस इन एकेडमिक एंग्जायटी एंड एजुकेशनल एस्पिरेशन ऑफ़ एडोलिसेंट्स लिविंग इन सिंगल पैरंट फैमिली. *इंटरनेशनल जर्नल फ़ॉर इन्नोवेटिव रिसर्च इन मल्टीडिसीप्लिनरी फील्ड*. 7(03). पृष्ठ संख्या 149–152.

सुल्तान, आई और एस.अ. भट्ट. 2019. एकेडमिक एंग्जायटी ऑफ़ रूरल अर्बन सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. आई.जे.आर.ए. आर., वॉल्यूम 6, अंक 01, पृष्ठ संख्या 676–678.

हैंडकॉक, डी. आर. 2001. इफेक्ट ऑफ़ टेस्ट एंग्जायटी एंड इवेलूयेटिव थ्रेट ऑन स्टूडेंट्स अचीवमेंट एंड मोटिवेशन. *द जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च*. 94(5), पृष्ठ संख्या 284–290. DOI: 10.1080.00220670109598764

हेरिंग, एम.पी., सी.ई. क्लेन एवं पी.जे. कानन. 2015. इफैक्ट ऑफ़ एक्सरसाइज ऑन स्लीप अमंग यंग विमेन विद जनरलाइज्ड एंग्जाइटी डिसऑर्डर. मेंटल हेल्थ एण्ड फिजीकल एक्टीविटी. 17(03). 23–27.

विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि की प्रभावशीलता

अंजुली सुहाने*

सहयोगी-अधिगम एक ऐसी निर्देशात्मक विधि है, जिसमें एक शिक्षक के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को सीखने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए छोटे समूहों में काम करना होता है। इसमें कक्षा की गतिविधियों को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि विद्यार्थियों को शैक्षणिक तथा सामाजिक अधिगम का अनुभव प्राप्त हो सके। अकादमिक उद्देश्यों एवं कार्यों को पूरा करने तथा जीवन जीने के कौशलों को सीखने के लिए विद्यार्थी एक समूह के रूप में काम करते हैं। विज्ञान शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विद्यार्थियों को साथियों से सीखकर वैज्ञानिक परिघटनाओं पर समझ विकसित करने तथा परीक्षण साझा करने में सहायता करता है, जिसके परिणामस्वरूप उनमें विषय का ज्ञान एवं समझ बढ़ती है। यह शोध-पत्र विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि की प्रभावशीलता पर किए गए शोध अध्ययन पर आधारित है। इस शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा शोध अभिकल्प के रूप में अर्द्ध-प्रायोगिक अभिकल्प का प्रयोग किया गया था। उद्देश्यपूर्ण तरीके से मध्यप्रदेश के भोपाल जिले के केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) से संबद्ध एक विद्यालय की 9वीं कक्षा के 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस अध्ययन में पाया गया कि सहयोगी-अधिगम विधि से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि, परंपरागत विधि से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में अधिक थी। साथ ही, सहयोगी-अधिगम शिक्षण विधि का प्रयोग करने से विद्यार्थियों में सामाजिक-सहयोगी कौशल का विकास हुआ अर्थात परस्पर निर्भरता, परस्पर संवाद, व्यक्तिगत जवाबदेही, समूह कौशल, समूह भागीदारी आदि बढ़ी है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यह विधि विद्यालयों में प्रतिस्पर्धी अधिगम वातावरण को सहयोगी-अधिगम वातावरण में परिवर्तित करने में सहायता करती है।

शिक्षा उच्च मानव क्षमता प्राप्त करने, एक न्यायसंगत समाज के विकास तथा राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। इसलिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कहा गया है कि एक अच्छा शिक्षा संस्थान वह है, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी का स्वागत किया जाता है तथा उसकी देखभाल की जाती है, जहाँ एक सुरक्षित एवं अनुकूल सीखने का वातावरण हो। साथ ही, सीखने के अनुभव प्रदान करने के पर्याप्त अवसर हों। शिक्षकों एवं माता-पिता को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के प्रति संवेदनशील बनाकर तथा उन्हें प्रत्येक बच्चे के समग्र विकास में सहभागी बनाकर विद्यार्थियों में निहित अनूठी

**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110068

क्षमता को पहचानकर आगे बढ़ाया जाता है। इन गुणों को प्राप्त करना प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए। रटने की बजाय अवधारणात्मक समझ पर ज़ोर; तार्किक निर्णय लेने तथा नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए रचनात्मकता तथा तार्किक सोच का विकास, आवश्यक जीवन कौशल, आपसी संवाद, सहयोग, समूह में काम, लचीलापन का विकास तथा पोषण करना, नैतिकता एवं मानवीय तथा संवैधानिक मूल्य, जैसे— सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना इत्यादि का विकास राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल तत्व हैं। इस प्रकार इस नीति के मूल में बच्चों का समग्र विकास है। अतः कह सकते हैं कि अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया ऐसी हो जिससे बच्चे का समग्र विकास हो।

विज्ञान शिक्षण भी बच्चे के सर्वांगीण विकास में योगदान देता है। इसलिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में बताया गया है कि विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य केवल विज्ञान की संकल्पनाओं का ज्ञान कराना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में तर्क करने की क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता, संप्रेषण कौशल, समस्या का समाधान करने की क्षमता आदि विकसित करना है। विज्ञान शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को दैनिक जीवन के काम की माँगों को पूरा करने तथा चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाना है। किसी भी काम में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए न केवल ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है, बल्कि संप्रेषण कौशल, नेतृत्व की गुणवत्ता, तार्किक सोच तथा सुनने के कौशल आदि की भी आवश्यकता होती है। बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए कक्षा में ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक कौशलों के विकास पर आधारित गतिविधियाँ होनी चाहिए। शिक्षण-अधिगम में नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी समूह में काम करें, आपस में संवाद करें, क्योंकि खोज एवं नवाचार प्रायः सहयोगात्मक तथा सहयोगी कार्य का परिणाम होते हैं। विज्ञान विषय में विद्यार्थियों को प्रायोगिक कार्य के दौरान सामूहिक कार्य करने के अधिक अवसर मिलते हैं। अत: शिक्षकों को कक्षा में पढ़ाते समय ऐसी अधिगम-शिक्षण विधियों का चयन करना चाहिए, जिसमें विद्यार्थी आपस में बातचीत तथा चर्चा कर सीखें। सहयोगी-अधिगम एक ऐसी अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया है, जिसमें विद्यार्थी छोटे समूह में एक साथ काम करते हुए सीखते हैं। विभिन्न शोध अध्ययनों में ज्ञात हुआ है कि सहयोगी-अधिगम विधि से विद्यार्थी बेहतर सीखते हैं तथा यह विधि विद्यालयों में प्रतिस्पर्धी अधिगम वातावरण को सहयोगी-अधिगम वातावरण में परिवर्तित करने में सहायता करती है।

सहयोगी-अधिगम विधि

सहयोगी-अधिगम एक निर्देशात्मक विधि है, जो विद्यार्थियों को छोटे समूह में सीखने तथा काम करने के लिए प्रेरित करती है। इसमें विद्यार्थियों के मिश्रित क्षमता वाले तथा छोटे शिक्षण समूहों में समूहीकरण किया जाता है, क्योंकि समूह के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विद्यार्थी छोटे समूहों में सहयोगी तथा अन्योन्याश्रित रूप से एक साथ काम करते हैं (वेंडी, 2005)। टेमेस्जेन और एनुनुवे (2014) का कहना है कि सहयोगी-अधिगम में विद्यार्थी समूहों में संगठित होते हैं, जिसमें वे व्यक्तिगत

सदस्य की सफलता के बजाय समूह की सफलता के अनुसार पुरस्कृत होते हैं। इस प्रकार स्लाविन (1995) सहयोगी-अधिगम को विद्यार्थी-केंद्रित विधि के रूप में मानते हैं।

सामान्य शब्दों में, सहयोगी-अधिगम एक ऐसी निर्देशात्मक विधि है। इसमें एक शिक्षक के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को सीखने के लक्ष्य को या सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए छोटे समूहों में काम करना होता है। इसमें कक्षा की गतिविधियों को इस प्रकार संचालित किया जाता है कि विद्यार्थियों को अधिकतम सीखने के अनुभव प्राप्त हो सकें। इस प्रकार सहयोगी-अधिगम में विविध पद्धतियों का उपयोग किया जाता है, जैसे— रचनात्मक संवाद, जिग्सॉ, विद्यार्थी टीम उपलब्धि प्रभाग (एस.टी.ए.डी.), जटिल निर्देश, टीम त्वरित निर्देश (टी.ए.आई.), सहयोगी शिक्षण संरचनाएँ, सोचो-जोड़ा बनाओ, साझा करो आदि। शिक्षकों को शिक्षण उद्देश्यों तथा विषयवस्तु के आधार पर इनमें से उपयुक्त सहयोगी-अधिगम की पद्धति का चयन करना होगा। इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर 'जिग्सॉ' पद्धति का चयन किया गया था।

सहयोगी-अधिगम में जिग्सॉ (JIGSAW) पद्धति

जिग्सॉ एक सहयोगी-अधिगम शिक्षण पद्धति है, जिसमें विद्यार्थी अपने समूह के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक साथ समूह में काम करते हैं। विज्ञान शिक्षण-अधिगम में यह विधि अन्वेषण एवं प्रयोग के साथ-साथ परियोजना कार्य के लिए भी उपयोगी है। जिग्सॉ में विद्यार्थी समूह के अन्य सदस्यों के साथ अपनी विशेषज्ञता साझा करते हैं तथा समूह कार्य को पूरा करने में योगदान देते हैं। इस विधि में विद्यार्थियों के दो समूह होते हैं— एक 'गृह समूह' तथा दूसरा 'विशेषज्ञ समूह'।

समूह की रचना

शिक्षक सर्वप्रथम विद्यार्थियों के 'गृह समूह' बनाकर किसी विषयवस्तु के उप-विषयों को समूह के सदस्यों में बाँटता है। विद्यार्थी दिए गए उप-विषय पर आपस में चर्चा, विचार-विमर्श, क्रियात्मक शोध, प्रोजेक्ट, फील्ड विज़िट इत्यादि कर सीखते हैं।

समूहों की पुनर्रचना

गृह समूह द्वारा अपना कार्य पूरा कर लेने के पश्चात ये समूह पुनर्संरचित किए जाते हैं। इन सभी समूहों का एक-एक सदस्य मिलकर नया समूह बनाते हैं, जो दूसरे समूहों को अपने पहले समूह की प्राप्तियों एवं अनुभवों को साझा करते हैं। जिग्सॉ पद्धति में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। यहाँ शिक्षक एक सूत्रधार की भूमिका निभाता है, जो विद्यार्थियों को विषयों की पहचान करने, समूहों को तैयार करने, गतिविधि की प्रकृति की व्याख्या करने तथा एक ऐसा वातावरण बनाने में मदद करता है, जहाँ विचारों के मुक्त प्रवाह को प्रोत्साहित किया जाता है। वह समूहों की गतिविधियों का अवलोकन करता है तथा उन्हें एक-दूसरे के साथ साझा करने में मदद करता है। सहयोगी-अधिगम विधि की इन्हीं विशेषताओं के आधार पर इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सहयोगी-अधिगम विधि का चयन किया गया था।

शोध अध्ययन का औचित्य

सहयोगी-अधिगम विधि की प्रभावशीलता से संबंधित देश-विदेशों में बहुत शोध कार्य हुए हैं। टौमासिस (2004) ने 8वीं से10वीं कक्षा के विद्यार्थियों की गणितीय पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने तथा समझने की क्षमता पर सहयोगी शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि विद्यार्थियों द्वारा सहयोगी रूप से काम करने से उन्हें नए मित्र बनाने तथा दूसरे विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताओं, मत इत्यादि की सराहना करना सीखने में मदद मिली। बाघचेघी और अन्य (2011) ने पाया कि सहयोगी शिक्षण नर्सिंग विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल में सुधार तथा वृद्धि के लिए एक प्रभावी तरीका है। वांग (2009) ने अपने शोध में पाया कि सहयोगी शिक्षण से विद्यार्थियों को कई अनुभव प्राप्त हुए तथा उन्हें कड़ी मेहनत करने के लिए अधिक प्रेरित किया गया, जिससे कक्षा में सकारात्मक वातावरण बना। सीगल (2005) ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक कौशलों को बढ़ाने में तथा विद्यालय सुधार के लिए सहयोगी शिक्षण को उपयोगी बताया। मेहता और कुलश्रेष्ठ (2014) ने पाया कि सहयोगी शिक्षण ने विज्ञान की कक्षा में विद्यार्थियों को समूह में काम करने की भावना विकसित की तथा इससे उनके निष्पादन में भी सुधार हुआ। कुमार और कुमारी (2021) ने पाया कि सहयोगी-अधिगम ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की गणित में उपलब्धि को बढ़ाने में मदद की।

अतः उक्त शोध अध्ययनों में शैक्षिक उपलब्धि पर सहयोगी-अधिगम की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया या सामाजिक-सहयोगी कौशलों के विकास में सहयोगी-अधिगम की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया। इसलिए शोधार्थी द्वारा शोध समस्या या विषय के रूप में विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक-सहयोगी कौशल के विकास पर सहयोगी-अधिगम विधि के प्रभाव का अध्ययन करने का निर्णय लिया गया।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक-सहयोगी कौशलों के विकास पर सहयोगी-अधिगम विधि के प्रभाव का अध्ययन करना था।

परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ थीं—

- सहयोगी-अधिगम विधि से पढ़ने के पश्चात नियंत्रित समूह तथा प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि के प्रयोग से पहले तथा प्रयोग के बीच में प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि के प्रयोग से पहले तथा प्रयोग के बाद में प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कार्यात्मक परिभाषाएँ

सहयोगी अधिगम विधि— इस शोध अध्ययन में सहयोगी अधिगम विधि से शिक्षण-अधिगम करने के लिए 'जिग्सॉ' पद्धति का प्रयोग किया गया था।

इस समूह गतिविधि में प्रत्येक सदस्य विषयवस्तु के अपने हिस्से में निपूर्णता प्राप्त करने तथा अन्य सदस्यों को विषयवस्तु समझाने के लिए ज़िम्मेदार होता है।

शैक्षिक उपलब्धि— शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों के विज्ञान विषय में प्राप्तांकों से है, जिसका विज्ञान विषय के पाठों की विषयवस्तु के आधार पर विकसित स्व-निर्मित उपलब्धि परीक्षण द्वारा प्राप्त किया गया था।

सामाजिक-सहयोगी कौशल— इस शोध अध्ययन में सामाजिक-सहयोगी कौशल से तात्पर्य विद्यार्थियों के सहयोगी तथा सामाजिक गुण, जैसे— परस्पर निर्भरता, परस्पर संवाद, व्यक्तिगत जवाबदेही, समूह कौशल, समूह में सहभागिता से है।

शोध प्रविधि तथा अभिकल्प

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा उद्देश्यों की पूर्ति तथा परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए अर्द्ध-प्रायोगिक अभिकल्प का प्रयोग किया गया था। इसमें अर्द्ध-प्रायोगिक पूर्व परीक्षण-पश्च परीक्षण समतुल्यता विहीन समूह अभिकल्प (प्री टेस्ट-पोस्ट टेस्ट नॉन एक्विवलेंट ग्रुप्स डिज़ाइन) का प्रयोग किया गया था।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक-सहयोगी कौशलों पर सहयोगी-अधिगम विधि का प्रभाव ज्ञात करने के लिए वर्ष 2022 में उद्देश्यपूर्ण विधि से मध्यप्रदेश के भोपाल जिले के केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी. बी.एस.ई.) से संबद्ध एक विद्यालय की 9वीं कक्षा का चयन किया गया था। चयनित विद्यालय में कक्षा 9वीं के पाँच वर्ग थे। इस शोध अध्ययन के लिए इन पाँच वर्गों में से दो वर्गों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि से प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह में चयनित किया गया था। जिसमें 25–25 विद्यार्थी थे।

अध्ययन उपकरण

निर्देशात्मक उपकरण

सहयोगी-अधिगम विधि के अंतर्गत जिग्सॉ पद्धति— स्वतंत्र चर सहयोगी-अधिगम विधि का प्रभाव आश्रित चर शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक-सहयोगी कौशल पर ज्ञात करने के लिए शोधार्थी द्वारा कक्षा 9वीं की राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) की विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक से भौतिक विज्ञान के तीन पाठों का चयन किया गया था। इन पाठों को शोधार्थी द्वारा 9 दिन तक प्रायोगिक समूह को सहयोगी-अधिगम विधि के अंतर्गत जिग्सॉ पद्धति से तथा नियंत्रित समूह को परंपरागत शिक्षण विधि से पढ़ाया गया।

मापन उपकरण

(क) शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (स्व-निर्मित)— विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सहयोगी-अधिगम विधि का प्रभाव ज्ञात करने के लिए शोधार्थी द्वारा कक्षा 9वीं की रा.शै.अ.प्र.प. की विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक से भौतिक विज्ञान के तीन पाठ— गति, बल तथा गति के नियम तथा गुरुत्व की विषयवस्तु के आधार पर उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया गया। शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर, पाठों का विश्लेषण कर प्रश्नों की संख्या, प्रश्नों के प्रकार तथा अंकन प्रक्रिया निर्धारित कर ब्लू प्रिंट तैयार कर प्रश्नों का निर्माण किया गया। शोधार्थी द्वारा उपकरण के प्रथम प्रारूप

तालिका 1— उपलब्धि परीक्षण का विवरण

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	प्रत्येक प्रश्न का अंक	प्रत्येक प्रकार के प्रश्न के कुल अंक
बहुविकल्पीय	10	1	10
रिक्त स्थान की पूर्ति	10	1	10
लघु उत्तरीय	5	2	10
कुल	25		30

का सत्यापन विषय विशेषज्ञों द्वारा करवाया गया तथा उनके सुझावों के आधार पर उपकरण को अंतिम रूप दिया गया था। इस परीक्षण में विभिन्न प्रकार के कुल 25 प्रश्न थे, जिनका विवरण तालिका 1 में दिया गया है।

शोधार्थी द्वारा इस उपकरण की कारक वैधता स्थापित की गई तथा उपकरण की विश्वसनीयता अर्द्ध-विच्छेद विधि द्वारा ज्ञात की गई, जिसका विश्वसनीयता गुणांक 0.65 ज्ञात हुआ।

(ख) सामाजिक-सहयोगी कौशल अवलोकन मापनी— विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल पर सहयोगी-अधिगम विधि का प्रभाव ज्ञात करने के लिए शोधार्थी द्वारा मेहता और कुलश्रेष्ठ (2014) द्वारा विकसित अवलोकन अनुसूची (मापनी) का उपयोग किया गया था। इस मापनी के पाँच घटक हैं, जो सहयोगी शिक्षण पद्धति के पाँच मुख्य गुणों पर आधारित हैं। इन पाँच घटकों पर आधारित 14 कथन थे तथा वे सभी कथन सकारात्मक थे, जिसका विवरण तालिका 2 में दिया गया है—

तालिका 2— सामाजिक-सहयोगी कौशल अवलोकन मापनी का विवरण

सहयोगी-अधिगम विधि के घटक	कथनों की संख्या
सकारात्मक परस्पर निर्भरता	3
व्यक्तिगत जवाबदेही	3
समूह कौशल	4
समूह प्रसंस्करण	4
आमने-सामने की बातचीत	कक्षा की व्यवस्था

इस मापनी के सभी कथनों को पाँच-बिंदु पैमाने— कभी नहीं, शायद ही कभी, कभी-कभी, आमतौर तथा हमेशा पर मापा गया, जिनका मूल्य 1, 2, 3, 4, 5 निर्धारित किया गया था। इस मापनी का पुनःपरीक्षण विधि पर ज्ञात विश्वसनीयता गुणांक 0.85 था। इस मापनी का विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रत्यक्ष की वैधता तथा सामग्री वैधता के आधार पर विश्लेषण किया गया तथा उन्होंने इस मापनी को वैध पाया।

प्रयोग प्रक्रिया

शोधार्थी द्वारा 9वीं कक्षा के दो वर्गों (वर्ग अ तथा वर्ग ब) में से एक वर्ग 'अ' को नियंत्रित तथा दूसरे वर्ग 'ब' को प्रायोगिक समूह में वर्गीकृत किया गया था। प्रत्येक वर्ग में 25–25 विद्यार्थी थे। उपचार के पूर्व दोनों वर्गों के विद्यार्थियों को उपलब्धि परीक्षण दिया गया था। तत्पश्चात शोधार्थी द्वारा भौतिक विज्ञान के तीन पाठ 'गति', 'बल तथा गति के नियम' तथा 'गुरुत्व' को नौ (9) दिन तक कक्षा 9वीं के वर्ग 'अ' (नियंत्रित समूह) को पारंपरिक विधि से पढ़ाया तथा कक्षा 9वीं के वर्ग 'ब' (प्रायोगिक) को सहयोगी-अधिगम विधि की जिग्सॉ पद्धति से पढ़ाया गया अर्थात उपचार दिया गया। उपचार के पश्चात दोनों वर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने

के लिए उपलब्धि परीक्षण प्रशासित किया गया। इस प्रकार प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण 't' परीक्षण से किया गया।

शोधार्थी द्वारा नौ दिन की अवधि के दौरान प्रायोगिक वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक-सहयोगी कौशल का मापन तीन बार किया गया, जो पहले दिन, पाँचवें दिन और नौवें दिन किया गया था। सुनने, चर्चा शुरू करने, नेतृत्व करने तथा सहभागिता करने के कौशल को प्रत्यक्ष अवलोकन कर अनुसूची में अंकित किया गया। तत्पश्चात शोधार्थी द्वारा पहले दिन के अवलोकन की तुलना पाँचवें दिन के अवलोकन से की गई, ताकि यह आकलन किया जा सके कि इस अवधि के दौरान विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में अंतर था या नहीं। अंत में पहले दिन के अवलोकन की तुलना नौवें दिन के अवलोकन से की गई। इस अंतर का सांख्यिकीय विधि मान व्हिटनी U परीक्षण की सहायता से विश्लेषण किया गया।

शोधार्थी द्वारा उपचार के दौरान प्रतिदिन निम्न शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अनुसरण किया गया था—

आँकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्या

- अध्ययन का प्रथम उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर सहयोगी-अधिगम विधि के प्रभाव का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य के तहत शून्य परिकल्पना (सहयोगी-अधिगम विधि से पढ़ाने (उपचार) के पश्चात नियंत्रित समूह तथा प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है) का निर्माण किया गया था, जिसका सत्यापन करने के लिए आँकड़े तालिका 3 (पृष्ठ 97) में प्रस्तुत किए गए हैं।

विद्यार्थियों को पाँच-पाँच के समूह में विभाजित किया गया। प्रत्येक समूह के एक सदस्य को समूह के नेता के रूप में नियुक्त किया गया। इन समूहों को अपनी पसंद के उप-विषयों को चयन करने के लिए कहा गया। उदाहरण के लिए, जिस दिन शोधार्थी को गति के नियम पढ़ाना था, उस दिन उन्होंने सभी समूहों को उपविषय, जैसे— गति का प्रथम नियम, गति का द्वितीय नियम, गति का तृतीय नियम, संवेग संरक्षण, जड़त्व एवं द्रव्यमान आदि में से उपविषय चयन करने के लिए कहा।

अगले चरण में समूह के प्रत्येक सदस्य को उसके द्वारा कार्य चयन के लिए कहा गया, जैसे— सूचना का संग्रह, उदाहरण, चित्र बनाना आदि। उदाहरण के लिए, पहले समूह ने उपविषय के रूप में गति के प्रथम नियम का चयन कर इस प्रकार कार्य किया—

सदस्य 1— सैद्धांतिक पृष्ठभूमि से संबंधित जानकारी एकत्र करना
सदस्य 2— उदाहरणों की पहचान करना
सदस्य 3— चार्ट पेपर पर चित्र बनाना
सदस्य 4— गति के पहले नियम के महत्व की व्याख्या करना
सदस्य 5— दैनिक जीवन से जोड़ना

इसी तरह अन्य समूहों के सदस्यों ने भी आपस में कार्यों का वितरण कर पूरा किया। दोबारा, समूहों को पुनर्वितरित किया गया, ताकि प्रत्येक समूह का सदस्य, नए समूह का हिस्सा बनकर अपने द्वारा किए गए कार्य एवं अनुभव को एक-दूसरे के साथ साझा कर सकें।

तालिका 3— प्रायोगिक तथा नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि का 't' मान

चर	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यामन	मानक विचलन	't' मान
नियंत्रित समूह की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि	25	15	2.34	5.82**
प्रायोगिक समूह की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि	25	18	3.15	

नोट **p<0.05

तालिका 3 के आधार पर शून्य परिकल्पना 'उपचार के पश्चात नियंत्रित समूह तथा प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है, क्योंकि स्वतंत्रता की कोटि 48 पर 't' (5.82) का मान 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है अर्थात उपचार के पश्चात नियंत्रित समूह तथा प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। तालिका 3 में दर्शाए गए मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि सहयोगी-अधिगम विधि से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि परंपरागत विधि से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में अधिक है। क्योंकि सहयोगी-अधिगम विधि से पढ़ते समय विद्यार्थी सक्रिय रहते हैं और उनके लिए यह सीखने की प्रक्रिया रुचिकर होती है। वे समूह में रहकर चर्चा करके तथा प्रश्न पूछकर स्वयं अपने ज्ञान का सृजन करते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि अधिक हो सकती है।

- अध्ययन का द्वितीय उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल के विकास पर सहयोगी-अधिगम विधि के प्रभाव का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य के अंतर्गत शून्य परिकल्पनाओं 'विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि के प्रयोग से पहले तथा प्रयोग के बीच में प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है।' साथ ही 'विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि के प्रयोग से पहले तथा प्रयोग के बाद में प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है।' का निर्माण किया गया था, जिसका सत्यापन करने के किए आँकड़े तालिका 4 में प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 4— तीन बार किए गए सामाजिक-सहयोगी कौशल अवलोकन के बीच अंतर

दिन	न्यादर्श संख्या	कोटिओं (रेंक) का योग	'U' मान	U
पहला दिन (1)	25	450	500	125**
पांचवा दिन (2)	25	825	125	
पहला दिन (3)	25	375	575	50**
नौवां दिन (4)	23	900	50	

नोट **p<0.05

तालिका 4 से स्पष्ट है कि पहले तथा पाँचवें दिन के औसत अंकों की तुलना मान-व्हिटनी U टेस्ट के ज़रिए की गई तथा 'U' का मान 0.05 के सार्थकता के स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 'विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि के प्रयोग से पहले तथा प्रयोग के बीच में प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को अस्वीकृत किया जाता है। इसका तात्पर्य है कि पहले तथा पाँचवें दिन विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल के बीच 0.05 सार्थकता स्तर पर अंतर है। 'U' का मान यह दर्शाता है कि सहयोगी-अधिगम विधि से विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में पहले दिन की तुलना में पाँचवें दिन सुधार हुआ है।

इस प्रकार, तालिका 4 से यह भी स्पष्ट होता है कि जब पहले तथा नौवें दिन के औसत अंकों की तुलना मान-व्हिटनी U टेस्ट द्वारा की गई तो 'U'सांख्यिकी का मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 'विज्ञान विषय के शिक्षण में सहयोगी-अधिगम विधि के प्रयोग से पहले तथा प्रयोग के बाद में प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है' को अस्वीकृत किया जाता है। इसका तात्पर्य है कि पहले तथा नौवें दिन विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल के बीच 0.05 सार्थकता स्तर पर अंतर पाया गया। इस प्रकार 'U' का मान यह दर्शाता है कि सहयोगी-अधिगम विधि से विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में नौ दिनों में सुधार हुआ है।

मान व्हिटनी U टेस्ट में 'U' का मान जितना कम होगा, दो मानों के बीच का अंतर उतना ही अधिक होगा। तालिका 4 से स्पष्ट है कि पहले दिन तथा नौवें दिन का 'U' का मान पहले तथा पाँचवें दिन 'U' से कम है। इसका तात्पर्य है कि पहले दिन तथा नौवें दिन के बीच विद्यार्थियों के सामाजिक-सहयोगी कौशल में अधिकतम अंतर है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लगातार नौ दिन तक सहयोगी-अधिगम शिक्षण विधि का प्रयोग करने से विद्यार्थियों में सामाजिक-सहयोगी कौशल का विकास हुआ अर्थात परस्पर निर्भरता, परस्पर संवाद, व्यक्तिगत जवाबदेही, समूह कौशल, समूह भागीदारी बढ़ी है।

बाघचेघी और अन्य (2011), वांग (2009) और सीगल (2005) ने भी अपने शोध अध्ययनों में पाया कि सहयोगी-अधिगम विधि के द्वारा विद्यार्थियों के सुनने के कौशल, विचारों की अभिव्यक्ति की शक्ति, समूह के सदस्यों की मदद, पहल की गुणवत्ता, विचारों की प्रासंगिकता तथा समूह में भागीदारी अर्थात सामाजिक-सहयोगी कौशल को बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार हम पाते हैं कि इन सभी शोध अध्ययनों के परिणाम प्रस्तुत शोध अध्ययन के पक्ष में हैं। परिणामतः कहा जा सकता है कि सहयोगी-अधिगम विधि की जिग्सॉ पद्धति के प्रयोग में जब विद्यार्थी एक समूह से दूसरे समूह में जाते हैं तथा उनके द्वारा सोचे गए संबंधित विषय की अवधारणा को व्यक्त करते हैं, तो उनमें संप्रेषण कौशल विकसित होता है। जब एक समूह के विशेषज्ञ दूसरे समूह को अवधारणा समझाने के लिए आगे बढ़ते हैं, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपनी बात रखते हैं जिससे उनमें नेतृत्व क्षमता भी आ जाती है। वे

विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हैं तथा समूहों के बीच अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं, तब उनमें परस्पर संवाद, व्यक्तिगत जवाबदेही, समूह भागीदारी तथा समूह कौशल जैसे गुण विकसित होते हैं।

निष्कर्ष

सहयोगी-अधिगम विधि से शिक्षण न केवल विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि अर्थात विज्ञान विषय की समझ को बढ़ाता है। साथ ही सामाजिक-सहयोगी कौशल अर्थात परस्पर निर्भरता, परस्पर संवाद, व्यक्तिगत जवाबदेही, समूह कौशल, समूह भागीदारी आदि को भी बढ़ाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस प्रयोग में एक विद्यार्थी सहयोगी कक्षा-कक्ष में, शिक्षक सूत्रधार तथा मार्गदर्शक की भूमिका ग्रहण करता है। इस विधि में विद्यार्थी अपने सीखने की ज़िम्मेदारी स्वयं लेते हैं, वे प्रश्न पूछते हैं, समस्याएँ बताते हैं, गतिविधियाँ डिज़ाइन करते हैं तथा दूसरों के साथ उनके परिणामों पर चर्चा करते हैं। इससे उनकी विज्ञान विषय की समझ बढ़ती है, क्योंकि वे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं तथा समूह में कार्य करते हुए, जीवन कौशल सीखते हैं। इस शोध अध्ययन के परिणाम के आधार पर हम कह सकते हैं कि सहयोगी-अधिगम, विज्ञान विषय की विभिन्न अवधारणाओं के बारे में नई समझ विकसित करने का एक उत्कृष्ट साधन है। साथ ही, इसकी सहायता से सामाजिक-सहयोगी कौशल को बढ़ाया जा सकता है। जब सहयोगी-अधिगम विधि से एक ओर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ रही है अर्थात उनका ज्ञानात्मक पक्ष सुदृढ़ हो रहा है। वहीं दूसरी ओर उनमें सामाजिक-सहयोगी कौशल भी विकसित हो रहे हैं अर्थात भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष भी सुदृढ़ हो रहा है, इसलिए सहयोगी-अधिगम विधि का प्रयोग विज्ञान शिक्षण में अधिक से अधिक होना चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के परिणामों के आधार पर अनुशंसा की जा सकती है कि शिक्षकों को सहयोगी-अधिगम विधि द्वारा विद्यार्थियों में विभिन्न विषयों की अवधारणाओं के बारे में नए विचारों एवं तर्कशक्ति का विकास करने, गहन समझ को बढ़ावा देने तथा सामाजिक-सहयोगी कौशल को विकसित करने के लिए उपयोग करना चाहिए। यह विधि विद्यार्थियों को कौशलों में विकास करने का अवसर देती है। इस विधि का पूरा लाभ प्राप्त करने के लिए वर्तमान एवं भावी शिक्षकों को सहयोगी-अधिगम विधि द्वारा शिक्षण करने के लिए प्रशिक्षित करना होगा। इसके लिए हमें शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों, जैसे— बी.एड., डी.एल.एड. आदि के पाठ्यक्रम में सहयोगी-अधिगम विधि को एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में रखना होगा।

संदर्भ

इग्नू. 2017. बी.ई.एस.- 141, *विज्ञान शिक्षणशास्त्र*. खंड 2. इकाई 6, पृष्ठ संख्या 44. इग्नू. नई दिल्ली.

कुमार, आर. और एम. कुमारी. 2021. स्टडी ऑफ़ इफ़ेक्टिवनेस ऑफ़ कोपरेटिव लर्निंग ऑन अकेडमिक अचीवमेंट ऑफ़ मेथमेटिक्स. *जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन*. XLVII(2), पृष्ठ संख्या 39–56.

टौमासिस, सी. 2004. कोपरेटिव स्टडी टीम्स इन मैथमेटिक्स क्लासरूम. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मैथमेटिकल एजुकेशन इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी*. 35, (5), पृष्ठ संख्या 669–679.

टेमेस्जेन और एनुनुवे. 2014. इफेक्ट ऑफ़ जिग्सॉ को-ओपरेटिव लर्निंग टीचिंग स्टाईल ऑन स्टूडेट अचीवमेंट इन ऑर्गेनिक केमिस्ट्री. साउथ अफ़्रीका इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन एजुकेशन. *रीथिंकिंग टीचिंग एंड लर्निंग इन द ट्वेंटी फ़र्स्ट सेंचुरी* प्रोसीडिंग्स. पृष्ठ संख्या 226–242.

बागचेघी, एन. और अन्य. 2011. ए कोम्पेरिसज ऑफ़ कोऑपरेटिव लर्निंग एंड ट्रेडिशनल लर्निंग मेथड्स इन थ्योरी क्लासेज ऑन नर्सिंग स्टूडेंट्स कम्युनिकेशन स्किल विद पेशेंट्स इन क्लिनिकल सेटिंग्स. *नर्स एजुकेशन टुडे*. 31(8), पृष्ठ संख्या 877–882.

मेहता, एस. और ए.के. कुलश्रेष्ठ. 2014. इम्प्लीमेंटेशन ऑफ़ कॉपरेटिव लर्निंग इन साइंस— ए डेवलपमेंशियल-कम-एक्सपेरिमेंटल स्टडी. *एजुकेशन रिसर्च इंटरनेशनल,* हिंदवी पब्लिशिंग कोऑपरेशन, DOI:10.1055/2014/431542. पृष्ठ संख्या 1–7.

वांग, पी. 2009. अप्लाइंग कोऑपरेटिव लर्निंग टेक्नीक टू ईएफएल कन्वर्सेशन क्लास. *द जर्नल ऑफ़ ह्यूमन रिसोर्स एंड एडल्ट लर्निंग*. 5(1), पृष्ठ संख्या 112–120.

वेंडी, जे. 2005. *द इम्प्लीमेंटेशन ऑफ़ कोऑपरेटिव लर्निंग इन द क्लासरूम*. सेंटर फ़ॉर एजुकेशनल स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ़ हल, पृष्ठ संख्या 1–2.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय 2020. भारत सरकार. नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

सीगल, सी. 2005. इंप्लीमेंटिंग रिसर्च बेस्ड मॉडल ऑफ़ कोऑपरेटिव लर्निंग. *जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च*. 98(6), पृष्ठ संख्या 339–349.

स्लाविन, आर.ई. 1995. सहकारी अधिगम से विद्यार्थी की उपलब्धि कब बढ़ती है? *मनौवैज्ञानिक बुलेटिन*. वर्ष 94, पृष्ठ संख्या 429–445.

पुस्तक समीक्षा

शिक्षा की नव क्रांति का शंखनाद (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

पुस्तक — *शिक्षा की नव क्रांति का शंखनाद (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)*

लेखक — आलोक मेहता

प्रकाशक — सामयिक बुक्स

प्रकाशन वर्ष — 2022

मूल्य — 495/-

ISBN — 8193674995

प्रभात कुमार*

शिक्षा लगातार मनुष्य के विचारों में संवर्धन तथा उसके परिष्करण का कार्य करती रहती है। यही संवर्धन एवं परिष्करण समयानुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में परिवर्तन लाता है। यदि यह बदलाव समयानुसार न हो तो संसार के अनेक कार्यों को संपन्न करने में कठिनाई होती है। इस पहलू को ध्यान में रखते हुए भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 29 जुलाई 2020 को लागू की गई। इस नीति ने सभी हितधारकों को शिक्षा के विविध पहलुओं का विश्लेषण करने के लिए उद्वेलित किया है। इसी उद्वेलन का परिणाम है— आलोक मेहता द्वारा रचित किताब शिक्षा की नव क्रांति का शंखनाद में दिखाई देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में यह किताब 192 पृष्ठ में लिखी गई है। भूमिका के साथ नौ अध्यायों तथा 121 संकेताक्षरों से युक्त यह किताब वर्ष 2022 में सामयिक बुक्स, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है। लेखक भूमिका में बताते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मातृभाषा के साथ-साथ भारतीय भाषाओं को शिक्षा एवं जीवकोपार्जन का आधार बनाने को सर्वाधिक महत्व देती है। जाति, धर्म, क्षेत्रीयता से भावी पीढ़ी को ऊपर उठने में संस्कृत और भारतीय भाषाओं की भूमिका को नीति में दी गई जगह का उल्लेख भी भूमिका में है। 16 लाख विद्यालयों, 45 हज़ार महाविद्यालयों, 1000 विश्वविद्यालयों, 1 करोड़ शिक्षकों तथा 35 करोड़ विद्यार्थियों वाली विशाल भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए तैयार नीति का चार भागों (पहला भाग 'स्कूल शिक्षा', दूसरा भाग 'उच्चतर शिक्षा', तीसरा भाग 'अन्य केंद्रीय विचारणीय मुद्दे' तथा चौथा भाग 'क्रियान्वयन की रणनीति') में बटे होने का उल्लेख भी भूमिका में उद्धृत किया गया है। चारों भागों से जुड़ी मुख्य बातों पर विस्तार से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। 'स्कूल शिक्षा' वाले भाग में '5+3+3+4' वाली नई पाठ्यचर्यात्मक अर्थात प्रथम पाँच वर्ष फाउंडेशनल

**व्याख्याता*, प्राथमिक शिक्षक शिक्षा संस्थान, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर, बिहार 848504

स्टेज, तीन वर्ष प्रिपेरेटरी स्टेज, तीन वर्ष मिडिल स्टेज और चार वर्ष सेकेंडरी स्टेज पर लेखक अपना विचार रखते हैं। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय आवश्यकताओं और चुनौतियों को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हुए भविष्योन्मुख बदलाव तथा नई बातों को समाहित करना, जैसे— आर्टिफिशिअल इंटेलिजेंस, डिजाइन थिंकिंग, वैश्विक नागरिकता शिक्षा या डिजिटल शिक्षा से संबंधित बातों को भी भूमिका में जगह दी गई है। 'उच्चतर शिक्षा' वाले दूसरे भाग के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शामिल मुख्य बातें इस प्रकार से हैं, जिन्हें भूमिका में उल्लेखित किया गया है— (1) वर्ष 2040 तक सभी 'उच्चतर शिक्षा संस्थानों को बहुविषयक संस्थानों के रूप में स्थापित करना। (2) वर्ष 2030 तक प्रत्येक जिला या उसके समीप कम से कम एक बड़ा बहुविषयक उच्चतर शिक्षा संस्थान होगा। (3) स्नातक उपाधि की अवधि चार वर्ष की होगी। विद्यार्थी को कोर्स छोड़ने, बदलने और पुनः वापसी का विकल्प चुनने की स्वतंत्रता होगी। स्नातक उपाधि में एक वर्ष पूरा करने पर सर्टिफिकेट, दो वर्ष पूरा करने पर डिप्लोमा, तीन वर्ष पूरा करने पर डिग्री तथा चार वर्ष पूरा करने पर शोध सहित डिग्री देने की संकल्पना है। (4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की पूरी संरचना में 'व्हाट टू थिंक' पर फोकस के स्थान पर 'हाउ टू थिंक' को महत्व दिया गया है। (5) पीएच.डी. के लिए या तो स्नातकोत्तर डिग्री या चार वर्षों के शोध के साथ स्नातक डिग्री अनिवार्य होगी। (6) उद्योग-अकादमिक जुड़ाव सहित अंतर विषयक अनुसंधान, सामजिक अनुसंधान और नवाचार पर फोकस किया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तीसरे भाग अर्थात 'अन्य केंद्रीय विचारणीय मुद्दे' के अंतर्गत कुछ महत्वपूर्ण बातों को चिह्नित किया गया है, जो निम्नलिखित है— (1) श्रम के महत्व की स्थापना तथा उसके अनुभव के लिए किसानों एवं श्रमिकों के काम को भी पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा जाएगा। (2) इंस्टिट्यूट ऑफ़ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन की स्थापना की जाएगी। (3) संस्कृत के प्रयोग और पाठ्यक्रम को बढ़ावा दिया जाएगा। (4) संकट की स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के लिए उपयुक्त इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग चार अर्थात 'क्रियान्वयन की रणनीति' में केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड (कैब) को सशक्त करने की बात की गई है। साथ ही, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सभी प्रावधानों को एक तय समय सीमा अर्थात 2035 तक लागू करने की बात भी है।

श्रम के महत्व को रेखांकित करने वाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लेखक बहुत अच्छा मानते हैं तथा 'शिक्षा की संस्कृति' अध्याय में कहते हैं कि भारत को और किसी चीज़ ने इतनी हानि नहीं पहुँचाई है जितनी इस अजीबो-गरीब और बेतुकी धारणा ने कि शारीरिक श्रम बुरा और प्रतिष्ठा कम करने वाला है तथा केवल निम्न वर्ग के लोगों के लिए है और उच्च वर्ग के लोगों को अपने हाथों से काम न करके, मानसिक और बौद्धिक काम करना चाहिए। इस अध्याय में लेखक वेद कि उक्ति को उद्धृत करते हुए बताते हैं कि ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हम केवल भौगोलिक सीमा के आधार पर जानने या न जानने का निर्णय नहीं कर सकते। वेद उक्ति है—

आ ना भद्राः कतवो यन्तु विश्वतः।

अर्थात सब दिशाओं से मिले शुभ ज्ञान।

लेखक पूर्व में देश की जगद्गुरु की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि पहले अध्ययन-अध्यापन के कार्य को तपस्या के रूप में देखा जाता था। 'छात्राणां अध्ययनं तपः' अर्थात

विद्यार्थी का तप अध्ययन है और 'नाहं विद्या-विक्रयं शासनशतेनापी करोमि' अर्थात सैकड़ों शासन का अधिकार प्राप्त होने पर भी मैं विद्या-विक्रय नहीं करूँगा। लेखक उपर्युक्त छात्र दृष्टि और अध्यापक दृष्टि को पूर्व में जगद्गुरु की स्थिति का कारण मानता है। शिक्षक के प्रकार और शिक्षक के गुण पर भी लेखक अपना गंभीर विमर्श प्रस्तुत करते हैं। नाकोमौद्गल्य ऋषि को संदर्भित करते हुए लेखक निरंतर स्वाध्याय करने वाले अध्यापक को ही सही अर्थ में अध्यापक कहते हैं। कालिदास उस शिक्षक को धुरप्रतिष्ठा का अधिकारी मानते हैं, जो स्वयं ज्ञानी भी हो और ज्ञान के प्रसार की कला में भी कुशल हो। लेखक दो प्रकार के शिक्षक की बात करते हैं— (1) शिलाधर्मी गुरु; (2) आकाशधर्मी गुरु। शिलाधर्मी गुरु वह होता है, जो अपने विद्यार्थियों से कहता हो कि मैं जो कहता हूँ वही तुमको मानना पड़ेगा, वही सत्य है। हमारे यहाँ शिलाधर्मी गुरु त्याज्य और निंद्य माना जाता है। आकाशधर्मी गुरु प्रत्येक शिष्य को प्रकाश देता है, जिसकी जितनी क्षमता हो, वह उतनी विकसित भूमिका को अर्जित कर सके। आकाशधर्मी गुरुओं के द्वारा ही भारतवर्ष वैश्विक स्तर पर अपनी भूमिका को निभा सकता है। 'दुर्लभः स गुरुर्लो के शिष्यचित्तापहारकः'— अर्थात आकाशधर्मी गुरु वह होता है, जो शिष्य की श्रद्धा अर्जित कर सके। लेखक गीता की पंक्ति— 'तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया' को उद्धृत करते हुए कहते हैं कि, शिष्य का आधारभूत लक्षण है— ज्ञान प्राप्त करने के लिए अग्रणी होना। शिक्षक की तेजस्विता तभी खंडित होने लगती है जब वह अपना ज्ञान बेचने लगता है।

लेखक ने प्रथम अध्याय में बताया है कि विद्यार्थी में बुद्धि से संबंधित सात गुण होने चाहिए, उन्होंने श्लोक के माध्यम से अपने विचारों को प्रस्तुत किया है—

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा।
उहापोहार्थविज्ञानं तत्वज्ञानं च धी गुणा॥

(1) विद्यार्थी में 'शुश्रूषा' अर्थात 'जानने और सुनने की इच्छा' होनी चाहिए। (2) विद्यार्थी में 'श्रवणं' अर्थात 'जानने की चेष्टा और जानने की क्रिया' होनी चाहिए। (3) विद्यार्थी में 'ग्रहणं' अर्थात 'जो कुछ आपको बताया गया है, वह आपको समझ में आना चाहिए' का गुण होना चाहिए। (4) विद्यार्थी में 'धारणं' अर्थात 'जो हम पढ़ें, उसे हम स्मरण रख सकें, धारण कर सकें' का गुण होना चाहिए। (5) विद्यार्थी को 'ऊहापोह' अर्थात ऊहापोह करना चाहिए, कोई चीज़ सही है तो क्यों है, कोई चीज़ गलत है तो क्यों? अंधश्रद्धा की बात नहीं होनी चाहिए। (6) विद्यार्थी में 'अर्थविज्ञानं' अर्थात सीखे हुए ज्ञान का उपयोग करने की क्षमता होनी चाहिए। (7) विद्यार्थी में 'तत्वज्ञानं' अर्थात किसी विषय को पूर्णतः समझ लेने की क्षमता होनी चाहिए।

दूसरे अध्याय 'शिक्षा का विस्तार' में लेखक ने बताया है कि शिक्षा प्राचीनकाल से ही हमारी सोच के केंद्र में रही है। ग्यारहवीं शताब्दी के महान शासक राजा भोज द्वारा बनवाया गया सरस्वती मंदिर ज्ञान की इच्छा का ही दूसरा रूप है। भोजप्रबंध में उल्लेखित कुछ शब्दों के माध्यम से लेखक यह बताने का प्रयास करता है कि हमारी संस्कृति शिक्षा के प्रति कितनी सचेत रही है या राजा भोज शिक्षा के कितने अनुरागी थे।

विप्रोअपी यो भवेन्मूर्खः स पुराद्वहिरस्तु मे।
कुंभकारोअपि यो विद्वान्स तिष्ठतु पुरे मम॥

इसका अर्थ है, 'मेरे नगर में मूर्ख होने पर, चाहे वह ब्राह्मण ही क्यों न हो, न रहे। यदि कुम्हार भी है, पर ज्ञानी है, तो वह रहे। इस घोषणा का प्रभाव यह हुआ कि भोज की धारानगरी में कोई भी व्यक्ति अशिक्षित और मूर्ख नहीं था। हमारी सांस्कृतिक और संवैधानिक पृष्ठभूमि ज्ञान की समृद्ध परंपरा

पर आधारित रही है। हमारी संस्कृति ज्योति की आराधना करने वाली संस्कृति है। मुक्त विद्यालय एवं विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा की पहुँच भारतीय अंतिम जन तक संभव है और कैसे 70 देशों में मुक्त (खुला) विश्वविद्यालय काम कर रहे हैं— इस बात पर लेखक गहन विचारों को प्रस्तुत करते हैं।

'अधिकार मिला, मंजिल की प्रतीक्षा' अध्याय में लेखक यह बताने का प्रयास करते हैं कि कैसे सर्व शिक्षा अभियान ने न केवल 99 प्रतिशत बच्चों की प्राथमिक स्कूल में भागीदारी को बढ़ाया, बल्कि 3–4 प्रतिशत 6–14 वर्ष के बच्चों को स्कूल छोड़कर जाने से भी रोका है। 2001 में प्रारंभ किए गए सर्व शिक्षा अभियान के लोगो, जिसमें एक बालक और बालिका एक पेंसिल के दोनों छोरों पर बैठे हुए हैं, को प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय की दीवारों पर देखा जा सकता है। इसने कैसे शिक्षा के विस्तार को वास्तविक रूप प्रदान किया, के सूक्ष्म विश्लेषण को लेखक ने प्रस्तुत किया है। वर्ष 2002 में हुए संविधान संशोधन द्वारा भारत उन 135 देशों में शामिल हो गया, जो शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा देते हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 4 अगस्त 2009 को संसद में पारित हुआ और इसे 1 अप्रैल 2010 से लागू कर दिया गया है। अनुच्छेद 21A के भाग 3 द्वारा 6 से 14 वर्ष की आयु तक के बच्चों को मौलिक अधिकार के अंतर्गत दी जाने वाली शिक्षा का विगत सालों में क्या प्रभाव पड़ा, इसका लेखक द्वारा विस्तृत रूप में उल्लेख किया गया है। लेखक द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख लक्ष्यों को आठवें अध्याय में विस्तृत रूप से दिया गया है।

'परिशिष्ट' के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कुछ प्रमुख अंशों को उल्लिखित किया गया है। वे अंश हैं— (1) उत्कृष्ट शिक्षकों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षण कार्य करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा। (2) अत्यधिक शिक्षक स्थानांतरण पर रोक लगाई जाएगी। पारदर्शिता बनाए रखने के लिए स्थानांतरण एक ऑनलाइन सॉफ्टवेयर आधारित व्यवस्था के द्वारा किए जाएँगे। (3) सतत पेशेवर विकास के अंतर्गत शिक्षक को खुद में सुधार के लिए और पेशे से संबंधित आधुनिक विचार और नवाचार को सीखने के लिए प्रत्येक वर्ष 50 घंटों के कार्यक्रमों में हिस्सा लेने का अवसर प्रदान किया जाएगा। (4) कृषि शिक्षा और इससे संबद्ध विषयों को पुनर्जीवित किया जाएगा। (5) 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत देश के 100 पर्यटन स्थलों की पहचान की जाएगी। (6) ग्रेड 6–8 के लिए एक अभ्यास आधारित पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा डिजाइन किया जाएगा। (7) भारतीय साइन लैंग्वेज को भारत में मानकीकृत किया जाएगा। (8) उच्चतर गुणवत्ता वाली विज्ञान एवं गणित में द्विभाषी पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्री को तैयार करने का प्रयास होगा। (9) सभी भाषाओं को एक मनोरंजक और संवादात्मक शैली में पढ़ाया जाएगा। (10) देशभर में पढ़ने की संस्कृति के निर्माण के लिए सार्वजनिक और स्कूल पुस्तकालयों का विस्तार किया जाएगा। (11) द डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फ़ॉर नॉलेज शेयरिंग अर्थात दीक्षा पर बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर उच्चतर गुणवत्ता वाले संसाधनों का एक राष्ट्रीय भंडार उपलब्ध कराया जाएगा।

शिक्षा की नव क्रांति का शंखनाद पुस्तक में संपूर्ण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लिखित बातों का विश्लेषण संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। लेखक जिस प्रकार से प्रत्येक बिंदु पर विश्लेषण से संश्लेषण तक की यात्रा करते हुए अपनी बात को रखते हैं, वह उनके लंबे अनुभव को दर्शाता है। यह पुस्तक शिक्षा से जुड़े हितधारकों के लिए एक सुगम संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोग की जा सकती है।

लेखकों के लिए दिशा निर्देश

लेखक अपने मौलिक लेख या शोध पत्र सॉफ्ट कॉपी (हिंदी यूनिकोड— कोकिला फोंट में) के साथ निम्नलिखित पते या ई-मेल journals.ncert.dte@gmail.com पर भेजें—

अकादमिक संपादक
भारतीय आधुनिक शिक्षा
अध्यापक शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016

लेखक या शोधार्थी अपना लेख या शोध पत्र प्रकाशन हेतु भेजने से पूर्व सुनिश्चित करें कि—

1. लेख या शोध पत्र सरल एवं व्यावहारिक भाषा में हो, जहाँ तक संभव हो लेख या शोध पत्र में व्यावहारिक चर्चा एवं दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरणों का समावेश करें।
2. यदि आप अपने लेख या शोध पत्र को ऑनलाइन सॉफ्टवेयर से हिंदी यूनिकोड फोंट में बदलते हैं, तो बदले हुए लेख या शोध पत्र को अच्छी तरह से पढ़कर एवं संपादित कर भेजें।
3. लेख की वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर आधारित सार्थक प्रस्तावना लिखें, जो आपके लेख के शीर्षक से संबंधित हो।
4. शोध पत्र की वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर आधारित सार्थक प्रस्तावना एवं औचित्य लिखें, जो आपके शोध पत्र के शीर्षक या शोध समस्या से संबंधित हो।
5. लेख या शोध पत्र में वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा पर राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर जो नीतिगत परिवर्तन हुए हैं, उन नीतियों, योजनाओं, दस्तावेजों, रिपोर्टों, शोधों, नवाचारी प्रयोगों या अभ्यासों आदि को समावेशित करने का प्रयास करें।
6. लेख या शोध पत्र देश के किसी भी नागरिक की धर्म, प्रजाति, जाति, जेंडर, जन्म स्थान या इनमें से किसी के भी आधार पर विभेद न करे।
7. लेख या शोध पत्र देश के नागरिकों की धर्म, जाति, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं शारीरिक विशेषताओं का बिना भेदभाव करते हुए न्यायसंगत सम्मान करे।
8. लेखक या शोधार्थी अपने लेख या शोध पत्र की मौलिकता प्रमाणित करते हुए अपना संक्षिप्त परिचय दें।
9. लेख या शोध पत्र की विषय-वस्तु लगभग 2500 से 3000 शब्दों में हिंदी यूनिकोड—कोकिला फोंट में टंकित हो।
10. यदि लेख या शोध पत्र की विषय-वस्तु में तालिका एवं ग्राफ हो, तो तालिका की व्याख्या में उन तथ्यों या प्रदत्तों एवं ग्राफ का उल्लेख करें। ग्राफ अलग से Excel File में भेजें।
11. लेख या शोध पत्र की विषय-वस्तु में यदि चित्र हो, तो उनके स्थान पर खाली बॉक्स बनाकर चित्र संख्या लिखें। चित्र अलग से JPEG फार्मेट में भेजें, जिसका आकार कम से कम 300 dots per inch (dpi) हो।
12. संदर्भ सूची में वही संदर्भ लिखें, जिनका उल्लेख लेख या शोध पत्र की विषय-वस्तु में किया गया हो।
13. यदि लेख या शोध पत्र में ऑनलाइन अध्ययन सामग्री का उल्लेख किया गया है, तो संदर्भ सूची में वेबसाइट लिंक और पुन: प्राप्त (Retrieved date) करने की तिथि लिखें।
14. संदर्भ सूची में संदर्भ एन.सी.ई.आर.टी. के निम्न प्रारूप के अनुसार लिखें—
    पाल, हंसराज. 2006. *प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान*. हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 के द्वारा प्रकाशित तथा चार दिशाएँ प्रिंटर्स प्रा.लि., जी 40-41, सैक्टर–3, नोएडा 201 301 द्वारा मुद्रित।

रजि. नं. 42912/84

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित शैक्षिक पत्रिकाओं के मूल्य

Rates of NCERT Journals and magazines

पत्रिका	प्रति कॉपी शुल्क	वार्षिक सदस्यता शुल्क
School Science (Quarterly) A Journal for Secondary Schools *स्कूल साइंस (त्रैमासिक)* *माध्यमिक विद्यालयों के लिए पत्रिका*	₹ 55.00	₹ 220.00
Indian Educational Review A Half-yearly Research Journal *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (अर्द्ध वार्षिक शोध पत्रिका)*	₹ 50.00	₹ 100.00
Journal of Indian Education (Quarterly) *जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन (त्रैमासिक)*	₹ 45.00	₹ 180.00
भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक) *Bharatiya Aadhunik Shiksha (Quarterly)*	₹ 50.00	₹ 200.00
Primary Teacher (Quarterly) *प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक)*	₹ 65.00	₹ 260.00
प्राथमिक शिक्षक (त्रैमासिक) *Prathmik Shikshak (Quarterly)*	₹ 65.00	₹ 260.00
फिरकी बच्चों की (अर्द्ध वार्षिक पत्रिका) *Firkee Bachchon Ki (Half-yearly)*	₹ 35.00	₹ 70.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पत्रिकाओं की सदस्यता लेने हेतु शिक्षाविदों, संस्थानों, शोधार्थियों, अध्यापकों और विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए पते पर संपर्क करें।

मुख्य व्यापार प्रबंधक, प्रकाशन प्रभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016

ई-मेल – gg_cbm@rediffmail.com, फोन – 011-26562708, फैक्स – 011-26851070

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 के द्वारा प्रकाशित तथा चार दिशाएँ प्रिंटर्स प्रा.लि., जी 40-41, सैक्टर–3, नोएडा 201 301 द्वारा मुद्रित।

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING